इवान तुर्गनेव

प्रगति प्रकाशन
दिल्ली

अनुवादक—सावित्री वोहरा

प्रोग्रेसिव पबलिशर्ज ७/२३, दरियागंज, दिल्ली, द्वारा प्रकाशित और
हिन्दी-मन्दिर प्रेस, बाजार सीताराम, दिल्ली में मुद्रित ।

बसन्त ऋतु की एक सुहावनी सांझ थी। नीले आकाश में नन्हे नन्हे अरुण बादल इधर उधर घूमते और फिर उसी नीलिमा में विलीन हो जाते।

'ओ'...... नगर के एक मुहल्ले में एक विशाल भवन की खुली खिड़की के पास दो स्त्रियाँ बैठी थीं। एक की आयु लगभग ५० वर्ष होगी और दूसरी कोई ७० साल की वृद्धा थी।

पहली का नाम मारया मित्रविना कालीटीना था। उसका पति, जिसका देहान्त हुए १० वर्ष हो गये थे, वहीं का सरकारी वकील था। अपने समय में वह बहुत परिश्रमी और कार्य कुशल समझा जाता था। स्वभाव से वह क्रोधी और ढीठ था। उसे बहुत अच्छी शिक्षा मिली थी और निर्धन घर में जन्म लेने के कारण उससे शुरू से ही ज्ञान मिला था कि संसार में उन्नति करने के लिए साहस और धन की बहुत आवश्यकता होती है। वह देखने में काफी सुन्दर था और समय पड़ने पर खूब हँसमुख और सुशील भी हो जाता। मारया मित्रविना ने उसकी इन्हीं बातों पर लट्टू हो उससे विवाह करवाया। मारया मित्रविना के माता पिता का देहान्त उसके बाल्यकाल में ही हो गया। कई वर्ष वह मास्को में कन्याओं के एक स्कूल में ही रही। उसके बाद वह अपने भाई और बूआ के संग गाँव में अपनी जमींदारी 'पोकरोस्कोय' में रही। 'पोकरोस्कोय' ओ नगर से कोई ५० कोस परे था। भाई कुछ समय के बाद पीटर्सबर्ग चला गया जहाँ उसे सरकारी नौकरी

मिल गई। बहन और बूआ के साथ उसका बर्ताव कुछ अच्छा नहीं था पर थोड़े ही समय पश्चात् उसकी भी मृत्यु हो गई और मारया बूआ के साथ फिर गाँव लौट आई। मारया अब 'पोकरोस्कोय' की मालकिन थी पर यहाँ भी वह अधिक देर नहीं रही क्योंकि विवाह के वर्ष भर बाद ही कालिटिन ने 'पोकोरोस्कोय' को बेच एक और अधिक लाभप्रद संपत्ति खरीद ली।

इस नई ज़मीन पर रहने लायक कोई घर नहीं था इसलिए उसने शहर में ही मकान ले लिया। इस नये घर के चारों ओर बहुत बड़ा बाग़ था। बाग़ के आगे एक ओर बहुत खुला मैदान था "यहाँ से तो गाँव जाने की आवश्यकता भी नहीं रहेगी" कालिटिन कहा करता। मन ही मन में मारया को अपने सुन्दर 'पोकोरोस्कोय' को खो देने का काफी खेद था। वहाँ के हँसते हुए नदी नाले, बड़े बड़े हरे मैदान और पेड़ों के झुंड उसे भूलते नहीं थे पर कालिटिन की आज्ञा का उसने कभी उलंघन नहीं किया था। उसकी बुद्धि पर उसे पूरा भरोसा था। जब विवाह के १५ वर्ष बाद, एक पुत्र और दो पुत्रियाँ छोड़ कालिटिन चल बसा, तो मारया को भी शहर में रहने का इतना स्वभाव सा हो गया था कि उसे अब यह जगह छोड़ने का विचार ही नहीं आया।

अपनी युवावस्था में मारया बहुत सुन्दरी मानी जाती थी। अब ५० वर्ष की आयु में भी वह अभी काफी आकर्षक थी। हां मोटी होने से उसमें कुछ भद्दापन आगया था और आगे सी कोमलता न रही थी। वह बड़ी भावुक प्राकृति की थी। इस आयु में भी उसकी आदतें स्कूल की लड़कियों सी थीं। वह जो मन में आता वही करती। यदि उसकी बात तनिक भी इधर की उधर हो जाती तो वह आंसुओं की झड़ी लगा देती। यदि प्रेम

से उससे बात की जाय तो वह बड़ी उदार भी हो जाती। उसका घर शहर के इने गिने कुलीन घरों में से एक था। वह काफी धनी थी। कुछ धन तो उसका अपना था और बहुत सा पति के श्रम से संचित। कन्याएं दोनों उसी के पास रहती थीं। पुत्र पीयर्सबर्ग के एक बढ़िया कालेज में पढ़ता था।

उसके पास बैठी वृद्धा उसकी वही बूआ थी जिसके संग उसने वर्षों पोकोरोस्कोय में काटे थे। वृद्धा का नाम मारफा टिमोफीना था। वह बहुत सनकी सी और स्वतन्त्र विचारों वाली थी जो कुछ किसी को कहना होता वह मुख पर ही कह देती। पैसा अधिक न होने पर भी वह खूब ठाठ से रहती। कालिटिन उसे तनिक न भाया। इसीलिए मारया के विवाह के शीघ्र ही बाद वह अपने गांव लौट कर एक झोंपड़ी में रहने लगी और दस वर्ष वहीं रही। मारया मित्रविना उससे काफी भय खाती। इस आयु में भी मारफा की दृष्टि बड़ी तेज थी। वह बिल्कुल सीधी अकड़ के चलती और तीखी आवाज में खूब तेज तेज बोलती। वह सदा सफेद कपड़े और सफेद टोपी पहनती।

"क्या बात है? आहें क्यों भर रही हो?" उसने मारया से पूछा।

"नहीं, कुछ नहीं" मारया ने उत्तर दिया "कितने अच्छे बादल हैं।"

"तो तुम्हें क्या इन पर तरस आ रहा है।"

मारया चुप हो गई। उसने उत्तर नहीं दिया।

अपनी सलाइयां तेज तेज चलाते हुए मारफा फिर बोली "आज, पता नहीं गोजेन्सको क्यों नहीं आया। वह आजाता तो तुम्हें इधर उधर की दो चार गप्पें ही सुना जाता या आहें भरने में ही कुछ साथ देता।"

"बुआ तुम इतनी कठोर क्यों हो ? बिचारा सरजी पैटरोविच तो बहुत भला आदमी है।"

"भला आदमी" वृद्धा ने नाक चढ़ा कर कहा।

"मेरे पति के साथ इसका कितना प्रेम था। आज तक भी उन का नाम लेता है तो इसका गला रुंधने लगता है।"

"ठीक है, हो भी क्यों नहीं। तुम्हारे पति ने भी तो इसको कितनी बुरी हालत से निकाला था," मारफा बोली। उसकी सलाइयां और भी तेज हो गईं। "देखने में तो बिचारा बड़ा दीन लगता है। बाल भी अब सारे पक गये हैं पर मुंह खोलने की देर होती है कि बस झूठ, चुगलियां शुरु हो जाती हैं—कौंसिलर की पदवी पर पहुंच गया है और है ऐसा झूठा। खैर बिचारा आखिर है तो गांव के पादरी का ही लड़का।"

"बूआ, सभी में अवगुण होते हैं। मैं मानती हूं कि उसमें भी दोष हैं। असल में बात यह है कि उसे शिक्षा अच्छी नहीं मिली। बिचारा फ्रैंच भी नहीं बोल पाता, 'मारया बोली' वैसे तो जो तुम्हारी इच्छा है कहो पर है वह भला आदमी।"

"हां हां—क्यों नहीं। भला तो वह हुआ। तुम्हारे हाथ जो सदा चूमता रहता है। फ्रैंच यदि नहीं आती उसे तो वह कौनसी बड़ी बात है। मैं भी तो नहीं फ्रैंच बोल सकती। पर क्या ही अच्छा होता यदि उसे कुछ भी बोलना न आता। कम से कम सारा समय झूठ तो न बोलता रहता।...ओ, वह देखो आ रहा है, बस बुरे का नाम ही लो तो—"मारफा ने सड़क की ओर देखते हुए कहा, "वह आ रहा है तुम्हारा भला आदमी। सूखा हुआ तो इतना है मानों कोई बगला हो।"

मारया मित्रविना ने जल्दी से अपने बाल सीधे किये। मारफा व्यंग पूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखती रही। "यह क्या सफेद बाल, ओहो, यह कहां से आगया। सच, तुम्हारी पलाशका (दासी) के कान खींचने चाहिएं आंखों से देखती भी नहीं।"

"बुआ, तुम भी बस हद करती हो" मारया गुनगुनाई और कुरसी पर अपनी उंगलियों से ठक ठक करने लगी।

"सरजी पैटरोविच गोडोन्सकी आये हैं," एक नौकर ने आकर कहा।

एक लम्बे से पुरुष ने कमरे में प्रवेश किया। उसने बढ़िया कोट पतलून, स्लेटी दस्ताने और गुलूबन्द पहिना था। उसके सिर के सधे बालों से लेकर पैरों के जूतों तक से कुलीनता टपक रही थी। पहले उसने झुक कर घर की मालकिन को प्रणाम किया और फिर मारफा टिमोफीना को। पुनः हाथों के दस्ताने उतार कर उसने झुक कर मारया के हाथों को चूमा और एक कोने में आरामकुरसी पर बैठ गया। हाथों को मलते हुए वह बोला, "एलिजवीटा अच्छी है।"

"हां, वह बाहर बाग में हैं" मारया ने उत्तर दिया

"और ऐलीना"

"लिनोचका भी वहीं है।...तुम कुछ नई बात सुनाओ न" थोड़ा ठहरकर मारया बोली।

"हां एक नई बात तो है" धीरे से अगान्तुक बोला। "बात भी कुछ ऐसी वैसी नहीं है ...लैवरैटस्की, जानती हो न फोयडोर लैवरैटस्की, लौट आया है।"

"क्या—फोयडोर यहां है। ठीक ठीक बताओ गप तो नहीं हांक रहे" मारफा टिमोफीना बोली।

"नहीं-नहीं। मैंने स्वयं उसे देखा है।"

"खैर इस का तो कुछ मतलब नहीं निकलता।"

"वह खूब स्वस्थ लग रहा था," गोडोन्सकी बोलता गया मानों मारफा की बात ही न सुनी हो, "आगे से भी हृष्ट पुष्ट।"

"अच्छा, अजीब बात है। मुझे तो कोई कारण नहीं दिखता उसके इस स्वास्थ्य का" मारया धीरे से बोली।

"हां हां यही तो मैं कहता हूँ। उसकी जगह कोई और होता तो अपना मुँह दिखाने से ही झिझकता" गोडोन्सकी अब जरा जोश से बोला।

"यह क्या बक बक है" मारफा तमतमा उठी," वह अपने घर लौटा है भला किसी को क्या लगे। और वह जाता भी कहां उसने कौनसा अपराध किया है।"

"मेरे विचार में तो पत्नी दुराचारिणी हो तो अपराध पति का ही होता है।"

"ठीक है महाशय—ठीक है। भला तुम क्या जानो इन बातों को—तुम अभी कंवारे हो" मारफा गुस्से से बोली।

गोडोन्सकी भीगी बिल्ली सा सब सुनता रहा।

"अच्छा यह आप गुलूबन्द किस के लिए बुन रही हैं" मारफा को शान्त करने के लिए वह बोला।

"यह गुलूबन्द...यह मैं उसके लिए बना रही हूँ जो गप्पें नहीं हांकता हो, पाखण्डी नहीं हो, झूठ नहीं बोलता हो। यदि कोई ऐसा मनुष्य है संसार में तो उसके लिए मैं यह गुलूबन्द बना रही हूँ, मारफा बोली," फेदया को मैं अच्छी तरह जानती हूँ। उसका केवल एक ही अपराध था कि उस ने अपनी पत्नी को बहुत सिर चढ़ाया हुआ था—पर यह भी कसूर नहीं कहा जा सकता, क्यों कि उन का प्रेम विवाह हुआ था और ऐसे विवाहों का अन्त कभी भी अच्छा नहीं होता।"

मारफा वहां से उठ खड़ी हुई और गोडोन्सकी की ओर देख कर बोली, "लो अब मैं जा रही हूँ। अब तुम बड़े आराम से बैठ कर जिस की जी चाहे चुगली करो, चाहे मेरी ही बातें करो। मैं तुम्हारे रास्ते में नहीं आऊँगी, और वह चलदी।

"बुआ सदा से ऐसी ही है" मारया बोली।

"तुम्हारी बुआ अब काफी बूढ़ी हो गई है। उसका कोई कसूर नहीं, ऐसे ही होता है," गोडोन्सकी ने कहा। "अभी जो वह पाखण्ड की बात कर रही थी वह बिल्कुल ठीक है। आज कल कौन है संसार में जो पाखण्डी नहीं हो। अभी हाल ही में मेरा एक मित्र कह रहा था कि मनुष्य तो क्या आज कल पक्षी भी पाखण्डी हो गये हैं। सच आज के संसार में तुम्हारे जैसी देवी तो कहीं नहीं होगी। मैं तुम्हें देखता हूँ तो मन में कहता हूँ, क्या पवित्र, सोने का हृदय है।"

मारया मित्रविना धीरे से मुस्कराई और अपना हाथ आगे बढ़ा दिया, गोडोन्सकी ने उसे बड़ी श्रद्धा से चूम लिया।

मारया अब अपनी कुरसी तनिक और खींच गोडोन्सक से कहने लगी, "तो क्या सचमुच तुमने उसे देखा है? क्या वह

वास्तव में ही प्रसन्न है ?"

"हां, हां। वह तो खूब प्रसन्न दिखाई देता है।"

"उसकी पत्नी का भी कुछ सुना है।"

"कुछ समय पहले तो वह पैरिस में थी। अब शायद इटली गई है।"

"सच बिचारे फेदया की भी अजीब दशा है। न जाने कैसे वह यह सब सह रहा है...वैसे बुरे दिन तो सभी पर आते हैं पर इस बिचारे की तो सारे युरोप में बदनामी हो गई है," मारया बोली।

गोडोन्सकी ने लम्बी आह भरी। "बहुत बुरी बात है। और सुना है कि वह तो वहां कलाकारों, नाचने गाने वालों के संग घूमती है। बहुत ही निर्लज्ज सी होगी।"

"मुझे तो बड़ा कष्ट होता है यह सब सुनकर" मारया ने कहा "आखिर वह हमारे ही परिवार का है। मेरा दूर का भाई लगता है न।"

"हां, हां। मुझे सब पता हैं तुम्हारे परिवार का।"

"तो क्या हमें मिलने आयेगा वह ? तुम्हारा क्या विचार है।"

"क्यों नहीं। मेरा तो विचार है आवश्य आयेगा। चाहे सुना है कि शीघ्र ही वह अपने गांव जा रहा है"

मारया ने आंखें उपर की ओर उठा लंबी सांस ली "सच कहती हूं, सरजी पैटरोविच, हम स्त्रियों को भी संसार में कितना संभल संभल कर चलना पड़ता है।"

"सभी स्त्रियां एक जैसी तो नहीं होती, मारया। हां, वैसे आज कल जमाने की कुछ हवा ही ऐसी है। और फिर बचपन के संस्कारों पर भी तो बहुत कुछ निर्भर होता है,"

गोडोन्सकी ने जेब से बढ़िया रुमाल निकाल कर आंखें पोंछनी शुरु कीं, "ऐसी स्त्रियां भी होती ही हैं दुनिया में—पर अधिकतर... आज कितनी मिट्टी उड़ रही है" बात बदलते हुए वह बोला।

"मां-मां" एक ग्यारह वर्ष की सुन्दर बालिका भागती हुई कमरे में आई "माँ, वलैडिमीर निकोलिच घोड़े पर आ रहा है।"

मारया उठी—गोडोन्सकी ने भी उठ कर ऐलीना को प्रणाम किया और फिर एक ओर खड़ा हो गया।

"माँ, उसका घोड़ा कितना सुन्दर है। अभी हम ने उसे बाहिर के दरवाजे पर देखा था। वह कहता था अभी इधर ही आ रहा हूँ।"

इतने में घोड़े के पैरों की आवाज आने लगी और क्षण भर में एक सुन्दर युवक एक बहुत बढ़िया घोड़े पर बैठा सड़क पर आता हुआ दिखाई दिया। घोड़े को उसने खिड़की के सामने खड़ा कर दिया।

"कैसी हो मारया मित्रविना" बाहर से ही बड़े मधुर स्वर में वह बोला "देखी है यह मेरी नयी खरीद?"

मारया खिड़की में आ गई

"अच्छे हो, वलैडिमीर! वाह, कैसा सुन्दर घोड़ा है। कहाँ से लिया?"

"फौज के ठेकेदार से लिया है—पर उस चोर ने मुझ से खूब पैसे ठगे हैं" युवक ने कहा।

"नाम क्या है इसका ?"

"औरलैंडो....बड़ा बेवकूफों जैसा नाम है । मैं तो बदलना चाहता हूँ ।....ओह कैसा जानवर है, एक क्षण भी निश्चल नहीं रह सकता ।"

घोड़ा हिनहिनाया और अपनी गर्दन हिलाने लगा । "लिनोचका इधर आओ । पुचकारो इसे । डरो मत ।" अगान्तुक ने कहा

बालिका ने अपना हाथ बाहिर निकाला पर घोड़ा घबरा कर दो कदम पीछे हो गया ।

घुड़सवार ने बड़ी शोखी से एक छाँटा उस के गले में मारा और घोड़े की इच्छा के विरुद्ध उसे फिर वापिस खिड़की के सामने ले आया।

"लिनोचका आओ । अब पुचकारो इसे । हम इसकी मरजी नहीं चलने देंगे ।"

बालिका ने डरते डरते अपना नन्हा हाथ घोड़े की काँपती हुई नासिका पर फेरा ।

"शाबाश बहुत अच्छा" मारया बोली "पर अब ऊपर भी तो आओ न ।"

घुड़सवार ने फुरती से घोड़े का मुँह फेरा और दूसरी ओर आँगन में से होता हुआ घर में आ गया । अपनी छड़ी घुमाता हुआ वह कमरे में आया । उसी समय दूसरे दरवाज़े से एक लम्बी पतली सी काले बालों वाली युवती ने प्रवेश किया । यह लिज़ा थी—मारया मित्रविना की बड़ी लड़की ।

वह युवक जिसका हमने अभी पाठकों से परिचय करवाया है 'ब्लैडिमीर निकोलिच पाशिन' था। वह पीटर्सबर्ग में एक सरकारी अफसर था और गृह मन्त्रिमंडल के किसी काम पर आजकल गर्वनर जनरल जोनेबर्ग के पास आया हुआ था। गर्वनर उसका दूर का सम्बन्धी भी था। पाशिन का पिता फौज का रिटायर्ड कैप्टन था। वह प्रसिद्ध जुआरी था, सारी आयु उसने धनियों के संग खूब मेल जोल रखा था। दोनों राजधानियों के अंग्रेजी कल्बों में वह जाया करता था। चतुर तो वह बहुत था पर बहुत विश्वासनीय नहीं था। इन सब बातों के होते हुए भी, जब उसका देहान्त हुआ तो अपने इकलौते बेटे पाशिन के लिए वह केवल थोड़ी गिरवी रखी हुई सम्पत्ति छोड़ गया। हाँ, उसने पुत्र की शिक्षा में कुछ कसर नहीं छोड़ी। पाशिन फ्रैंच बहुत अच्छी बोलता। अंग्रेजी भी वह काफी जानता और जर्मन बिल्कुल थोड़ी। यही उचित भी था। सम्भ्रान्त और उच्च वर्गों में जर्मन का बहुत जानना अच्छा नहीं समझा जाता था। पंद्रह वर्ष की आयु में ही पाशिन निधड़क किसी भी सभा में जा सकता। उचित रूप से बातचीत कर वह ठीक समय पर वहाँ से उठ भी आता। पाशिन के पिता ने उसका खूब बड़े बड़े लोगों से मेलमिलाप करवा दिया था। जब भी समय मिलता वह अपने पाशिन की प्रशंसा किये बिना नहीं रहता। पाशिन स्वयं भी कुछ कम नहीं था। यूनीवर्सिटी में जितने भी धनी मानी लोगों के पुत्र थे सभी से उसने मित्रता बढ़ा ली थी। सब के यहाँ उसका खूब आना जाना था। वह देखने में बड़ा सुन्दर, स्वस्थ और आकर्षक था। स्वभाव

उसका बहुत मिलनसार और हंसमुख था। वह समय देख कर बड़ा विनम्र हो जाता और वैसे ही कभी-कभी समय पा खूब निर्भय और धृष्ट भी। जीवन में उसे कोई भी कठिनाई नहीं थी। समाज का भेद उसने शीघ्र ही पा लिया। छोटी-छोटी निमूल बातों को वह बड़ी गम्भीरता से कर लेता और बड़े-बड़े गम्भीर विषयों को हँसी में उड़ा देता। अंग्रेजी तरीके के बहुत बढ़िया वस्त्र पहनता और थोड़े ही समय में पीटर्सबर्ग के उच्च वर्गों में उसने नाम बना लिया। पाशिन बहुत चतुर था, अपने पिता से भी अधिक। पर प्रकृति की भी उस पर खूब कृपा थी। वह काफी अच्छा गाता था, चित्रकला में भी निपुण था। कविता भी लिख लेता और कभी-कभी नाटकों में भी भाग ले लेता। २८ वर्ष की छोटी उमर में ही वह काफी उच्च पदवी पर था। पाशिन को अपनी बुद्धि पर पूरा भरोसा था और बड़ी निर्भयता से वह जीवन पथ पर जा रहा था। बूढ़े, युवक सभी पाशिन को चाहते। स्त्रियों की दुर्बलताओं को तो वह खूब अच्छी तरह पहचानता। कला का प्रेमी होने के कारण वह अपने में एक विशेष प्रकार की उत्सुकता और उत्कण्ठा का अनुभव करता। इसलिए कभी-कभी वह अपने से नीचे वर्गों से मेल जोल करने से भी नहीं झिझकता। उसके व्यवहार से यूँ लगता मानों उसे किसी चीज की भी परवाह नहीं पर हृदय से वह बड़ा कपटी और कठोर था। बहुत प्रसन्नता और खेल कूद के बीच भी उसकी भूरी आँखें सदा चौकन्नी रहती। यह साहसी निर्भीक युवक कभी भी अपने आप को किसी बात में खो नहीं देता। हाँ, वह डींगें कभी नहीं मारता था।—नगर में आने के बाद शीघ्र ही वह मारया मित्रविना के घर खूब हिल मिल गया। मारया तो उस पर लट्टू ही हो गई।

पाशिन ने झुक कर सब को प्रणाम किया। मारया मित्रविना और ऐलिज़वीटा से उसने हाथ मिलाये, गोडोन्सकी की पीठ थपथपाई और नन्हीं लिनोचका के ललाट को चूमा।

"ऐसे घोड़े पर चढ़ते तुम को डर नहीं लगता" मारया ने पूछा।

"यह घोड़ा तो बिल्कुल पालतू सा है—इससे भला क्या डरना। हाँ मैं एक और बात से अवश्य डरता हूँ और वह है गोडोन्सकी से ताश खेलना। कल बैलिनिटसिन के यहाँ इसने मुझे बुरी तरह हराया।"

गोडोन्सकी मुस्कराया। इस चतुर युवक के संग मैत्री बढ़ाने का वह बहुत इच्छुक था। मारया से बातचीत करते हुए वह प्रायः पाशिन की बहुत प्रशंसा किया करता "प्रशंसा तो करनी ही पड़ती है" वह कहा करता "बहुत उच्च वर्गों में भी इसका सम्मान होता है—अभी से इतनी उन्नति कर गया है और जिस पर अभिमान का नाम नहीं" और वास्तव में था भी यूँ ही। पाशिन अपने काम में बड़ा निपुण था। उच्च अधिकारी उस पर प्रसन्न थे और उसे विश्वास था कि वह अवश्य मन्त्री-पद तक पहुंच जायेगा।

"अच्छा महोदय, आप कहते हैं कि मैंने आपको हराया था पर उस दिन मुझ से १२ रूबल कौन जीता था"—

"जाने भी दो"—तिरस्कार पूर्ण भाव से उसकी बात बीच में ही काट, पाशिन पीठ मोड़ लिज़ा की ओर चल पड़ा—"मुझे यहाँ, वह ओबरन का संगीत नहीं मिला।" वह लिज़ा से कहने लगा "बैलनटसीना ऐसे ही गप्पें हाँक रही थी कि मेरे पास सब शास्त्रीय संगीत है। मैंने देखा है उसके पास सिवाय पोलका

और वाल्टज़ के और कुछ भी नहीं है। हाँ, मैंने मास्को लिख दिया है और एक सप्ताह के भीतर वह आ जाना चाहिए।" थोड़ा ठहर के वह फिर कहने लगा "कल मैंने एक गीत लिखा था, शब्द सुर सब मेरा ही है। सुनोगी......न जाने तुम्हें कैसा लगेगा, कल बैलनटसीना तो बहुत प्रशंसा कर रही थी। पर उसका क्या है! मैं तो बस केवल तुम्हरा विचार जानना चाहता हूँ। खैर......जाने दो.... फिर कभी सही।"

"क्यों, फिर कभी क्यों? अभी क्यों नहीं सुनाते?" बीच में ही मारया बोली।

"जैसे तुम कहो" पाशिन बड़ा प्रसन्न मुख उठा। उसके मुख पर एक क्षण के लिए हंसी आई और वैसे ही क्षण भर में विलीन हो गई। पैर से कुरसी धकेल वह पियानो के आगे जा बैठा। सुरों को छेड़ उस ने गाना शुरु किया। गीत का भाव कुछ यूँ था कि ऊपर आकाश में बादलों से झाँकता हुआ चाँद लहरों पै जादू सा असर करता है। मेरी प्रियतमा तुम ने भी वैसे ही मुझ पर जादू किया है। मेरी प्रसन्नता, उदासी सब तुम्हीं पर निर्भर है। तुम निर्मोही चाँद सी शाँत हो पर मैं प्रेम से घायल हूँ। गीत का पिछला भाग पाशिन ने बहुत भाव से गाया। पियानो के ऊँचे स्वरों में लहरों की सी ही आवाज़ आने लगी। "मैं प्रेम से घायल हूँ" कह उसने अपनी आवाज़ धीमी कर ली, आँखें नीची कर लीं और आह भर के चुप हो गया। लिज़ा ने गीत को सराहा। मारया बोली "बहुत सुन्दर" और गोडोन्सकी ने तो प्रशंसा के पुल ही बाँध दिये "वाह क्या गीत है। क्या

शब्द हैं। और क्या सुर ताल। सचमुच कमाल हो गया" लिनोचका बड़ी भोली चितवन से गायक को निहार रही थी। मतलब यह कि युवक गायक ने सभी को मुग्ध कर लिया।

उसी समय बैठक के दरवाजे पर एक वृद्ध पुरुष आया। उस की झुकी आँखें और मुख के भाव से यह स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि पाशिन का गीत उसे कुछ भाया नहीं। मोटे रुमाल से पैर को जूतों की मिट्टी झाड़, माथे पर भृकुटि डाल वृद्ध ने झुक कर धीरे से कमरे में प्रवेश किया।

"प्रणाम, क्रिस्टोफर लैम्म" सब से पहिले पाशिन बोल पड़ा "मुझे विचार भी न था कि तुम यहाँ हो—नहीं तो मेरी यह गीत गाने की हिम्मत ही न पड़ती। मैं जानता हूँ तुम ऐसे हलके फुलके गीत पसंद नही करते"

"मैं उन्हें सुनता ही नहीं" टूटी फूटी रूसी में अगान्तुक बोला और आकर कमरे के बीच खड़ा हो गया।

"मेरे विचार में, लैम्म महोदय, आप लिजा को संगीत का पाठ देने आये हैं" मारया ने कहा

"नहीं ऐलीज़बीटा को नहीं, ऐलीना को"

"ओह, अच्छा तो लिनोचका बेटी तुम जाओ लैम्म महोदय के साथ उपर।"

वृद्ध बालिका के साथ बाहर जाने को ही था पर पाशिन ने उसे रोक लिया।

"लिनोचका को सिखाने के बाद चले मत जाना। ऐलीज़बीटा और मैं, बीथोवन का कुछ संगीत सुनायेंगे आपको।"

वृद्ध बुड़बुड़ाया पर पाशिन उल्टी सीधी जर्मन में बोलता ही गया "आपने जो वह भजन ऐलिज़बीटा के लिए लिखा

था वह उसने मुझे दिखाया था—बहुत सुन्दर है—वृथा यह मत समझना कि मैं ऐसे संगीत को समझ नहीं पाता... यूँ ही कभी कभी इससे जी उकता जाता है ।. वैसे होता बहुत अच्छा है ।"

वृद्ध का मुख लाल हो गया और तिरछी नजर से ऐलिजवीटा की ओर देखता हुआ वह चला गया ।

मारया पाशिन से फिर वही गीत गाने को कहने लगी पर पाशिन ने बूढ़े जर्मन गायक को नाराज़ करना ठीक न समझा । वह उल्टे ऐलिजवीटा से बीथोवन का "सोनाटा" बजाने का आग्रह करने लगा । मारया ने उकता कर लंबी साँस ली और गोडोन्सकी से बाहिर घूमने के लिए कहने लगी "चलो मैंने अभी तुम से बात करनी थी अपने विचारे फेदया के संबंध में" । गोडोन्सकी ने अपनी टोपी और दस्ताने उठाये और मारया के पीछे चल दिया । पाशिन और लिज़ा अब अकेले ही कमरे में रह गये । लिज़ा ने संगीत की किताब खोली और वे दोनों पियानों के सामने बैठ गये । ऊपर से नन्ही लिनोचका की झिझकती हुई उँगलियों से बजते धीमे स्वरों की आवाज़ आ रही थी ।

क्रिसटोफर थियोडर लैम्म का जन्म १७४६ में सैक्सनी प्रान्त के शेमनिटज नगर में हुआ । उसका पिता फ्रैंचहार्न और माँ गिटार बजाती थी । पाँच वर्ष की आयु में ही वह तीन प्रकार

के बाजे बजा लेता था। आठ वर्ष तक उसके माता पिता दोनों का देहान्त हो चुका था और १० वर्ष की आयु में तो बिचारा अपनी कला के बल पर निर्वाह करने लगा। बहुत समय वह इधर उधर होटलों में, सरायों में, उत्सवों पर विवाहों पर गा बजा कर पेट भरता रहा और अन्त में उसने एक आरकेस्ट्रा में भाग लेलिया। धीरे-धीरे वह उसका प्रधान संचालक बन गया। २८ वर्ष की आयु में वह रूस आ गया। किसी बड़े धनी पुरुष ने, जो कि वास्तव में संगीत से घृणा करता था, पर केवल शान के लिए आरकेस्ट्रा रखता था, लैम्म को अपने पास रख लिया। सात वर्ष बाद बिना एक कौड़ी के लैम्म को यह काम भी छोड़ना पड़ा क्योंकि वह धनी अब दिवालिया हो गया था। लैम्म को सभी ने सलाह दी कि अब तुम वापिस अपने देश लौट जाओ, पर बिना पैसे के उसका लौटने को जी नहीं चाहा। उस रूस से जो कि कलाकारों का स्वर्ग माना जाता है वह भला खाली हाथ कैसे लौट जाता। उसने सोचा शायद भाग्य अभी भी पलट जाये। २० वर्ष तक उसने सब प्रकार के लोगों में, सब छोटे बड़े शहरों में इधर-उधर खूब धक्के खाये, खूब भटका, पर इन सब कठिनाइयों के बीच में भी उसे सदा अपने देश, अपनी मातृभूमि जर्मनी लौटने की लगन लगी रही। 'किसी दिन तो मैं लौटूँगा' बस इसी आशा के सहारे वह जीता रहा। पर उसके भाग्य में यह नहीं लिखा था। उसकी यह इच्छा पूर्ण नहीं हुई। ५० वर्ष की आयु में रोग ग्रस्त हो वह जो नगर में फंस गया। अब उसमें रूस से जाने की शक्ति ही नहीं रही थी चाहे वह रूस से कितनी ही घृणा करता था। वहीं अब बिचारा इधर-उधर संगीत के पाठ दे अपना निर्वाह करता था।

देखने में लैम्म कुछ आकर्षक नहीं था। उसका कद छोटा था, पीठ और कन्धे झुके हुए थे, पेट अन्दर को धंसा था, उसके पैर बड़े बड़े और हाथ पतले-पतले और लाल-लाल से थे। उसकी पतली-पतली उंगलियों पर बड़े-बड़े नीले नाखुन थे। उसका मुँह झुर्रियों से भरा था, गाल धंसे हुए, पतले होठों को वह सदा चबाता रहता। वह प्रायः चुप ही रहता और बड़ा डरावना सा लगा करता। सफेद भौहों के नीचे उसकी आँखें बुझते हुए चिरागों-सी लगतीं। वह धीरे धीरे हर कदम पर अपना भार आगे फेंक झूमता हुआ चलता। कई बार उसकी आकृति ऐसे लगती मानो कोई पिंजरे में बंद उल्लू दर्शकों की दृष्टि से खीझ कर अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से इधर उधर ताक रहा हो।

उसके मुँह पर घोर वेदना की छाप सी लगी थी और इससे उसकी आकृति जो कि शायद कभी भी बहुत सुन्दर नहीं थी और भी बिगड़ गई थी। हाँ कई विचारशील लोगों को, जो कि पहली ही दृष्टि से अधिक नहीं प्रभावित होते थे, लैम्म के इस अनाकर्षक, सूखे हुए मुँह पर एक अद्वितीय सत्य और अच्छाई की झलक दिखाई देती।

वह बाख् और हाण्डल (प्रसिद्ध संगीतज्ञ) का पुजारी, अपनी कला में बड़ा निपुण था। प्रकृति ने उसे कल्पना शक्ति और स्थिरता सौंपी थी। यदि भाग्य कहीं उसका साथ देता तो वह अपने देश के बड़े बड़े संगीतकारों में से होता पर यह होना ही नहीं था। उसने बहुत सा संगीत रचा भी और लिखा भी पर उसमें से जरा भी प्रकाशित नहीं हुआ। वह ठीक तरह से ठीक समय पर कुछ कर ही नहीं पाता। एक बार उसके एक मित्र ने जो कि स्वयं भी निर्धन था अपने पैसों से उसके दो एक गीत

छपवाये पर वह वैसे ही दुकानों की अलमारियों में सड़ते रहे। वर्षों उन पर धूल जमती रही और आखिर वह स्मृति से ही लोप हो गये। अब लैम्म में कुछ चेष्टा करने की भी शक्ति नहीं थी। उसने अपने आप को भाग्य पर ही छोड़ दिया। अब उसकी आयु भी काफी हो गई थी। शरीर के साथ-साथ बुद्धि भी ढीली पड़ रही थी।

कालिटिनों के घर के पास ही वह एक छोटे से घर में रहता। एक बुढ़िया जो पहिले भिखमंगी होती थी, उसका भोजन आदि बना देती। वह कभी कभी दूर दूर तक घूमने चला जाता या घर में ही बैठा बैठा बाइबल आदि धार्मिक पुस्तकें अथवा शेक्सपियर का जर्मन अनुवाद पढ़ा करता। बहुत देर से उसने कभी कोई नई रचना नहीं की थी पर लिज़ा ने मानों उसे नींद से जगा दिया हो। लिज़ा के लिए उसने एक धार्मिक गान लिखा। यह भजन उसने बहुत श्रद्धा और प्रेम से लिखा था। सुनहरी अक्षरों में ऊपर उसने ऐलिज़बीटा कालिटिना को अर्पित, गुरु लैम्म की ओर से, लिखा और नीचे एक कोने में 'केवल तुम्हारे ही लिए।' इसी लिए जब पाशिन ने इस भजन की चर्चा की तो लैम्म को बड़ा दुख हुआ।

पाशिन ने पियानो पर बैठ गीत आरम्भ किया पर लिज़ा नहीं बोली। पाशिन भी ठहर गया और उसकी ओर देखने लगा। लिज़ा नाराज़ सी लगती थी। उसका मुख खिंचा हुआ और कठोर सा लग रहा था। "क्या बात है" पाशिन ने पूछा।

"तुम ने अपनी प्रतिज्ञा पूरी क्यों नहीं की" लिज़ा दुखी हो कर बोली, । "मैंने तुम्हें वह भजन दिखाते समय, कहा था कि लैम्म को इसके विषय में कुछ मत बताना।"

"मुझे बहुत खेद है ऐलिजवीटा। पता नहीं कैसे मेरे मुँह से बात निकल गई।"

"तुम ने उसे दुखी किया है और मुझे भी। अब वह मुझ पर भी कभी विश्वास नहीं करेगा।"

"मुझे क्षमा करो ऐलिजवीटा, यह मेरे बस की बात नहीं है। बचपन से ही जब मैं किसी जर्मन को देखता हूँ तो न जाने क्यों मेरा उसे चिढ़ाने का जी कर आता है।"

"तुम भी कैसी बातें करते हो, पाशिन, भला ऐसे निर्धन, दीन दुखी पुरुष को भी कोई सताना चाहता है। तुम्हें तरस नहीं आता उस पर।"

पाशिन चुप हो गया।

"तुम ठीक कहती हो, ऐलिजवीटा। मुझ में न जाने क्यों इतनी मूर्खता है। मेरी इन त्रुटियों से न जाने मुझे कितनी हानि पहुंच चुकी है। सभी मुझे अभिमानी समझने लगे हैं।"

पाशिन फिर ज़रा चुप सा हो गया। चाहे वह किसी भी विषय पर बात आरम्भ करता वह समाप्त सदा उसी पर होती।

"अपने ही घर में देखो वह फिर बोला" तुम्हारी मां बहुत दयालु हैं। उनकी तो मुझ पर बड़ी कृपा दृष्टि है। तुम पता नहीं मुझे कैसा समझती हो और तुम्हारी बूआ तो मेरी शक्ल देखना भी पसंद नहीं करती। शायद उसे भी मैंने किसी ऐसी मूर्खता से नाराज कर दिया है।"

"हां," कुछ सोचकर लिज़ा बोली, "उसे तो तुम ज़रा भी नहीं जचते।"

पाशिन ने पियानो के सुर छेड़ दिये और मुस्करा के बोला, अच्छा तुम मुझे कैसा समझती हो, क्या तुम भी मुझे स्वार्थी ही समझती हो ?"

"मैं तो तुम्हें बहुत कम जानती हूँ—पर फिर भी स्वार्थी तो—नहीं, नहीं तुम स्वार्थी कहाँ—तुम्हारी तो मेरे ऊपर कितनी कृपायें हैं, कितने एहसान हैं।"

"हां ठीक है, ठीक है" पाशिन बीच में ही बोल उठा "अब तुम मुझे शरमिंदा कर रही हो। संगीत की एक आध पुस्तक जो मैं तुम्हें दे पाया हूँ या उन चित्रों के लिए जो मैंने तुम्हारे एलबम में बनाये हैं। पर यह भी तो स्वार्थ ही है। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझ से तंग न आजाओ, तुम्हारा जी मुझ से उकता न जाये। और हां तुम शायद सोचती हो कि समय आने पर मैं किसी सगे संबंधी को भी मखौल किये बिना नहीं छोड़ूं।"

"तुम केवल भुलक्कड़ हो सब समाजी लोगों की तरह" लिज़ा ने कहा

पाशिन के माथे पर बल पड़ गये।

"चलो छोड़ो इस बात को", वह बोला, "आओ कुछ गायें बजायें, हाँ तुम से एक प्रार्थना करनी है। मुझे और जो इच्छा हो कहो, स्वार्थी, अभिमानी जो भी चाहो। पर मुझे समाजी मत कहो। इस बात से मुझे बहुत घृणा है क्योंकि आखिर मैं भी कलाकार हूँ। अच्छा-बुरा जैसा भी हूँ—हूँ तो कला का प्रेमी"

"आओ गीत शुरू करें" लिज़ा बोली और दोनों ने गीत आरम्भ किया। पहला भाग तो ठीक चलता गया, केवल कहीं-

कहीं पाशिन रुक जाता पर दूसरे भाग में तो वह बहुत ही पीछे रह गया और आखिर उसे अपनी कुर्सी खींच परे हो के बैठना पड़ा। अपने लिखे गीत पाशिन खूब अच्छी तरह गा लेता था पर यह शास्त्रीय संगीत जिस में जरा भी इधर-उधर होना संभव नहीं था, इसमें वह सदा ही पीछे रह जाता।

"आज तो पता नहीं क्या हो गया है मुझे, जरा भी बजाया नहीं जा रहा है। शुक्र है लैम्म ने नहीं सुना" वह कहने लगा। लिज़ा ने भी गीत छोड़ दिया, पियानो बंद कर कुर्सी पाशिन की ओर फेर ली।

"अच्छा तो अब क्या करें"

"क्या तुम कुछ किये बिना चुपचाप नहीं बैठ सकतीं, कभी भी। जाओ फिर अपनी चित्रकला की पुस्तक ले आओ—कुछ चित्र बनायेंगे—मेरे विचार में मेरा उस दिन वाला चित्र भी तो अभी समाप्त नहीं हुआ।"

लिज़ा दूसरे कमरे में अपनी चीजें लेने चली गई—पाशिन अकेला रह गया। उसने जेब से एक बढ़िया कैंब्रिक का रुमाल निकाला और हाथों को पोंछने लगा। उसके हाथ बिल्कुल सफेद और बहुत सुन्दर थे—फिर खिड़की के पास वह एक कुर्सी खींच कर बैठ गया। लिज़ा लौट आई थी।

"तुम ने मेरे मित्र की नकल उतारनी शुरू की है। करीबन ठीक ही है—केवल यहाँ पर थोड़ा साया चाहिये था" पैंसिल से दो चार लकीरें उसने इधर उधर मारीं। पाशिन सदा कुछ एक जैसे ही चित्र बनाया करता था। बड़े-बड़े लंबे पेड़, उनके पीछे कुछे हरे-हरे खेत और दूर क्षितिज पर धुँधली सी पर्वतमाला।

लिज़ा चुपचाप खड़ी देखती रही।

"चित्रकला में भी जीवन की तरह साहस और फूर्ति की बड़ी आवश्यकता होती है" वह बोला।

उसी समय लैम्म ने कमरे में प्रवेश किया पर उन दोनों को बैठा देख वह लौट पड़ा। पाशिन ने सब चीजें फेंक उसे रोक लिया। "इतनी जल्दी किस बात की है, महोदय। जरा ठहरो न चाय आदि पी कर जाना"

"नहीं, मेरे सिर में दर्द है"

"कुछ तो ठहरिए"

"नहीं, मेरा सिर बहुत दर्द कर रहा है"

पाशिन ने फिर लैम्म से बहुत प्रेम पूर्वक आग्रह किया और कहने लगा "आपके जाने के बाद हमने 'बीथोवन' का 'सोनाटा' बजाना शुरू किया था पर कुछ बात नहीं बनी। मुझ से तो एक पद भी ठीक तरह नहीं बजाया गया"

"तुम अपना वही गीत गाया करो" लैम्म कह कर चल पड़ा। लिज़ा उसके पीछे भागी।

"क्रिसटोफर लैम्म महोदय, मुझे क्षमा कर दो। मैंने आपको बहुत तंग किया है।"

लैम्म चुप रहा।

"मैंने आप का वह भजन पाशिन को इसलिए दिखाया था कि उसे पसंद करेगा और वास्तव में वह बड़ी प्रशंसा कर रहा था भजन की।"

लैम्म ठहर गया,

"ठीक है ठीक है। पर क्या तुम देखती नहीं कि वह ऐसी चीजें समझ ही नहीं सकता। उसका सब ज्ञान खोखला है"

"आप उसके साथ अन्याय कर रहे हैं। वह सब समझता

है और स्वयं कर भी सकता है।"

"हाँ कर तो सकता है। पर उसकी सब बातें घटियल, ओछी, हल्की होती हैं। संसार ऐसे ही लोगों को और ऐसे ही संगीत को पसंद करता है। इसलिए सब ठीक है।——और मैं तो बिल्कुल भी गुस्से नहीं हूँ। मैं तो केवल मूर्ख हूँ। मेरा गीत भी वैसा ही था। मुझे लज्जा आ रही है अपने आप पर"

"मझे क्षमा कर दो, लैम्म महोदय" बड़े विनीत स्वर में लिज़ा बोली।

"ठीक है ऐलिज़बीटा, मैं तुम्हारे साथ ज़रा भी नाराज़ नहीं। तम बहुत अच्छी लड़की हो।......देखो वह सामने कौन आ रहा है।" और लैम्म बड़ी तेज़ी से फाटक की ओर चल पड़ा।

उधर से कोई और आदमी खाकी कोट और बड़ी सी टोपी पहने आ रहा था। लैम्म ने जल्दी से उसे प्रणाम किया और आगे चला गया। उसका कुछ ऐसा स्वभाव हो गया था कि जब कभी कोई अनजान मिल जाता तो उसे बड़े प्रेम से प्रणाम कर देता और यदि कोई जान-पहिचान वाला मिलता तो अपना मुँह इधर उधर छिपाता रहता। परदेशी क्षण भर के लिए तो हैरान होकर उसकी ओर देखता रहा और फिर लिज़ा की ओर चल पड़ा।

"तुम तो मुझे नहीं पहचानतीं, पर मैंने देखते ही तुम्हें पहचान लिया था। आठ साल पहिले जब मैंने तुम्हें देखा था तो तुम छोटी सी बच्ची थीं। तुम्हारी माँ घर पर है क्या? मैं लैवरिटस्की हूँ। उसे मिलने आया हूँ"

"मेरी माँ आपको देख कर बहुत प्रसन्न होंगी। उसने आगे ही आपके आने की खबर सुन ली है" लिजा बोली।

"तुम्हारा नाम ऐलिजबीटा है न" सीढ़ियाँ चढ़ते हुये वह बोला।

"हाँ"

"हाँ, मुझे खूब याद है। तुम्हारी शक्ल ही कुछ ऐसी है कि जल्दी भूलती नहीं। मैं तुम्हारे लिए बहुत मिठाइयाँ लाया करता था।"

लिजा शरमा गयी। कैसा अजीब आदमी है, उसने सोचा और अंदर चली गयी। लैवरिटस्की बाहर ठहरा। बैठक से पाशिन के बोलने की आवाज आ रही थी। उसकी किसी बात से मारया और गोडोन्सकी खूब हंस रहे थे। मारया ने लैवरिटस्की का नाम सुना तो एक दम पीली पड़ गई।

बड़ी घबराई हुई आवाज में वह लैवरिटस्की से बोली, "आओ भाई, कैसे हो तुम, बहुत खुशी हुई है तुम्हें देखकर।"

"तुम अच्छी हो" लैवरिटस्की बोला।

"बैठो तो सही, लैवरिटस्की इन सब को मिलो। यह मेरी बेटी लिजा है।"

"इसको तो मैं पहिले ही मिल चुका हूँ" लैवरिटस्की ने उत्तर दिया।

"यह मिस्टर पाशिन हैं, और यह है सरजी पैटरोविच गोडोन्सकी . . . . . . हाँ तुम अपना कुछ हाल-चाल बताओ"

"देखलो—ठीक ठाक हूँ और तुम भी तो खूब भली लग रही हो। इनआठ वर्षों ने तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ा।"

सच कितना समय हो गया है हमें एक दूसरे को मिले—और

तुमने यह तो बताया नहीं कि कहाँ से आ रहे हो, कहाँ जा रहे हो और कितनी देर यहाँ ठहरोगे।"

"मैं अभी बर्लिन से आया हूँ" लैवरिटस्की बोला "और कल गाँव जा रहा हूँ। वहाँ काफी देर ठहरने का विचार है।"

"लैवरिस्की जा रहे हो"

"नहीं लैवरिस्की नहीं। एक और छोटा सा गाँव है मेरा, यहाँ से कोई २५ कोस—वहीं जाने का विचार है"

"यह वही गाँव है न जो तुम्हें ग्लैफीरा पैटरोवना से मिला था"

"हाँ वही"

"पर फोयडोर तुम लैवरिस्की क्यों नहीं जाते। वहाँ इतना सुन्दर घर है तुम्हारा।

"हाँ"—लैवरिटस्की चुप सा हो गया "इस गाँव में भी एक छोटा सा घर है। मेरे लिए वही काफी है।"

मारया मित्रविना को और कोई बात न सूझी। वह चुप हो अपनी कुर्सी में सिकुड़ कर बैठ गयी। अब पाशिन ने लैवरिटस्की को बात चीत में लगाने का प्रयत्न किया।

मारया चुपचाप बैठी कभी आहें भरती, कभी हिलती जुलती और कभी कभी वार्तालाप में भी भाग ले लेती। काफी देर तक लैवरिटस्की यह सब देखता रहा पर आखिर उसके धैर्य ने भी जवाब दे दिया। उसने मारया से पूछा "तुम्हारी तबीयत तो खराब नहीं है, कहीं बीमार तो नहीं तुम।"

"नहीं धन्यावाद है भगवान का मैं तो बिल्कुल अच्छी हूँ। भला तुम्हें यह विचार कहाँ से आया।"

"यूँ ही मुझे एक क्षण के लिए लगा था कि तुम कुछ स्वस्थ नहीं लग रही हो"

मारया चुप हो गयी "हूं तो यह बात है" वह सोचने लगी "मुझे यूँ ही फिकर लगा हुआ था इस का। और यह जनाब ऐसे मज़े में हैं मानो कोई बात ही न हुई हो।"

लैवरिस्टकी वास्तव में था भी बड़ा स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट उसे देख कर यह विचार भी न आ सकता था कि बिचारा इतनी कठिनाई में है। उसका चमकता हुआ लाल चेहरा उज्जवल ललाट, उस के स्वास्थ्य का परिचय दे रहे थे। उस का शरीर गठा हुआ था और बाल खूब घने और घुंघराले थे। केवल उस की बड़ी बड़ी नीली आँखों से कभी कभी उस के अशाँत विचलित हृदय की झलक मिलती।

पाशिन बिचारा बड़ी कठिनता से बातचीत को बनाये रखने का प्रयास कर रहा था। वह कई विषयों पर बातचीत कर चुका था। कभी चीनी साफ करने की विधि तो कभी कुछ और...... इतने में साथ वाले कमरे से मारफ़ा टिमोफीना की आवाज़ आई "कौन आया है......फेदया...अरे तुम" और वृद्धा तेजी से कमरे में आ गयी। फेदया बिचारा अभी उठ भी नहीं पाया था कि वृद्धा ने उसे अपनी बांहों में जकड़ लिया। फिर वह दो कदम पीछे हट प्रेम से उस की ओर देखने लगी।

"ओ फेदया, तुम कितने भले लग रहे हो। आगे से कुछ बड़े लगते हो पर आगे से भी अच्छे। इधर आओ तो मेरे पास। तमने पूछा तो नहीं होगा कि बूआ जीती है या मर गई है। खैर कोई बात नहीं। तुम मेरे हाथों में जन्मे थे फेदया आज—तुम्हें

देख मुझे कितनी प्रसन्नता हो रही है। अच्छा, यह तो बताओ खाओगे क्या। मारया तुमने कुछ पूछा नहीं है" वृद्धा बड़े गुस्से से मारया की ओर देखने लगी।

"नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए।"

"नहीं कैसे नहीं। कम से कम चाय का प्याला तो पीओगे ही। पता नहीं वह कितनी दूर से चलकर आया है और तुमने उसे चाय तक नहीं पूछी" मारफा ने फिर गुस्से से कहा "उठो लिज़ा जलपान का प्रबन्ध करो।" फेदया "वह फिर बोली" "मुझे याद है जब तुम छोटे होते थे तो बहुत खाया करते थे, अब भी वैसे ही हो क्या।"

"नमस्कार, मारफा टिमोफीना" पाशिन ने आगे बढ़ कर कहा।

"ओह, क्षमा करना, मैंने तुम्हें देखा ही नहीं" मारफा ने उत्तर दिया, "तुम बिल्कुल अपनी माँ जैसे लगते हो . फेदया। केवल तुम्हारी नाक बाप जैसी है। अभी कुछ समय रहोगे न यहाँ।"

"नहीं मैं कल जा रहा हूँ, बूआ"

"कहाँ"

"वैसीलीस्कोया"

"कल ही"

"हाँ कल ही"

"अच्छा, जैसी तुम्हारी इच्छा। भगवान् तुम्हें सदा सुखी रखें। पर देखो जाने से पहिले मिल के जरूर जाना" वृद्धा लैवरैटस्की के माथे पर हाथ फेरती हुई बोली।

"मुझे तो आशा ही नहीं थी कि तुम्हें फिर देखूँगी। अभी इतनी जल्दी मरती तो नहीं मैं। अभी दस एक साल तो और काट ही जाऊँगी। तुम्हें याद है तुम्हारे दादा कहा करते थे कि हम पैस्टो तो इतने दीर्घ आयु हैं मानो हमें दो जीवन प्रदान हुए हों। हाँ, तुम्हारा कुछ विश्वास नहीं था कि कब लौटोगे। न जाने कितने वर्ष तुम विदेश ही घूमते रहे हो।"

"तुम्हारा पिता भी अजीब ही आदमी था, फेद्या। पर उसने जो तुमसे व्यायाम आदि करवाये थे, बचपन में, वे अच्छे ही थे। याद है तुम्हें अपना वह स्विस मास्टर जो तुम्हें कुश्ती सिखाता था" मारफा बोलती जा रही थी, "ओह, मैं भी कितना बोल रही हूँ। मिस्टर पांशिन को भी मैंने आज बोलने नहीं दिया," वह व्यंग से बोली। "चलो आओ बाहर चबूतरे पर बैठ के चाय पियेंगे।" मारफा उठ खड़ी हुई, और सब उसके पीछे चल दिए। मारफा ने फेद्या की बांह का सहारा लिया "कितने बलवान हो तुम" वह बोली।

जब बाकी सब उठ कर बाहर जाने लगे तो गोडोन्सकी धीरे से खिसक गया। इतनी देर वह एक कोने में बैठा सब की बातें सुन रहा था पर अब वह समय देख, बाहर लोगों में फेद्या के आने का समाचार फैलाने चला गया।

उसी दिन रात को ११ बजे, कालिटिन के घर में बैठक के द्वार पर पाशिन, ऐलिजवीटा से विदा ले रहा था "तुम जानती ही हो, लिज़ा मैं क्यों यहाँ रोज़-रोज़ आता हूँ। तुम सब जानती ही हो इसलिए मुझे बार-बार कहने की तो आवश्यकता नहीं।" लिज़ा चुपचाप सुन रही थी। लज्जा से उसकी आँखें झुक गईं और मुँह लाल हो गया।

ऊपर मारफा टिमोफीना के कमरे में, दीपक के धुंधले प्रकाश में लैवरिटस्की एक कुरसी में बैठा था। मारया मित्रविना से विदा लिये उसे घन्टे से अधिक हो गया था और एक घन्टे से वह वहीं चुपचाप बैठा था। मारफा टिमोफीना उस के पास खड़ी बड़े प्रेम से उस के बाल सहला रही थी। उस ने फेदया से कोई प्रश्न नहीं किया। कुछ भी पूछने का प्रयत्न नहीं किया। पूछती भी क्या ? फेदय के हृदय की वेदना को वह खूब पहचानती थी। यूँ ही चुप-चाप वह अपनी सहानुभूति उँडेल रही थी।

फोयडोर लैवरिटस्की बड़े उच्च घराने का था। पहिले पहल, वैसिली के राज्य में, लैवरिटस्की प्रशिया से यहां आये थे। बहुत देर तक वह इधर उधर के प्रान्तों में बड़ी बड़ी उच्च पदवियों पर रहे। पर सब से धनी मानी, फोयडोर का पड़दादा, ऐंड्री लैवरिटस्की हुआ था। वह बहुत क्रूर, कठोर, ढीठ, लालची और चालाक आदमी था। अभी तक उसकी क्रूरता और लालच की कहानियां प्रसिद्ध थीं। वह खूब लंबा, चौड़ा था और उसकी आवाज़ बहुत भारी और कठोर थी। यदि कभी वह धीरे से बोलता तो सुनने वाले बिचारे भय से काँपने लगते। उसकी पत्नी भी उससे कुछ कम न थी। उस का मुख गोल था, आंखें गोल गोल सी और नाक खूब लंबी। उसके मुख पर सदा क्रोध का भाव रहता। अपने पति से उस की खूब पटती थी। बिल्ली कुत्ते की तरह

वे एक दूसरे से लड़ते। पर पति के देहान्त के कुछ ही समय बाद वह चल बसी।

एँड्री का पुत्र, फेद्या का दादा, पोयटोर अपने पिता से बिल्कुल भिन्न था। वह साधारण ज़मींदारों जैसा सीधा-सादा सा था। वह बहुत चतुर और सयाना नहीं था। हाँ अतिथियों का खूब सत्कार किया करता। बोलता वह बहुत था पर पिता सी क्रूरता उसमें नहीं थी। जब ३० वर्ष की आयु में वह पैतृक सम्पत्ति का अधिकारी हुआ तो ज़मींदारी पर कोई दो हज़ार के लगभग खूब सधे हुए मज़दूर व किसान थे। पर थोड़े ही समय में उसने सब चौपट कर दिया। ज़मीन का कुछ भाग बेच दिया और मज़दूरों को बिगाड़ दिया। सब प्रकार के लोग, नीचे वर्गों के परदेशी, अनजान निधड़क उसके घर आते, पेट भर खाते, जितना जी चाहे शराब पीते, जो जी चाहता उठा लेते और फिर यजमान को आशीशें देते चले जाते। पोयटोर को जब क्रोध आता तो वह इन अतिथियों को खूब गालियाँ देता। पोयटोर की पत्नी बड़ी भोली-भाली और भली स्त्री थी। पिता के कहने पर पोयटोर ने उससे विवाह किया था। उसका नाम ऐना था। वह पास के ही किसी ज़मींदार की लड़की थी। अपने पति को वह कभी किसी बात में नहीं टोकती। अतिथियों का खूब सत्कार करती और पड़ोसियों से मेल-मिलाप रखती। उसे दिन से रात तक केवल ताश खेलने का शौक था। पति से वह बहुत डरती थी चाहे अपना सारा दहेज और सारा धन उसने पति के ही हाथों दे दिया था फिर भी यदि वह कभी ताश में कुछ हार जाती तो यह बात पति से छिपा के ही रखती। इनकी दो सन्तानें थीं। लड़का ईवान, जो फोयडोर का पिता था और लड़की

ग्लैफीरा। ईवान अधिक देर घर पर नहीं रहा। वह बचपन में ही अपनी एक धनी सम्बन्धी, रानी कुवेन्सकाया के पास चला गया। क्योंकि रानी ने उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया हुआ था।

कुवेन्सकाया बहुत धनी थी। उसने ईवान को खूब ठाट से रखा। उसकी शिक्षा के लिए विशेष अध्यापक आदि रखे। इन्हीं अध्यापकों में एक बहुत चतुर फ्रैंच पादरी मि० कोरोटिन भी था। थोड़ी देर के बाद राजकुमारी ने उससे विवाह कर लिया। अपनी सारी सम्पत्ति कुवेन्सकाया ने पादरी मि० कुरोटिन के नाम कर दी। मि० कुरोटिन बड़ा कपटी था और थोड़ी देर बाद बहुत सा धन ले, वृद्धा कुवेन्सकाया को छोड़ पैरिस भाग गया। जब यह दुर्घटना (विवाह) हुई तो ईवान २० बर्ष का था। जिस संपत्ति का आगे वह उत्तराधिकारी था और जिस घर में आगे वह बड़े मान से रहता था अब वहीं वह अजनबी सा हो गया। पीटर्सबर्ग के उच्च घरानों में जहाँ उसका आना जाना था वहाँ के छोटे-छोटे द्वार अब उसके लिए बन्द हो गये। आखिर वह तंग आकर, अपने पिता के गाँव चला गया। इतने वर्ष ऐश्वर्य से और ठाट से रहने के बाद उसे पिता का घर पुराना, मैला और भद्दा लगता। यहाँ की एक एक वस्तु से उसे घृणा आती। और वहाँ के रहने वाले सीधे-सादे लोगों को वह कुछ अजीब सा लगता। सिवाय माँ के और कोई भी उससे नहीं हिला मिला। सब उसको सन्देह की दृष्टि से ही देखते। यहाँ तक कि उसका पिता पोयटोर भी उससे तंग आ गया। ईवान के बढ़िया-बढ़िया वस्त्र और उसका शहरियों सा रहन-सहन पोयटोर को बड़ा अखरता। कभी-कभी तो उसे बहुत क्रोध आ जाता "यह कैसा है, हर बात पर नाक चढ़ाता है। भोजन यहाँ का इसे नहीं भाता,

लोगों से इसे दुर्गंध आती है, घर इसे ठीक नहीं लगता, यदि मैं किसी मजदूर को दण्ड दूँ तो इसे अच्छा नहीं लगता। सरकारी नौकरी इसे अच्छी नहीं लगती, स्वास्थ्य इसका ऐसा वैसा ही है—किस काम का है, यह बिगड़ा हुआ—कहीं का लाट साहब। बस किताबें घर कर गई हैं, इसके दिमाग़ में" और पोयटोर सच ही कहता ईवान के दिमाग़ में वास्तव में किताबों ने घर किया हुआ था। हाँ, उनका असर केवल दिमाग़ तक ही था। उसका हृदय वैसे का वैसा ही रह गया।

ईवान के सामने पोयटोर के अतिथि भी कुछ खिंचे खिंचे से रहते। अपनी बहिन ग्लैफीरा, जो कि उससे १२ वर्ष बड़ी थी, से भी उसकी ज़रा नहीं बनती थी। यह ग्लैफिरा भी कुछ विचित्र ही थी, भद्दी, कुबड़ी, बड़ी-बड़ी आँखों वाली, अपनी दादी ऐंड्री की स्त्री से बहुत मिलती जुलती थी। वह बड़ी हठी, क्रोधी और मनमानी करने वाली थी। इसी लिए उसने विवाह भी नहीं करवाया। ईवान का घर लौटना उसे बड़ा अखरता था। जब तक ईवान, राजकुमारी कुबेन्सकाया के पास था तो उसे कमसे कम आधी सम्पत्ति मिलने की तो आशा थी पर अब तो......। और इस पर उसे ईवान से बहुत ईर्षा थी। ईवान ने अच्छी शिक्षा पाई थी और वह बड़ी सुगमता से फ्रैंच बोलता था। ग्लैफीरा बिचारी फ्रैंच का एक शब्द भी नहीं बोल सकती थी चाहे उसके माता, पिता भी उसी की भाँति अशिक्षित ही थे पर अपनी यह न्यूनता उसे बड़ी चुभती।

ईवान के लिए यहाँ गाँव में समय काटना बहुत मुश्किल हो गया। थोड़े ही दिनों में वह उकता गया। यहाँ का एक वर्ष उसे दस वर्षों सा लम्बा लगता। बहुत सा समय वह अपनी माता

के पास बैठ उसकी सीधी-सीधी बातें सुन के काट देता। ऐना की दासियों में एक बड़ी सुन्दर युवा दासी मलानया थी। वह बड़ी भोली सी थी। उसके भोले पन ने और उसके मीठे बोल ने युवक ईवान का मन मोह लिया और ईवान उससे प्रेम करने लगा। भोली मलानया भी ईवान को चाहने लगी। वह तब मन से उसकी हो गई। भला गाँव में ऐसी बात कब तक छुपी रह सकती थी। शीघ्र ही बात फैल गई कि 'छोटे मालिक का दास मलानया से प्रेम हो गया है।' खबर पोयटोर के कानों तक भी पहुंची। और कोई समय होता तो वह शायद ऐसी बात की परवाह ही नहीं करता पर अब उसके हृदय में तो पुत्र से वैर था ही, इस घटना ने मानो आग में इन्धन डाल दी। पोयटोर को अपनी सारी कटुता निकालने का बहाना मिल गया।

"अब मैं इस शहरियों को नीचा दिखाऊँगा" वह सोचने लगा।

सारे घर में कोलाहल मच गया। मलानया को एक कमरे में बन्द कर दिया गया। ईवान को पिता के सन्मुख बुलाया गया। ऐना भागी-भागी आई। उसने पति को समझाने का बहुत यत्न किया पर वह कहाँ सुनता था—पोयटोर पुत्र पर यों झपटा जैसे बाघ शिकार पर झपटता है। उसने ईवान को बहुत गालियाँ दीं, बहुत बुरा-भला कहा "तुम बदमाश हो, चोर हो, धूर्त हो" और भी बहुत तरह सा अपमान किया पर ईवान चुपचाप सब सुनता रहा। जब पिता ने उसे बुरी तरह सज़ा देने की धमकी दी तो ईवान का धैर्य्य भी टूटी गया।

"बहुत अच्छा मैं भी तुम्हें बताऊँगा" ईवान ने सोचा और धीरे धीरे बड़े धैर्य से वह बोला "जो कुछ आप कह रहे हैं सब

ठीक है—मैंने बहुत अपराध किया है पर मैं बदमाश नहीं हूँ। मैं अपने अपराध की सजा भुगतने को तैय्यार हूँ। मुझे ऊँच नीच का जरा भी विचार नहीं, मैं मलानया से विवाह करने को तैय्यार हूँ।" ईवान के यह कहने की देर थी कि पोयटोर उस पर टूट पड़ा। मुक्कों से. पैरों से उसने ईवान को मारना शुरू किया। ऐना बिचारी अपना मुँह हाथों में छिपा रोने लगी। उससे यह सब कहाँ देखा जाता था। भाग्य से ईवान उसी समय नये वस्त्र और नये बूट पहिन के आया था। अब वह एकदम घर से भाग गया और भागता ही गया जब तक कि पीछे आते हुए पोयटोर के पैरों की आवाज आती रही—पोयटोर आखिर थका मांदा, पसीने से लथपथ घर लौट आया और ईवान ने किसी पड़ोसी के यहाँ आश्रय लिया। क्रोध में आ पोयटोर ने पुत्र की सब पुस्तकें आदि जला दीं, मलानया को दूर किसी गाँव भेजने की आज्ञा दी और घोषित कर दिया कि आज से ईवान मेरा कुछ नहीं लगता। कुछ भले आदमियों ने ईवान को यह सब जा कहा पर इससे वह और भी आगबबूला हो गया "कोई बात नहीं मैं इन सब बातों का बदला ले के छोड़ूँगा" वह कहने लगा। क्रोध में आ उसने राह में जाती हुई मलानया को भगा लिया और किसी पास के गाँव में जाकर उससे विवाह कर लिया। उसी दयालु पड़ोसी ने उसकी बड़ी सहायता की। यह पड़ोसी कोई पुराना रिटायर्ड नाविक था। ऐसी वैसी बातों में वह खूब खुश रहता था। अगले दिन ईवान ने पिता को बड़ा रूखा सा पत्र लिखा और पास के एक गाँव में जहाँ उसका चचेरा भाई, मित्री पैस्टोव और उसकी बहन रहते थे, वहाँ चला गया। उसने पैस्टोव को सब बात कह सुनाई और उनसे प्रार्थना की कि जब तक उसे

कोई काम नहीं मिलता वह उसकी पत्नि को आश्रय दें। पैस्टोव बहन भाई दोनों स्वभाव से ही दयालु थे। उन्होंने मलानया को रखने में तनिक भी आपत्ति नहीं की। तीन सप्ताह तक ईवान उन्हीं के पास बैठा प्रतीक्षा करता रहा कि शायद पोयटोर मान जाये पर वह कहाँ मानने वाला था। पुत्र के विवाह की बात सुनते ही वह बीमार पड़ गया और उसने सब को ईवान का नाम तक लेने से भी मना कर दिया। माँ बिचारी ने चोरी चोरी इधर-उधर से पाँच सौ रुपये इकट्ठे कर पुत्र को और एक छोटी सी मूर्ति बहू को भेजी। उसकी पत्र लिखने की तो हिम्मत नहीं पड़ी। हाँ, उसने एक संदेश पुत्र के नाम भेजा कि वह अधिक फ़िकर न करे। अन्त में भगवान सब ठीक ही करेंगे। उसका पिता आप ही उसे क्षमा कर देगा। उसने यह भी कहा कि मेरी तो इच्छा थी कि मेरी पुत्र-वधू कोई और होती पर भगवान का किया सिर-आंखों पर होता है और उसने मलानया को भी आशीर्वाद भेजा।

ईवान अब पीटर्सबर्ग चला गया। उसको अभी वहाँ भी काम की कुछ आशा नहीं थी। भविष्य अन्धेरा ही दिख रहा था। पर फिर भी गाँव के नीरस, फीके जीवन से छूट कर वह बहुत प्रसन्न हुआ। मलानया का वियोग उसे बिल्कुल नहीं अखरा। बल्कि मलानया के संग दिन-रात रहना उसे अधिक कठिन लगता था। पीटर्सबर्ग में भाग्य ने फिर उसका साथ दिया। राजकुमारी कुबेन्सकाया का बहुत सा धन तो मि० करोटिन लूट के ले गया था पर फिर भी उसने अपने भतीजे ईवान की काफी सहायता की। उसने अपने सब उच्चाधिकारी मित्रों से ईवान की सहायता करने को कहा और उसे स्वयं भी ५००० रुपया दिया। तीन महीने के अन्दर ही ईवान को इंग्लैंड के रूसी

राजदूत के दफ्तर में अच्छी पदवी मिल गई और वह इंग्लैंड चला गया। कुछ महीने बाद वहीं उसे पेस्टोव का पत्र मिला कि मलानया के पुत्र हुआ है। मलानया बिचारी ने भी टूटी-फूटी दो चार लाइनें लिखीं पर ईवान ने उसकी तनिक भी परवाह नहीं की। पुत्र जन्म से उसे क्षण भर को प्रसन्नता तो हुई पर शीघ्र ही वह फिर सब भूल गया। वहाँ इंग्लैंड में वह खूब मजे में था। उसने बहुत से नये नये मित्र बना लिये थे। ताश आदि खेलने में वह प्रायः मग्न रहता। और वहीं किसी सुन्दरी के प्रेम में आसक्त वह बिचारी भोली मालानया को भूल ही गया।

बूढ़े पोयटोर लैवरिटस्की के हृदय में अभी भी ईवान से बहुत गुस्सा था। यदि ईवान कहीं छः महीने के बाद आकर भी उससे क्षमा माँग लेता तो पोयटोर उसे थोड़ा बहुत कह कर माफ कर देता। पर ईवान तो अब सब को भूल ही गया था। विदेश जा उसने कभी किसी को याद न किया। जब कभी बिचारी ऐना, ईवान का नाम ले लेती, पोयटोर फिर से आग बगूला हो जाता "छोड़ो इस बात को, उसका नाम न लो मेरे सामने। इतना ही शुकर करो कि मैंने उसे कुछ अभिशाप नहीं दिया। यदि मेरी जगह मेरा बाप होता तो अपने हाथों से उसका गला घोंट देता।" ऐना बिचारी यह सब सुन कर चुप हो जाती। एक बार जब पेस्टोव ने पोयटोर को उसकी पुत्र-वधू के विषय में कुछ लिखा तो उसने बहुत क्रोध से उत्तर दिया कि मेरी कोई पुत्र-वधू नहीं है। पर जब मलानया के यहाँ पुत्र जन्मा तो पोयटोर का कठोर

हृदय भी पिघल गया। वह इधर उधर से मलानया और नन्हें बालक फोयडोर के विषय में पूछता रहता और कभी कभी चोरी से उन्हें कुछ पैसे आदि अन्य वस्तुएँ भेजता रहता।

फेदया अभी वर्ष भर का भी न हुआ होगा कि ऐना बहुत बीमार पड़ गई। जब उसका अन्त काल निकट आ गया, तो आँखों में आँसू भर उसने एक बार मरने से पहले अपनी पुत्र वधू और पौत्र को देखने की इच्छा प्रकट की। वृद्ध पोयटोर ने उसी समय एक गाड़ी मलानया और फोयडोर को लाने के लिए भेज दी। मलानया बिचारी डरती घबराती बालक और मारफा टिमोफीना के साथ आ गई। घबराते घबराते उसने पोयटोर के कमरे में पैर रखा और प्रणाम कर एक ओर खड़ी हो गई।

"अच्छी हो" पोयटोर बोला। "आओ मालकिन के पास" पोयटोर उठकर बालक को देखने लगा। फोयडोर ने अंगड़ाई ली और मुस्करा कर अपना हाथ बढ़ा दिया। बालक की इस हरकत ने पोयटोर का मन मोह लिया।

मलानया ने ऐना के कमरे में प्रवेश करते ही झुक कर प्रणाम किया और वहीं द्वार के पास बैठ गई। "आगे आओ" ऐना बोली और उसने पुत्र वधू को हृदय से लगा आशीर्वाद दिया। फिर भीगी आँखों से वह पोयटोर की ओर देखने लगी मानों कुछ कहना चाहती हो। पर पीड़ा से वह व्याकुल हो गई और यत्न करने पर भी बोल न सकी। "मैंने समझ लिया है जो तुम कहना चाहती हो। घबराओ मत। अब यह यहीं रहेगी और इसी के पीछे मैं ईवान को भी क्षमा कर दूँगा।"

ऐना पैवलवोना का मुख शांत हो गया और उसी शाम को उसने प्राण दे दिये।

पोयटोर अपने वचन का पक्का निकला। उसने पुत्र को भी लिख दिया कि उसकी माता की अन्तिम इच्छानुसार अब मलानया और बालक फेदिया उसी के पास रहेंगे और अब उसने ईवान को भी क्षमा कर दिया है।

मलानया को घर में दो कमरे दे दिये गये। दो दासियां और एक छोकरा उसके लिये रख दिया गया। घर में आने वाले अतिथियों से भी अब वह मिलती जुलती। मारफा टिमोफीना अब अपने गाँव वापिस लौट गई क्योंकि ग्लैफिरा के संग उसकी जरा भी न बन आई।

मलानया धीरे-धीरे सब से हिल मिल गई। पोयटोर चाहे उसके संग कभी भी बात चीत न करता पर फिर भी उसे काफी चाहता था। किसी न किसी तरह उसके दिन कट ही जाते यदि ग्लैफीरा हाथ धो उसके पीछे न पड़ जाती तो। ग्लैफीरा उसे बहुत तंग करती थी। माँ के जीते जी भी वही घर की असली मालकिन थी। जो कुछ भी लेना देना होता सब उसी की आज्ञा से। यहाँ तक कि पोयटोर स्वयं भी ग्लैफीरा से पूछे बिना कभी कुछ न करता अपना यह अधिकार ग्लैफीरा किसी भी हालत में छोड़ने को तैयार न थी। अब यह नई मालकिन आ गई थी......और मालकिन भी कैसी। जब ईवान ने मलानया से विवाह किया था तो पोयटोर से भी अधिक दुख ग्लैफीरा को हुआ था। उसके स्वाभिमान को बड़ा धक्का लगा था। अब वह विचारी निर्दोष मलानया से सब बदले लेने लगी। जिस दिन से मलानया ने घर में पैर रखा था विचारी ग्लैफीरा से डरने लगी थी। ग्लैफीरा उसे प्रायः रोज ही बातों बातों में सुना देती कि वास्तव में तो वह दासी ही थी। मलानया यह सब तो सह लेती पर उसे

एक औरबात का बड़ादुख था। ग्लैफीरा ने यह कहा कि "तुम उसका ध्यान रखने के काबिल ही नहीं हो" और फोयडोर को भी उससे छीन लिया। मलानया बच्चे का मुँह देखने को भी तरस जाती उसने कई बार पति को आने के लिए लिखा। पोयटोर ने भी कई पत्र डाले। ईवान रूखा सा उत्तर दे देता कि शीघ्र आऊँगा पर वह न आया। इंगलैंड में वह अपनी रंगरेलियाँ मनाने में खूब मग्न था।

आखिर वह १८१२ में छ वर्षों बाद आया। पिता पुत्र मिले तो उन्होंने पिछली बातों का नाम तक न लिया और वह समय ही नहीं था ऐसी बातों का। सारा रूस एक ही शत्रु से लड़ने को तैय्यार था। बाप बेटे ने उस समय सब मतभेद भुला अपने को केवल रूसी ही समझा। पोयटोर ने तो अपने धन से एक पूरी रैजीमैन्ट की रैजीमैन्ट ही तैय्यार करवादी। पर युद्ध ही समाप्त हो गया।

ईवान घर बैठा-बैठा फिर उकताने लगा। देश देशान्तर घूमने की इच्छा फिर प्रबल हो उठी। मलानया का प्रेम उसे बांधने में असमर्थ रहा। ईवान के जीवन में मलानया कुछ भी न थी। पति पर मलानया ने बड़ी बड़ी आशायें बांध रखी थी पर वह सब मिट्टी में मिल गई। ईवान ने भी यही निर्णय किया कि ग्लैफिरा फोयडोर की ज्यादा अच्छी तरह देख भाल कर सकती है इस लिये फेदया उसी के पास रहे। मलानया की सब आशाओं पर पानी फिर गया। अब उसे जीवन में केवल अंधकार ही अंधकार दिखाई देने लगा। धीरे-धीरे वह बीमार पड़ गई। उसका शरीर बिल्कुल क्षीण हो गया। हृदय तो पहिले ही टूट चुका था। अभी भी बिस्तर पर पड़ी वह वैसी ही भोली भाली। लगती हां, मूक सी

वेदना की छाप मानों उसके मुँह पर लग गई। चुपचाप सी पड़ी हुई वह बड़ी बड़ी मिरीह आंखों से ग्लैफीरा को देखा करती और अन्त में ग्लैफीरा के ही हाथों अपना इकलौता फेदया सौंप वह चल बसी।

धरती से उखाड़ कर फेंके हुए पौदे के समान वह घुल घुल कर समाप्त हो गई। वह बिचारी जीते जी ही मृत सी हो गई थी और मृत्यु के बाद सिवाय उसकी दासीयों के या वृद्ध पोयटोर के किसी ने उसके अभाव को अनुभव न किया। पोयटोर को रह रह कर उस का भोला सा घबराया हुआ सा मुख याद आता।

इसके कोई पांच वर्ष बाद १८१६ में मास्को में पोयटोर का भी देहान्त हो गया। यहां वह ग्लैफीरा और फोयडोर के साथ रहता था। उसकी अन्तिम इच्छा यह थी कि उसे भी ऐना और मलानया के पास ही दबाया जाये। जब ईवान को पिता की मृत्यु का समाचार मिला तो वह पैरिस में था। फेदया भी अब लगभग १२ वर्ष का हो गया था और फिर पैतृक संपत्ति का भी कुछ करना था। यह सब सोच कर ईवान घर लौट आया।

ईवान जब घर वापिस लौटा तो उसके सिर पर अंग्रेजी का भूत सवार था। उसके छोटे छोटे कटे बालों से, अकड़ी हुई कमीज, विशेष प्रकार के कोट, उस के मुख के कठोर भाव से, उसके बोल चाल के रूखे तरीके से, दांत पीस कर बोलने से,

उसकी बात चीत से जो कि सदा राजनीतिक विषयों पर ही होती, सभी चीजों से अंग्रेजी रिवाजों की गन्ध आती। रहना सहना कहां उसका खाना पीना भी वैसा ही हो गया। पर अंग्रेजी चीजों का पुजारी बनने के साथ साथ वह बड़ा देश भक्त भी बन गया। चाहे उसमें रूसीयों वाली अब एक भी बात न थी और वह रूसी भाषा भी अच्छी तरह न बोलता था फिर भी वह अपने को बड़ा देश भक्त समझता। बात में वह अपने देश के उलटे रिवाजों की निन्दा करता। उसने देश में फैली कुरीतियों को दूर करने के लिये कई योजनाएं बनाई।

अपनी बहिन ग्लैफीरा को मिलते ही उसने कहा कि अब जमीदारी में बहुत कुछ अदला बदली करनी होगी और सारा काम नये तरीके से किया जायेगा ग्लैफीरा बिचारी ने कहा तो कुछ नहीं पर वह सोच में पड़ गई कि अब मेरा क्या बनेगा। जब दोनों बहिन भाई गांव लौट तो ग्लैफीरा शीघ्र ही पहिचान गई कि यह सब परिवर्तन ऊपरी ही हैं। इनसे उसे तनिक भी असर न पड़ेगा घर में से कई पुराने बूढ़े नौकर निकाले गये। एक दो वृद्धाएं जो ऐसे ही रहती थीं और दूसरे कई लोग जो आप ही अतिथि बन बैठे थे सब को निकाल दिया गया। मास्को से घर के लिए बहुत सा नया सामान मंगवाया गया। नई घंटियां, हाथ धोने के बर्तन, पीकदान आदि मंगवाये गये। प्रातःकाल का भोजन नये तरीके से परोसा जाने लगा। घर की बनी वड़का स्थान विदेशी शराबों ने ले लिया। नौकरों के लिए नई वर्दियां बनीं पर इन सब बातों से ग्लैफीरा के अधिकारों में कुछ फरक न पड़ा। अभी भी घर की असली मालकिन वही रही। सब लेन देन वही करती। ईवान के एक चहेते नौकर ने एक बार उसके सामने हूँ हां की तो

मालिक की कृपा दृष्टि होते हुए भी उसे नौकरी से निकाल दिया गया।

जमींदारी भी वैसे ही चलती रही। ग्लैफीरा की यहां भी खूब चलती। ईवान की सब कुछ बदल देने की धमकियां खोखली ही निकलीं। वह कहता था कि मैं इस गड़बड़ में एक नया जीवन डाल दूंगा पर सिवाय इसके कि उसने छोटी छोटी कोई दो चार चीज़ें बदल दीं और सब वैसा ही रहा। वास्तव में देश भक्त ईवान को अपने देश वासियों से चिढ़ सी थी। वह जहां तक हो सकता उनसे परे ही रहता। हां एक बात उसने पूरी तरह बदल दी और वह थी फेद्या की शिक्षा। और सब कुछ छोड़ उसने अपना पूरा ध्यान इधर लगा दिया।

ईवान जितनी देर बाहर विदेश रहा, फेद्या अधिकतर ग्लैफीरा के हाथों में ही रहा। जब उसकी माँ का देहान्त हुआ तो वह अभी केवल आठ वर्ष का ही था। चाहे वह माँ को कभी कभी मिलता था फिर भी उसे माँ से बहुत प्रेम था। माँ का भोला, पीला सा मुख, बड़ी-बड़ी उदास आँखें और प्यार भरी चितवन सदा के लिए उसके हृदय पर अंकित हो गई। वह बहुत छोटा था फिर भी वह अनुभव करता कि माँ के और उसके बीच कोई दीवार है जिसे माँ चाहते हुए भी लांघ नहीं सकती। यह दीवार क्यों है, और कैसी है यह वह नहीं समझ पाता। माँ से उसे बहुत प्यार था। पिता से वह दूर ही भागता और पिता ने भी उसे कभी प्यार नहीं किया। दादा पोयटोर कभी-कभी दुलारता, सिर पर हाथ फेरता और हाथ चूमने देता पर वह भी फेद्या को डरपोक और बुद्धू ही समझता।

मलानया की मृत्यु के बाद फेदया बिल्कुल ही ग्लैफीरा के अधीन हो गया। ग्लैफीरा से वह बहुत डरता था। उसकी चमकती हुई आँखों और तीखी आवाज से वह कांप उठता। उसके सामने बिचारे का मुँह ही बन्द हो जाता। यदि वह कुर्सी में बैठा २ थोड़ा हिल जाता तो ग्लैफीरा एक दम खाने को पड़ती "आराम से नहीं बैठ सकते तुम।"

रविवार को गिरजे से लौटने के बाद उसे खेलने के लिए बड़ी सी पुस्तक दी जाती जिसमें अनेकों अजीब-अजीब चित्र थे। फेदया बिचारा इन चित्रों को समझ न पाता पर यूँही घन्टों देखता रहता यहाँ तक कि अन्त में वह उनकी एक-एक रेखा से परिचित हो गया। इन चित्रों को देख-देख कर बालक फेदया के हृदय में अजीब–अजीब विचार उठते और वह उन्हीं में खोया रहता। यही उसकी खेलकूद और यही मनोरंजन था। जब फेदया कुछ बड़ा हुआ तो ग्लैफीरा ने भाषा और संगीत सिखाने के लिए एक बूढ़ी स्वीड अध्यापिका रखी थी। यह बुढ़िया पढ़ाना लिखाना तो कम ही जानतीं थी हाँ आचार चटनियाँ बनाने में बड़ी निपुण थी। इस अध्यापिका, बूआ ग्लैफीरा और एक वृद्धा दासी के संग फेदया ने लगभग चार वर्ष काटे। घन्टों वह उन के पास एक कोने में चित्रों की वह पुस्तक लेकर बैठा रहता। उस नीची छत वाले अन्धेरे कमरे में अजीब सी गन्ध आती। एक कोने में छोटा सा दीपक टिमटिमाता रहता, दीवार के पीछे कहीं चूहे के कूदने की आवाज आती रहती, छत के एक कोने से टिड्डियों की आवाज आती, दीवार पर टंगी घड़ी निरंतर टिक-टिक टिक-टिक करती और तीनों वृद्धायें वहाँ चुपचाप बैठी अपनी सलाइयाँ तेज़-तेज़ बुनती रहतीं। उनके हिलते हुए हाथों की पर-

छाईं से दीवार पर विचित्र आकृतियाँ सी नाचने लगतीं। ऐसे अन्धेरे कमरे में रहते-रहते फेदया के मन में भी अन्धेरा सा छा गया। वह बिल्कुल पोला और मोटा सा हो गया। वह सदा घबराया हुआ बिल्कुल किसानों के बच्चों सा लगता। यदि उसे खुली हवा में खेलने दिया जाता तो शायद उसके गालों पर भी रंग आ जाता। वह पढ़ने में काफी अच्छा था, पर स्वभाव से जरा सुस्त था। न वह कभी रोता न हंसता पर कभी इतना ढीठ हो जाता कि किसी का कहा न मानता।

फेदया को अपने आस पास वालों में से किसी से भी प्रेम न था। फिर भला वह कैसे पनपता। जिस बालक के जीवन में प्रेम न हो वहाँ रह ही क्या जाता है। जब ईवान घर लौटा तो ऐसा था फेदया।

ईवान ने आते ही कहा कि सब से पहिले मैं इसे 'आदमी' बनाना चाहता हूँ पर आदमी भी ऐसा वैसा नहीं, सच्चे अर्थों में बलवान और साहसी। उसने आते ही फेदया के पुराने कपड़े फेंक उसे नये ढंग के स्काच लोगों से ढीले-ढाले कपड़े पहना दिये। घुटने अब वह नंगे रखता। बूढ़ी स्वीड अध्यापिका के बदले अब एक नया स्विस अध्यापक आ गया जो कि व्यायाम और कुश्ती आदि में बड़ा होशियार था। संगीत की शिक्षा अब बिल्कुल बंद करवा दी गई। "भला यह भी कोई मरदों के सीखने की चीज है" ईवान ने कहा और उसके बदले इतिहास, हिसाब, अंतर-राष्ट्रीय कानून और लकड़ी आदि का काम शुरू हो गया। प्रातः चार बजे, भविष्य के "आदमी" को बाहर दौड़ना पड़ता। दिन में एक बार उसे बिल्कुल साधारण सा भोजन दिया जाता। घुड़-सवारी, तीर चलाना सब उसे सिखाया गया और रोज शाम को

वह एक डायरी में सारे दिन की बातें लिखता। पिता भी कभी कभी उसकी डायरी में कुछ शिक्षायें लिख देता। फेद्या बिचारा पिता के सम्मुख बैठ नहीं सकता था। इस "नये क्रम" ने उसे घबरा दिया। उसके मस्तिष्क में एक विचित्र सी हलचल हो गई। उसकी बुद्धि मानों दब सी गई। हाँ उसके शरीर को काफी लाभ हुआ। पहिले पहिले तो वह बीमार पड़ गया पर फिर धीरे-धीरे उसका स्वास्थ्य सुधरने लगा और कुछ ही समय में वह खूब हृष्ट-पुष्ट हो गया। ईवान उसे देख कर बहुत प्रसन्न होता और बड़े अभिमान से कहता कि यह मेरी मेहनत का फल है। जब फेद्या १६ वर्ष का हुआ तो ईवान ने ठीक समय समझ कर उसके हृदय में स्त्रियों के प्रति घृणा का भाव डालना शुरू किया। यौवन की प्रथम सीढ़ी पर खड़े, उमंगों से भरे फेद्या के हृदय में ईवान ने स्त्रियों के प्रति उपेक्षा और उदासीनता की भावनायें भर दीं।

यूँ ही समय बीतता गया। ईवान बहुत सा समय तो लैवरिकी अपनी जमींदारी पर, ही काटता। पर सर्दियों में वह प्रायः मास्को चला जाता। वहां वह किसी होटल आदि में रहता, क्लबों में जाता और अपने विचार इधर उधर फैलाता। अंग्रेज़ीपन का भूत अभी भी उस पर सवार था। अब उस के मित्र एक एक कर उसका साथ छोड़ने लगे। १८२५ में लैवरिकी में वह सब कुछ छोड़ आ कर बस गया। वर्ष भर के अन्दर ही उसका स्वास्थ्य गिरने लगा। वह बीमार रहने लगा उसकी सारी नास्तिकता छूट गई और वह भी अन्य लोगों की तरह गिरजे जा कर पूजा पाठ करने लगा। विदेशी रीति रिवाजों का स्थान फिर पुराने रूसी तरीकों ने ले लिया।

फिर वही दो बजे भोजन और एक बजे सोना शुरू हो गया। स्वतन्त्र विचारों वाला ईवान अब गवर्नर तो गवर्नर पुलीस इंसपैक्टरों से भी डरने लगा उसका सारा पौरुष मानों समाप्त हो गया। ज़रा सी बात से वह चिढ़ जाता और तनिक सी कठिनाई से घबरा उठता। ग्लैफिरा फिर से घर की मालकिन बन गई। वे लोग जिन्हें घर में आते ही ईवान ने निकाल दिया था अब फिर लौटने लगे। ईवान का किया कराया सब मिट्टी में मिल गया।

इन सब बातों का युवक फेद्या के हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसने आगे ही देखा था कि ईवान के कहने और करने में बहुत अन्तर है। बातों से उदार और दयालु लगने वाला ईवान वास्तव में बड़ा क्रूर था। पर यह सब जानते हुए भी उसे स्वप्न में भी कभी विचार न था कि ईवान इतना बदल जायगा।

फेद्या यूनिवर्सिटी जाने की तैय्यारी कर रहा था जब एक और दुर्घटना हो गई। एक ही दिन में ईवान बिल्कुल अंधा हो गया। रूसी डाक्टरों पर उसे विश्वास न था इसलिए उसने विदेश जाना चाहा पर सरकार ने जाने की आज्ञा न दी। तीन वर्ष फेद्या को साथ ले वह एक जगह से दूसरी जगह कई डाक्टरों के पास भटकता फिरा पर तनिक भी लाभ न हुआ। उल्टे उसका स्वभाव और भी कड़वा हो गया। लौट कर अब वह फिर लैवरिकी आ गये। ईवान अब बिल्कुल बालकों सा चिड़चिड़ा और हठी हो गया। किसी की कोई भी बात उसे न भाती। सब घर वालों के लिए मानो मुसीबत आ गई। केवल भोजन के समय ईवान ज़रा चुप हो जाता और भोजन वह इतना अधिक

खाता जितना कभी जीवन भर न खाया था। एक क्षण भर भी वह अकेला न रहता। किसी न किसी को उसके पास बैठना पड़ता। घर वाले उसका जी बहलाने को ईधर उधर की बातें सुनाते तो व फिर चिढ़ जाता। "यह क्या बक बक है" वह खीझ के कहता।

पर ग्लैफीरा के लिए सब से अधिक कठिनाई थी। उसके बिना वह एक क्षण भी न रहता। रोगी का एक एक आदेश और इच्छा ग्लैफीरा पूरी करती। कई बार वह खीझ उठती, अनेक बार तंग आ जाती पर फिर भी चुपचाप बड़ी सहन शीलता से वह सब भुगतती रही। ऐसे ही दो वर्ष बीत गये। एक दिन बाहिर चबूतरे पर बैठे बैठे ईवान के प्राण पखेरु उड़ गये। "ओ बेवकूफ कितनी देर है अभी भोजन में......" वह कह रहा था। अभी वाक्य पूरा भी न हो पाया था कि वह सदा के लिए चुप हो गया। ग्लैफीरा ने पास खड़े नौकर के हाथ से खाने की प्लेट छीन ली। धीरे से उसने हाथ जोड़े और ईवान की आत्मा की शन्ति के लिए प्रार्थना करने लगी। फेदया भी वहीं खड़ा था। उसने सब देखा और चुपचाप छज्जे पर खड़ा बड़ी देर तक बाहिर हरे भरे बाग की ओर देखता रहा। वह अब २३ वर्ष का था। कितनी जल्दी बीत गये हैं येह २३ वर्ष वह सोचता रहा। अब उसके लिए नया जीवन प्रारम्भ होगा।

पिता का अन्तिम संस्कार कर और घर की देख भाल का काम ग्लैफीरा के हाथों सौंप, युवक लैवरिटस्की अब मास्को चला

गया। मास्को जाने की उसे बहुत समय से बड़ी प्रबल इच्छा थी। वह जानता था कि उसकी शिक्षा में बड़ी भारी त्रुटियां रह गई हैं और वह उन्हें दूर करना चाहता था। इन पांच वर्षों में बैठे बैठे उसने बहुत अध्ययन किया था और थोड़ा बहुत इधर उधर घूमा भी था। कई विषयों में तो उसका ज्ञान बड़े बड़े विद्वानों और पंडितों को लजा देता पर कइयों में वह निरा बच्चा ही था। वह जानता था कि वह अन्य लोगों से कितना भिन्न है। पिता के सनकी विचारों ने और वैसी ही शिक्षा ने लेवरिटस्की के लिए कई समस्याएँ पैदा कर दी थीं। कई वर्षों तक वह बिना सोचे समझे पिता कि आज्ञा मानता रहा। जब उसे कुछ होश आई तो काम बिगड़ चुका था। अब उसके लिए बदलना कठिन था। वह लोगों के साथ ज्यादा हिल मिल ना सकता। २३ वर्ष की आयु हो चुकी थी। हृदय उसका प्रेम का प्यासा था पर अभी उसने कभी किसी लड़की की ओर जी भर देखा न था। उसकी ठोस बुद्धि, विचार, सुस्त स्वाभाव और ढीठ आकृति का खयाल कर, ईवान को शीघ्र ही जीवन संग्राम में छोड़ देना चाहिए था पर उसने उल्टा ही फेद्या को एकान्तवास में रखा। अब उसका फल यह था कि लोगों के बीच रहता हुआ भी लैवरिटस्की अकेला ही रहता। इस आयु पर फिर वह विद्यार्थीयों से कपड़े पहिनने लगा। लड़के उस पर हंसते पर वह इस हंसी की तनिक भी परवाह न करता। इतने वर्षों के एकान्त वास ने उसे ऐसा कठोर सा बना दिया था कि वह इन बातों की ओर ध्यान ही न करता। अब उसने गणित और विज्ञान सीखना शुरू किया। साथ के विद्यार्थियों को यह सब अजीब सा लगता पर वे क्या जानते थे कि यह हृष्ट, दाढ़ी मूँछ

वाला आदमी जो प्रति दिन नियम से अपनी गाड़ी में बैठ के आता है, हृदय से बालकों सा ही है। वे उससे कभी भी बातचीत न करते और न ही लैवरिटस्की ने उनसे मेल मिलाप रखना चाहा। दो वर्षों में बस केवल एक ही विद्यार्थी से उस की जान पहिचान हुई। यह युवक मिखैलोविच उसे लैटिन पढ़ाता था और स्वयं कवि था। लैवरिटस्की के साथ उसकी बहुत मित्रता हो गई। इस मित्रता ने लैवरिटस्की के जीवन में बड़ा परिवर्तन किया।

एक दिन थिएटर में, जहाँ वह प्रायः जाया ही करता था उसने उच्च श्रेणी के एक 'बाक्स' (बैठने का कमरा) में एक लड़की देखी। यूं तो किसी भी स्त्री को देख उसके हृदय में हलचल सी उठ जाती थी पर इस को देख कर तो मानो उस का हृदय ही काबू से बाहिर हो गया। 'बाक्स' के मखमली दीवार पर कोहनी टिकाये लड़की बिल्कुल निश्चल, ध्यान मग्न बैठी थी। उसके एक एक अंग से यौवन फूट रहा था। उसका गोल भरा हुआ मुख, तिरछी भौंहों के नीचे बड़ी बड़ी चमकती हुई आँखें, सुन्दर होंठों की मोहक मुसकान और गोल गोल बाँहें लैवरिटस्की को बड़ी आकर्षक लगीं। उसके साथ ही अधेड़ उमर की कोई स्त्री नीचे गले वाला फ्राक और बड़ी सी टोपी पहिने बड़े ध्यान से नाटक देख रही थी। पीछे अंधकार में से वृद्ध पुरुष की आकृति दिखाई दे रही थी। उसके खुले से कोट, बड़ी टोपी, मुख पर की व्यक्त गम्भीरता, आँखों की संशक दृष्टि छोटे माथे और बड़ी बड़ी रंगी हुई मूछों से प्रत्यक्ष था कि वह कोई रिटायर्ड जनरल था।

लैवरिटस्की एक टक उस सुन्दरी को निहार रहा था। तभी एक दम 'बाक्स' का द्वार खुला और मिखैलोविच अन्दर आया।

लैवरिटस्की बिल्कुल हैरान हो गया। उसका एक मात्र मात्र मिखै-लोविच इस सुन्दरी को, जिसे देखते ही वह पागल हो गया था, जानता था। उसने देखा मिखैलोविच उनसे ऐसे बात चीत कर रहा था मानों उनके परिवार का ही हो। नाटक से अब उसका ध्यान उठ गया और वह घड़ी घड़ी उधर ही देखने लगा। एक बार जब वह वैसे ही देख रहा था तो युवती की भी दृष्टि उधर आ पड़ी। उस रात लैवरिटस्की के स्वप्नों में वही दो बड़ी-बड़ी आँखें घूमती रहीं। जो कृत्रिम बाँध उसके चारों ओर बाँधे गये थे, सब टूट गये। अगले ही दिन वह मिखैलोविच से मिलने गया और उससे लड़की का सब पता निकाला। युवती का नाम बारबारा कोरोबीना था और उसके साथ उसके माता पिता थे—मिखैलोविच उन्हें एक दो वर्ष पहिले किसी मित्र के यहाँ मिला था। मिखलोविच ने बारबारा की बहुत प्रसंशा की "ऐसी सुन्दरता और ऐसी बुद्धि मैंने कहीं नहीं देखी। पूरी कलाकार है और उसके साथ साथ है भी बहुत दयालु और उदार चित्त"। लैवरिटस्की ने उनसे मिलने की इच्छा प्रकट की तो मिखैलोविच कहने लगा कि "इसमें तो तनिक भी कठिनाई न होगी क्योंकि वह तो मानों उनके परिवार का ही सदस्य है। जनरल स्वयं बहुत सीधे सादे हैं और बारबारा की माँ तो पूरी बुद्धू ही है। लैवरिटस्की यह सुन बहुत प्रसन्न हुआ। वह धीरे से मुस्कराया और कुछ गुनगुनाता हुआ घर चला गया। पाँच दिन तक वह अपने मन की लज्जा और घबराहट पर विजय पाने की चेष्टा करता रहा और छठे दिन नये बढ़िया वस्त्र पहिन वह मिखैलो-विच के यहाँ पहुंच गया। मिखैलोविच ने बाल जरा सीधे किये और लैवरिटस्की को साथ ले कर कोरोबिन के घर चल पड़ा।

बारबारा का पिता पावले कोरोबिन फौज का रिटायर्ड जनरल था। उसने लगभग सारी आयु पीटर्सबर्ग में ही काटी थी। वह बहुत अच्छा सैनिक था और नाचने में भी बड़ा प्रवीण था। निर्धन होने के कारण उसे एक दो छोटे-मोटे जरनलों के संग ही काम करना पड़ा। उन्हीं में से एक की पुत्री के संग उसने विवाह करवा लिया। कोरोबिन की स्त्री, धनी पिता की बेटी थी। वह दहेज में लगभग २५,००० रुपया लाई। २० वर्षों तक धीरे-धीरे उन्नति करते-करते आखिर कोरोबिन भी जनरल के पद पर पहुंच गया। "अब मौका मिला है कुछ धन संचय करने का," उसने सोचा। कोरोबिन ने कुछ और ही सोचा था पर विधाता ने कुछ और ही चाहा। उसने पैसा उड़ाने का जो उपाय सोचा वह था तो अच्छा पर अपनी ही गल्ती से वह पकड़ा गया और उसे अपमानित कर जनरल के पद से हटा दिया गया। दो वर्ष तक वह पीटर्सबर्ग में इस आशा से भटकता रहा कि शायद कुछ काम बन जाये। पुत्री बारबारा अब कालिज की शिक्षा समाप्त कर चुकी थी। वैसे भी वहाँ खर्च बहुत होता था इसलिए इच्छा न होते हुए भी उसे पीटर्सबर्ग छोड़ मास्को जाना पड़ा। मास्को सस्ता था। यहाँ पर अब कोरोबिन एक छोटा सा मकान किराये पर लेकर अपनी २७५० रुपये की वार्षिक आय पर निर्वाह कर रहा था। आने के कुछ ही दिन बाद वह मास्को के कुलीन घरानों में आने जाने लगा था। मास्को के क्लबों में, घरों में जहाँ भी कोई नाच या भोज आदि होता वहाँ पावेल कोरोबिन

अवश्य ही उपस्थित होता—पावेल ने यहाँ के संभ्रान्त वर्गों में अपने लिये स्थान बना लिया। वह प्रायः बहुत कम बोलता। जब बोलता भी तो अपने से नीचे वालों के साथ बड़े रोब से और अपने उच्च पदवी वालों से बड़ी नम्रता से। ताश वह खूब अच्छी खेलता। घर पर तो वह थोड़ा ही खाता, हाँ बाहिर कहीं भोज आदि हो तो खूब पेटभर लेता।

उसकी स्त्री कालियोपा कारलोवना बिचारी बड़ी सीधी थी। वह सदा कुछ सहमी हुई, घबराई हुई ही रहती। उसके वस्त्र सदा रेशमी, तंग और कसे हुए से होते। वह बड़ी सी टोपी और हल्के खोखले से गहने पहिने रहती। उनकी एकमात्र पुत्री बारबारा ने १७ वर्ष की अवस्था में ही कालिज की शिक्षा समाप्त कर ली। वह कालिज में यदि सब से सुन्दर नहीं तो सब से होशियार विद्यार्थियों में से थी। वह बहुत अच्छा गाती थी और गाने के लिए उसे एक पदक भी मिला हुआ था। जब लैवरिटस्की उसे मिला तो वह केवल १९ वर्ष की थी।

बहुत घबराते और झिझकते हुए, लैवरिटस्की ने कोरोबिन के घर प्रवेश किया। पर उसकी घबराहट बड़ी जल्दी ही दूर हो गई। जनरल बड़ा प्रसन्नमुख और मिलनसार निकला। यूँ तो रूसियों का स्वभाव प्रायः ऐसा ही होता है पर जिन लोगों को जीवन में ठोकरें लगी हों वह कुछ अधिक ही मिष्टभाषी होते हैं। यही हाल जनरल का था। जनरल की पत्नी बिचारी अधिक बोलती ही न थी। वह लैवरिटस्की के आने के थोड़ी ही देर बाद

एक कोने में जा चुपाचाप बैठ गई। बाकी रही बारबारा। उसमें तो इतना संयम और शान्ति थी कि उसके सन्मुख कोई घबरा ही न सकता था। उसका सुन्दर शरीर, हँसती हुई आँखें, फूल सा खिला मुख, थोड़े झुके हुए गोल-गोल कंधे, मांसल बाहें, धीमी मतवाली चाल और मीठी वाणी सब में कुछ ऐसा आकर्षण था कि दर्शक के हृदय में लज्जा और घबराहट का भाव तो कभी न आता। हाँ अन्य भावनाएं आवश्य उठती। लैवरिटस्की ने पिछले नाटक के विषय में बातचीत करनी आरम्भ की। बिना घबराये बारबारा बड़ी चतुराई से नाटक की आलोचना करने लगी। प्रधान नायक की उसने बड़ी प्रशंसा की।

मिखैलोविच ने संगीत का नाम लिया तो बारबारा एकदम उठ पियानों के पास जा बैठी और उन दिनों के प्रचलित, शोपिन के गीत बजाने लगी।

जब भोजन का समय आया तो लैवरिटस्की घर जाने को उठा पर जनरल ने उसे न जाने दिया। उसे वहीं भोजन करने पर विवश किया। भोजन के साथ बहुत बढ़िया शराब भी थी जो विशेष रूप से जनरल का नौकर भाग के किसी साथ वाले होटल से लाया था।

जब लैवरिटस्की घर पहुंचा तो बिना कपड़े बदले बहुत देर तक यूँही बैठा रहा—आज पहिली बार उसने अनुभव किया कि जीवन कितना मधुर हो सकता है—इतने वर्षों की शिक्षा आज उसे बिल्कुल निर्मूल लगने लगी। अब उसकी एक ही अभिलाषा थी। वह प्रेम मांगता था। किसी सुन्दरी स्त्री का मधुर प्रेम, बारबारा का प्रेम। उस दिन से उसने कोरोबिन के यहाँ खूब आना जाना शुरू कर दिया। छः महीने बाद जब उसने बारबारा से

विवाह का प्रस्ताव किया तो वह एकदम मान गई। लैवरिटस्की के पहिली बार आने के बाद ही जनरल ने उसके धन सम्पत्ति के विषय में पूरा पता निकाल लिया था। इन छः महीनों में, जहाँ लैवरिटस्की प्रेम में उन्मत्त सा हो गया वहाँ बारबारा वैसी ही शान्त और गम्भीर रही। हृदय में वह जानती थी कि लैवरिटस्की बहुत धनी है। उसकी माता कालियोपा कारलोवना का तो कहना ही क्या। इसी खुशी में उसने अपने लिए नये वस्त्र बनवाये और एक नई टोपी ली।

विवाह का प्रस्ताव मंजूर तो हो गया पर उसके साथ कुछ शर्तें भी थीं। लैवरिटस्की को कालिज और पढ़ाई छोड़नी पड़ी। भला कहीं कोई लड़की विद्यार्थी से विवाह थोड़े ही करवाती है और फिर कोई इतना धनी आदमी इस आयु में लड़कों के साथ पढ़ता अच्छा तो नहीं लगता। दूसरे बारबारा ने विवाह की चीजें, घर का आवश्यक सामान आदि सब स्वयं ही खरीदना चाहा यहाँ तक कि दूल्हे का दुल्हिन को उपहार भी उसने स्वयं ही पसंद किया। वह बड़ी चालाक थी और उसने अपने आराम का सब सामान इकट्ठा कर लिया। भोला लैवरिटस्की इन बातों से बड़ा प्रभावित होता। "कितनी बुद्धिमती और विचारशीला है यह बारबारा" वह कहने लगा जब उसने देखा कि विवाह के बाद लैवरिकी जाने के लिए एक बहुत बढ़िया घोड़ा गाड़ी भी खरीदी गयी है। घर को बारबारा ने कितनी सुन्दर-सुन्दर

वस्तुओं से भर दिया है वह सोचता। प्रातः उठ वह स्वयं बड़े सुन्दर प्यालों में लैवरिटस्की को काफी बना के देती।

लैवरिटस्की के मन की दशा कुछ ऐसी थी कि उसे कुछ सुध-बुध ही न थी। वह बहुत प्रसन्न था। पत्नी की सुन्दरता और बुद्धिमानी देख वह फूला न समाता। "इस सुन्दरी के संग जीवन कितना सुन्दर होगा" वह प्रायः सोचा करता। बारबारा वास्तव में थी भी बहुत चतुर। जब वह गर्मियो के मध्य में लैवरिकी पहुंची तो घर की दशा बहुत अच्छी न थी। घर मैला सा हो रहा था, पुराने बूढ़े नौकर इधर-उधर फिरते। वह चाहती तो सब बदल डालती पर उसने पति को भी इसके विषय में कुछ न कहा और न ही कोई परिवर्तन किया। छोटी बड़ी असुविधाओं को वह हँसी में उड़ा देती। वास्तव में इस घर में अधिक समय रहने की उसकी मरज़ी ही न थी।

उन्हीं दिनों मारफा टिमोफीना, लैवरिटस्की और उसकी नवविवाहिता पत्नी को मिलने लैवरिकी आई। बारबारा ने, मारफा से मैत्री करनी चाही पर मारफा को वह ज़रा ना भाई और इसी लिए मारफा शीघ्र ही लौट गई। नई मालकिन की ग्लैफीरा से भी न बनी। बारबारा का पिता वृद्ध जनरल यदि ग्लैफीरा की जगह न लेना चाहता तो शायद बारबारा उसे कुछ भी न कहती। पर जनरल वहाँ आना चाहता था। "भला इतने निकट के संबंधी की संपत्ति की देख भाल करने में क्या बुरा है"। वह कहता। वैसे वह किसी अनजान का भी काम करने को तैय्यार था।

बारबारा ने बड़ी चतुराई से सब बात बनाई। देखने में तो लगता कि नवविवाहिता बारबारा अपने पति के प्रेम में, नये घर

में, और अपने संगीत आदि में इतनी मग्न है कि उसे और किसी चीज का ध्यान ही नहीं पर उसने अपनी चालाकी से कुछ ऐसी स्थिति उत्पन्न कर दी कि एक दिन ग्लैफीरा ने स्वयं लैवरिटस्की के कमरे में आ गुस्से से चाबियों का गुच्छा फेंक दिया और कहने लगी कि अब मुझ से यह सब नहीं संभाला जाता। उसे आशा थी कि लैवरिटस्की कुछ हूँ हाँ अवश्य करेगा पर उसके तो मानों पहिले ही कान भरे थे। "बहुत अच्छा" वह बोला। ग्लैफीरा आग बगूला हो गई। "तो बात यहाँ तक बढ़ गई है। अच्छा मैं तो जाती हूँ पर यह तुम्हें बता दूँ कि तुम्हारा भी जीवन भर कोई ठिकाना नहीं बनेगा। तुम भी सारी उमर इधर उधर भटकते ही रहोगे"। उसी दिन ग्लैफिरा अपने गाँव चली गई और एक सप्ताह के भीतर ही जनरल कोरोबिन बड़ा गम्भीर सा मुँह बनाये संपत्ति की देख भाल के लिए आ गया।

सितम्बर में बारबारा पति को संग ले पीटर्सबर्ग चली गई— वहाँ उन्होंने दो वर्ष काटे। गर्मियों में वह कहीं बाहर चले जाते। पीटर्सबर्ग में उन्होंने एक छोटा सा, सुन्दर हवादार घर ले लिया। कुछ ही समय में वहाँ के मध्य और उच्च वर्गों में उनकी काफी मित्रता हो गई। प्राय: रोज़ ही उनके घर नृत्य, संगीत या भोज आदि होने लगा। जैसे दीपक पतंगों को आकर्षित करता है वैसे ही बारबारा लोगों को अपनी ओर खींचती। ऐसा जीवन फेद्या को तनिक भी न भाता था। पत्नी ने उसे कोई नौकरी आदि कर लेने की सलाह दी पर लैवरिटस्की को यह भी अच्छा नहीं लगता था और पत्नी की प्रसन्नता में प्रसन्न वह भी वहीं पीटर्सबर्ग रहता रहा। उसने शीघ्र ही देख लिया कि वह यदि एकान्त

रहना चाहे तो वह भी कठिन नहीं। बारबारा ने उसके के लिए बहुत सुन्दर छोटा सा कमरा अलग कर दिया। फेद्या अब प्रसन्न था। फिर से वह अपनी अधूरी शिक्षा पूरी करने में लग गया। सुबह-सुबह ही उसकी चौड़ी पीठ पढ़ने की मेज पर झुक जाती और सारा दिन उसका स्वस्थ लाल चेहरा किसी शब्दकोष या पुस्तक के पीछे छिपा रहता। प्रातः काल वह अधिकतर पढ़ने लिखने में ही व्यतीत करता। फिर खूब पेट भर भोजन करता। बारबारा बड़ी चतुर गृह स्वामिनी थी। उसे सदा बढ़िया भोजन ही देती। शाम को वह एक दूसरे ही संसार में पहुँच जाता। यह यौवन, सौंदर्य, संगीत और हंसी खुशी का संसार था और इसकी केन्द्र उसकी प्रिय पत्नी बारबारा ही थी। बारबारा ने थोड़े समय बाद एक पुत्र को जन्म दिया। बालक शीघ्र ही चल बसा। बारबारा का स्वास्थ्य गिर गया और डाक्टरों के कहने पर लैवरिट-स्की उसे विदेश घुमाने ले गया। गर्मियाँ उन्होंने स्विटज़रलैंड और जर्मनी में व्यतीत कीं और सर्दियों में पैरिस चले गये। पैरिस पहुंचते ही बारबारा खिल उठी। पीटर्सबर्ग की तरह यहाँ भी उसने थोड़े समय में अपने लिए छोटा सा घोंसला बना लिया। एक बहुत फेशनेबल मुहल्ले में उन्होंने छोटा सा पर सुन्दर घर ले लिया। लैवरिटस्की के लिए वहाँ की प्रथानुसार उसने नये वस्त्र बनवा दिये। एक कुशल दासी और एक चतुर दरबान नियुक्त कर दिया - एक बढ़िया सा पियानो खरीद लिया। कुछ ही दिनों में वह स्वयं बिल्कुल पैरिस की रहने वाली लगने लगी। उसकी चाल ढाल, पहिरावा, बोल चाल सभी वैसे हो गये। शीघ्र ही उसने यहाँ भी मित्र मण्डली बना ली। शुरू शुरू में तो केवल रूसी ही वहाँ आया करते पर धीरे धीरे फ्रैंच

लोग भी आने लगे। खूब बने ठने शौकीन, ऊपर से शिष्ट लगने वाले, बातूनी अविवाहित पुरूष वहाँ आने लगे। वह वहाँ बैठ गप्पें हाँकते, खूब हंसते खेलते और अपने और मित्रों को भी ले आते। ऐसे ही मैडम लैवरिटस्की का नाम पैरिस में प्रसिद्ध हो गया। उन दिनों आजकल की तरह समाचार पत्रों के अनगिनत सम्वाद दाता तो नहीं होते थे पर एक मिस्टर जूल्ज़ बारबारा के यहाँ आने लगे। यह मिस्टर जूल्ज़ देखने में बड़ा भद्दा और कुरूप था। वह स्वभाव से बड़ा कपटी, छली, और ढीठ सा था। बारबारा को वह तनिक भी न भाता पर क्योंकि वह किसी अखबार का संवाद दाता था, बारबारा उसकी खूब आवभगत करती। शीघ्र ही अखबारों में बारबारा का नाम आने लगा। मैडम लैवरिटस्की को कई नाम दिये गये। उसकी प्रशंसा के पुल बंध गये। कई पाठकों ने इस मैडम लैवरिटस्की के विषय में पढ़ा कि वह कितना अच्छा नाचती है, कैसा अच्छा गाती है और कितनी होशियार है, बिल्कुल फ्रेंच स्त्रियों सी है। वास्तव में बारबारा नाचती भी खूब थी—बस देखने वाले का हृदय ही मोह लेती। बारबारा अब काफी प्रसिद्ध हो गई थी और वह बहुत प्रसन्न थी। चाहे उस समय पैरिस के थियेटर में कोई भी नामी कलाकार था फिर भी बारबारा नियम से थियेटर आदि जाती। वहाँ के संगीत और नाटकों से उसका खूब परिचय हो गया था। वह समयानुसार अब उचित रूप से उनकी आलोचना किया करती। एक बड़ा प्रसिद्ध गायक दो बार उसके घर भी आया..........ऐसी ही बातों में सारी सर्दियाँ बीत गईं। फेदया इस प्रकार के जीवन में अधिक भाग न ले सका। इस चौबीस घन्टे की चहल-पहल से वह उकता सा

गया। उसे यह सब बिल्कुल फ़ज़ूल और नीरस सा लगता। वह बड़े ध्यान से समाचार पढ़ता, वहाँ के विद्यालय में लैक्चर आदि सुनने भी जाता, राजनीतिक विषयों में ध्यान लगाता। उसने खेती बाड़ी के विषय में एक फ्रैंच पुस्तक का रूसी में अनुवाद करना शुरू कर दिया। समय व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए, वह सोचता "यह सब मेरे काम आयेगा जब मैं घर वापिस लौटूँगा तो।" "अब घर वापिस जा कुछ काम करना चाहिए।" बहुत बार उसने सोचा। हाँ, क्या काम करना चाहिए यह उसने कभी न सोचा। और जब वह पैरिस से बेडन-बेडन जाने की सोच रहे थे तो एक घटना ने सब उलट-पुलट कर दिया।

बारबारा की अनुपस्थिति में एक दिन फेदया उसके कमरे में गया तो उसने फर्श पर गिरा अच्छी तरह तह किया हुआ एक कागज़ का टुकड़ा देखा। बिना कुछ सोचे उसने कागज़ उठा लिया। फ्रैंच में लिखा था :—

मेरी बहुत प्यारी बैटसी। मैं तुम्हें बारबारा नहीं बुला सकता उस दिन मैं निष्फल ही सड़क के मोड़ पर तुम्हारी प्रतीक्षा करता रहा। कल दोपहर डेढ़ बजे हमारे यहां आना। तुम्हारा बिचारा सीधा, भोला मोटा पति तो उस समय अपनी पुस्तकों में मगन होगा। जब तुम आओगी तो वही गीत गायेंगे, वही जो तुमने मुझे सिखाया था, वह, मोटे, कठोर पति वाला। तुम्हारे प्यारे हाथों पैरों को मेरा हज़ार बार प्यार।

तुम्हारी प्रतीक्षा में
अरनैस्ट

पहिली बार पढ़ने से मानों कुछ समझ ही न पड़ा हो, लैवरिटस्की ने उस कागज़ को फिर से पढ़ा। उसका सिर घूमने लगा। पाँवों के नीचे से धरती मानों निकल गई। उसने ज़ोर से चीख मारी और रोने लगा। उसका मस्तिष्क चकरा गया। बारबारा पर उसे इतना विश्वास था कि ऐसे छल कपट का उसे कभी विचार तक भी न आया था। यह अरनेस्ट, उसकी पत्नी का प्रेमी कोई २३ वर्ष का छोकरा था, पतला, तेज़ सा छोटी छोटी मूँछों वाला, वह बारबारा के सब मित्रों से भोला और सीधा लगता था। आधा घंटा बीत गया। लैवरिटस्की यूँही विचारों में डूबा वहां खड़ा रहा। उसके हाथ में अभी भी वह कागज़ का टुकड़ा पकड़ा था। उसकी आंखों के आगे अंधेरा हो रहा था, इस अंधेरे में उसे विचित्र, अनजान सी मूर्तियां दिखाई देतीं और लगता मानों उस अंधेरे में वह कहीं नीचे बहुत दूर गिर रहा है।

रेशम की पहिचानी हुई "सर सर" से वह चौंक पड़ा बारबारा हाथ में टोपी और शाल लिये अभी घूम के लौटी थी। उसे देख लैवरिटस्की का सारा शरीर कांप उठा। उसके जी में आया कि इसकी एक एक हड्डी पसली तोड़ दूं इसका मार मार के कचूमर निकाल दूँ या गंवारों की तरह इसका गला घोंट दूँ पर वह अपने आप को रोक बाहिर चला गया। बारबारा उसे देख हैरान सी हो गई। उसने उसे रोकना भी चाहा पर वह 'बैटसी' कहता हुआ पागलों की तरह घर से भाग गया।

लैवरिटस्की ने एक गाड़ी ली और गाड़ीवान को शहर से बाहिर चलने को कहा। सारा दिन और सारी रात वह इधर उधर भटकता रहा। दुःख ने उसे पागल सा कर दिया

कभी वह व्याकुल हो अपने हाथ इधर उधर मारता और कभी यूँही खुश हो जाता। अगले दिन सवेरे, थका हुआ शहर के बाहिर किसी होटल में चला गया। यहां उसने एक कमरा ले लिया। अब उसे बेहद उबासियां आने लगीं थकावट के मारे उसका शरीर टूट रहा था। चाहे उसे स्वयं यह विचार भी न था कि वह थक गया है। उसे समझ नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो गया है और कैसे हो गया है। इस नये से कमरे में न जाने कितनी देर वह अकेला, चुपचाप पागलों सा बैठा रहा। आँखें फाड़ वह शून्य में मूर्खों सा देखता रहा। उसके मुँह का स्वाद कड़वा सा हो गया और हृदय ऐसे लगने लगा मानों किसी भारी पत्थर के नीचे दबा हो। उसे कुछ समझ नहीं आ रही थी कि भला क्यों बारबारा ने अपने आप को इस फ्रैंच आदमी के हाथों सौंप दिया है, क्यों वह इतनी कपटी और दुराचारी होती हुई भी ऊपर से इतनी शान्त और भोली लगती है? "यह सब क्या है ?" वह बैठा बैठा गुनगुनाता। फिर उसे विचार आया कि न जाने यह पीटर्स बर्ग में भी क्या-क्या करती रही है। ऐसे विचारों से वह घड़ी-घड़ी कांप उठता। बीते हुए दिनों की मधुर स्मृति कड़वी हो गई। उसे याद आया कि कुछ ही दिन हुए वह स्वयं बारबारा और यही अरनैस्ट बैठे थे और बारबारा ने वही गीत गया मोटे कठोर पति वाला। उसे अभी तक याद था कि गाते समय बारबारा की आंखें चमक रही थीं और मुख खिला हुआ था क्रोध से वह तिलमिला उठा। उसका जी चाहा कि वह दोनों के पास जा के कहे कि तुम क्यों मुझ पर हंसते हो। क्या तुम जानते नहीं मैं कौन हूँ। मेरा दादा क्रोध में आ किसानों को मार देता था...और फिर दोनों को मार दे।

कभी वह सोचता कि कहीं यह स्वप्न तो नहीं; कोई डरावना, भद्दा स्वप्न। उठूँ, शायद समाप्त हो जाये पर..........। दुःख से वह व्याकुल हो गया। जैसे बाज़ अपने शिकार को पंजे में फंसा लेता है वैसे ही दुःख और ग्लानि ने उसे घेर लिया। और फिर वह शीघ्र ही पिता बनने वाला था। उसके सारे जीवन में मानो किसी ने विष घोल दिया। उसे भूत, भविष्य सभी सूना, कड़वा लगने लगा।

बहुत साहस कर आखिर वह पैरिस लौटा। वहाँ एक होटल में कमरा ले अरनैस्ट का वह पत्र उसने बारबारा को लौटा दिया और उसके साथ लिख भेजा कि यह कागज़ का टुकड़ा तुम्हें सब बता देगा। यह पत्र न जाने तुमने कैसे गिरा दिया। तुम ऐसे आवश्यक कागज़ गिराने वाली तो हो नहीं। मैं अब तुम्हें नहीं देखना चाहता और मेरा विचार है तुम्हें भी मुझे देखने की इच्छा नहीं होगी। मैं तुम्हें १५,००० फ्रैंक हर वर्ष दे दिया करूँगा। इससे अधिक मैं नहीं दे सकता। अपना पता घर भिजवा देना। पैसे मिल जायेंगे। अब तुम्हारी जो इच्छा है करो, जहाँ इच्छा है रहो। उत्तर देने की आवश्यकता नहीं।"

लैवरिटस्की ने लिख तो दिया कि उत्तर देने की आवश्यकता नहीं—पर वह मन ही मन में उत्तर की आस लगाये बैठा था। वह चाहता था कि बारबारा कुछ तो कहे कि यह सब क्या है। बारबारा ने फ्रैंच में एक बहुत लंबा सा पत्र लिखा पर उसे पढ़ लैवरिटस्की की रही सही आशा भी टूट गई। अब उसे बारबारा के दुराचार का तनिक भी संदेह न रहा। बारबारा ने अपने आप को बचाने का तनिक भी यत्न न किया। उसने लिखा कि वह लैवरिटस्की से केवल एक बार मिलना चाहती थी और लिखा

कि उसे इतना क्रोध नहीं करना चाहिए था और न ही ऐसी अवस्था में कुछ निर्णय करना चाहिए था। पत्र पर कहीं-कहीं एक आध आँसू का निशान अवश्य था। लैवरिटस्की यह देख थोड़ा मुस्करा दिया और फिर जो पत्र लाया था उसे जाने को कहा।

तीन दिन पश्चात् लैवरिटस्की पैरिस से चला गया पर रूस लौटने के बदले वह इटली चल पड़ा। उसे स्वयं भी समझ नहीं आ रही थी कि क्यों इटली जा रहा है। हाँ, इस दशा में वह घर वापिस नहीं जाना चाहता था। उसने अपने कार्याध्यक्ष को बारबारा के पैसे के विषय में लिख दिया और साथ ही यह भी लिख दिया कि जनरल कोरोबिन के हाथों से जमींदारी की देख रेख का काम फौरन ही बिना हिसाब किताब किए छीन लिया जाए। इस विपत्ति में भी जनरल की दुर्दशा का विचार कर लैवरिटस्की का मन क्षणभर के लिए प्रसन्न हो उठा।

इटली के एक छोटे से नगर में, एकान्त में रहते हुए लैव-रिटस्की बहुत देर तक समाचार पत्रों की सहायता से बारबारा की गति विधि का पता करता रहा। जैसे कि उनकी पहिले सलाह थी, वह पैरिस से बेडन-बेडन चली गई। फिर एक अखबार में बार-बारा के विषय में, मिस्टर जूल्स का लिखा हुआ एक लेख छपा। यह पढ़ कर लैवरिटस्की के हृदय में बारबारा से और भी घृणा हो गई। फिर उसने सुना कि बारबारा के यहाँ लड़की हुई है और थोड़ी ही देर बाद उसके कार्याध्यक्ष ने लिखा कि उसने पैसे मंगवाये हैं।

अब बारबारा के विषय में बहुत सी अच्छी बुरी अफ़वाहें उड़ने लगीं और अन्त में एक भद्दी सी घटना सब अखबारों में छपी। इस घटना में मुख्य भाग बारबारा का ही था। वह काफी बद-

नाम हो चुकी थी। लैवरिटस्की ने अब उसका सब बिचार छोड़ दिया। समाचार पत्रों से उसकी गति बिधि का पता करना भी बन्द कर दिया।

चाहे बारबारा को अब लैवरिटस्की मन से भी निकाल चुका था फिर भी अभी तक उसका घाव पूरी तरह भर न पाया था। कभी-कभी बीते दिनों की याद आ जाती और उसका हृदय बारबारा के लिए व्याकुल हो उठता। उसकी मधुर वाणी सुनने को—उसके हाथ के स्पर्श के लिए वह तड़प उठता और सोचता कि उसे क्षमा कर दूँ। पर यह बिचार सदा क्षणिक होते। समय के साथ-साथ उसका दुःख भी कम हो रहा था, घाव भर रहे थे। उसकी प्राकृति ही कुछ ऐसी थी कि वह धीरे-धीरे सब भूलने लगा। इस घटना से मानो उसकी आँखें खुल गईं। अब वह अपनी पत्नी को भली प्रकार समझने लगा—हम अपने प्रियजनों को तभी समझ सकते हैं जब वे हम से दूर हो जाते हैं। अब उसने फिर से अध्ययन शुरू कर दिया। हाँ, अब वह पहिले सी लगन न थी। प्रथम बचपन की शिक्षा ने और अब भाग्य की क्रूर ठोकरों ने उसे बड़ा कठोर और अविश्वासी बना दिया। किसी भी बात की वह अब बहुत परवाह न करता। ऐसे चार वर्ष बीत गए और तब कहीं उसने घर लौटने का साहस किया। वह बिना पीटर्सबर्ग या मास्को ठहरे सीधा—ओ नगर पहुंचा जहाँ हमने पाठकों से उसका परिचय करवाया था।

अगले दिन प्रातः दस बजे लैवरिटस्की, कालीटीन के घर की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था कि उसे दस्ताने और टोपी पहिने नीचे आती हुई लिज़ा मिली।

"कहाँ जा रही हो" लैवरिटस्की ने पूछा

"आज इतवार है, गिरजे जा रही हूँ"

"अच्छा ! तुम गिरजे भी जाती हो"

लिज़ा हैरान सी हो उसकी ओर देखने लगी।

"मुझे क्षमा करना" लैवरिटस्की बोला। "मेरा कुछ खास मतलब न था। मैं तो यूँही आप सब को मिलने आया था। घन्टे भर तक मैं अपने गाँव जा रहा हूँ"

"गाँव यहाँ से बहुत दूर तो नहीं"

"कोई २५ कोस के लगभग होगा"

लिनोचका इतने में दासी के साथ आ गई।

"अच्छा हमें भूलना मत" सीढ़ियाँ उतरती हुई लिज़ा बोली।

"मुझे भी न भुला देना। और हाँ," वह बोला, "तुम प्रार्थना करने जा रही हो, मेरे लिए भी प्रार्थना करना"

"तुम वास्तव में अगर चाहते हो तो मैं अवश्य तुम्हारे लिये भी प्रार्थना करूँगी" और वह लिनोचका को साथ ले चल दी।

अन्दर बैठक में मारया मित्रविना बैठी थी। रात को ठीक तरह नींद न आने से उसके सिर में पीड़ा हो रही थी और वह कोई सुगन्धि रुमाल में लगाये सूँघ रही थी। अपने स्वभावानुसार वह धीरे-धीरे ढीली-ढाली बातें करने लगी।

"व्लैडीमीर निकोलिय कितना अच्छा है। तुम को कैसा लगा ?" वह बोली

"कौन है यह व्लैडीमीर निकोलिय"

"वही, पाशिन। वही जो कल शाम को यहाँ था। तुमने उसे बड़ा प्रभावित किया है। तुम्हें एक बात बताऊँ पर किसी से कहना मत। पाशिन लिज़ा से बहुत प्रेम करता है। अच्छे घर का है। नौकरी भी बहुत बढ़िया है और तिस पर इतना सुन्दर और चतुर है। यदि भगवान की इच्छा हुई तो.........। मैं तो बहुत प्रसन्न हूँ। मुझ पर इतना भार है यह। वास्तव में बच्चों की खुशी माँ बाप पर ही निर्भर होती है, क्यों ठीक है न ? यहाँ मैं कई वर्षों से अकेले ही बच्चों की देखभाल कर रही हूँ। अभी कुछ ही दिन हुए मैंने इनके लिए एक फ्रैंच अध्यापिका का बन्दोबस्त किया है।

मारया मित्रबिना काफी देर तक ऐसे ही अपने उत्तरदायित्व की बातें करती रही। लैवरिटस्की चुपचाप बड़े धैर्य से सुनता रहा पर अन्त में उसकी कठोर दृष्टि से वह खीझ उठी।

"लिज़ा तुम्हें कैसी लगी है" आखिर वह बोली

"लिज़ा बहुत अच्छी लड़की है" लैवरिटस्की यह कह नमस्ते करके उठ खड़ा हुआ और मारफा को मिलने चला गया। मारया के माथे पर बल पड़ गये। "कैसा गंवार है। अब मुझे समझ आई क्यों इसकी पत्नी इसे छोड़ के चली गई है"

मारफा टिमोफीना अपने कमरे में मित्र-मण्डली से घिरी बैठी थी। वहाँ बैठे पाँचों जीव उसे एक जितने ही प्रिय थे। एक बोलने वाली चिड़िया, एक पतला सा छोटा सा कुत्ता, एक झगड़ालू बिल्ली, एक सहमी हुई बड़ी-बड़ी आँखों वाली नौ वर्ष की लड़की

और एक लगभग ५५ वर्ष की वृद्धा जिसका नाम नसटास्या कारपोवना था। शरुचका (छोटी लड़की) बिचारी निर्धन अनाथ बालिका थी जिसे कुत्ते रीस्का की तरह दया कर मारफा ने अपने पास रखा हुआ था। शिरुचका और रीस्का दोनों ही मारफा टिमोफीना को सड़क पर, बारिश में भीगते, भूखे, सूखे से ठिठुरते हुए मिले थे। रीस्का का तो कोई ठिकाना था ही नहीं और शरुचका का भी जो संबन्धी था उसने बड़ी प्रसन्नता से बालिका को मारफा के हाथों सौंप दिया। उस बिचारे के पास स्वयं दो समय खाने को नहीं था। बालिका के भार से मुक्त हो वह बड़ा प्रसन्न हुआ।

नसटास्या कारपोवना से उसका परिचय पहिली बार किसी मन्दिर में हुआ जहाँ नसटास्या प्रार्थना में मग्न खड़ी थी। मारफा को वह बहुत अच्छी लगी और उसने उसे चाय पीने को बुलाया —तभी से वह यहाँ थी। नसटास्या बिचारी बड़ी प्रसन्नमुख, उदार चित्त, निसन्तान, विधवा थी। उसके सफेद बालों से घिरे बड़े से मुख से सदा सत्य और अच्छाई टपकती। चाहे ऊपर से वह उस पर कितना ही हँसती पर हृदय से मारफा उससे बड़ा प्रेम करती थी। नसटास्या के पास अपनी थोड़ी बहुत पूँजी भी थी।

यहाँ पर वह मारफा के आसरे ही रहती फिर भी उसके साथ सदा एक जैसों सा बर्ताव किया जाता।

"आओ आओ फेदया" लैवरिटस्की को देखते ही वह बोली "आओ, कल तुम मेरे परिवार को नहीं मिले। आज इतवार है इसलिए हम सब अभी तक बैठे चाय पी रहे हैं। आओ सब से

मिलो। केवल शिरूचका नहीं मिलेगी तुम से और बिल्ली शायद नोच खाये तुम्हें। तो फिर आज जा रहे हो?"

"हाँ मैं अभी ऐलीज़बीटा से और मारया मित्रबिना से मिल कर आया हूँ" लैवरिटस्की बोला।

"कैसी बातें करते हो। तुम उसे ऐलीज़बीटा क्यों कहते हो। लिज़ा कहो और ठीक तरह आराम से बैठो। ऐसे कहीं शिरूचका का स्टूल न टूट जाए"

"वह तो गिरजे जा रही थी। बड़ी भक्तिनी लगती है"

"हाँ, । हाँ। फेदया वह बड़ी धर्मपरायण है। तुम्हारे और मुझ से बहुत अधिक"

"तुम भला कहाँ की भक्तिन आ गई" नसटास्या बोली "आज सुबह तुम गिरजे भी नहीं गई। शाम को तो चलोगी।"

"नहीं, प्रिय। तुम अकेले ही जाना। मुझे तो बहुत आलस्य आ रहा है" मारफा ने उत्तर दिया "असल में मैंने चाय बहुत पी ली है।"

"मैं पूछना चाहता था" लैवरिटस्की ने कहा "कि यह जो पाशिन है—अभी ही मारया उसकी बातें कर रही थी—यह कैसा आदमी है?"

"हे ईश्वर—इस औरत को भी बातें करने का कितना शौक है" मारफा बोली "तुम्हें बता रही होगी कि कितना बढ़िया शिकार फंसाया है। उसकी बात छोड़ो। वह तो ऐसी ही है। न जाने क्यों यह अपने पादरी के पुत्र के संग ही प्रसन्न क्यों नहीं रहती। ऐसे ही सब बातों में टाँग अटकाती है। शुक्र है भगवान का, अभी तो कुछ बात नहीं। मारया तो ऐसे ही बोलती रहती है।"

'क्यों, शुक्र करने की क्या बात है ?' लैवरिटस्की ने पूछा।

"बात यह है कि वह बांका युवक मुझे नहीं भाता और फिर ऐसी प्रसन्न होने की भी कौन सी बात है"

"तुम्हें नहीं भाता वह"

"नहीं, बिलकुल नहीं। सभी पर तो नहीं जादू डाल सकता न ! इतना थोड़ा है कि हमारी नसटास्या बिचारी उस पर लट्टू हो गई है।"

नसटास्या यह सुन कर पानी-पानी हो गई।

"कैसी हो तुम मारफा। कुछ भगवान का भय नहीं तुम्हें।" उसका मुख लज्जा से लाल हो गया।

"और मजा यह है कि वह शैतान सब जानता है। स्त्रियों के हृदय को जीतना तो उसे खूब आता है। अभी ही उसने नसटास्या को एक नसवार की डिबिया उपहार दिया है—बड़ी सुन्दर डिबिया है। ऊपर एक घुड़सवार की तसवीर है।"

नसटास्या बिचारी चुप हो गई।

"तो क्या लिजा भी उससे प्रेम करती है" लैवरिटस्की ने पूछा।

"हां। मेरा विचार है, पाशिन उसे अच्छा लगता है। पर उसके मन की बात तो भगवान ही जाने। घने जंगल की तरह लड़कियों के हृदय का भी कुछ पता नहीं लगता। अब शिरुचका को ही देखो। जब से तुम आये हो भला यह छिप क्यों गई है।"

नन्हीं शिरुचका एक दम कमरे से भाग गई।

"हां" धीरे से वह बोला "लड़कियों का हृदय भी एक पहेली सा होता है" वह उठा और जाने को तैयार हो गया।

"फिर जल्दी ही मिलोगे न"

"हां बूआ, विचार तो है । गांव भी यहां से कोई बहुत दूर तो है नहीं ।"

"तुम वैसीलीस्कोय जा रहे हो। लैवरिकी नहीं जाना चाहते तुम्हारी जो इच्छा है करो पर अपनी मां और दादी की समाधि पर अवश्य जाना। देश विदेश घूम कर पता नहीं तुम्हारे विचार कैसे हो गये हैं पर इस बात से शायद उनकी आत्मा को शान्ति मिले। और देखो ग्लैफीरा को मत भूलना। उसके लिए प्रार्थना करवा देना। यह लो पैसे, मेरी ओर से करवाना। मेरी उससे बनती तो नहीं थी पर फिर भी इतने वर्ष उसी ने तुम्हें पाला पोसा था।"

मारफा ने लैवरिटस्की को हृदय से लगा विदा किया। 'देखो, फेदया" वह पीछे से बोली, "फिकर न करना। लिजा का विवाह पाशिन से नहीं होगा। उसको उससे अच्छा पति मिलना चाहिए।"

"भला मुझे क्या फिकर हो सकता है" कहकर लैवरिटस्की चला गया।

चार घन्टे बाद वह गांव की ओर चल पड़ा। देहात की ऊँची नीची सड़क पर गाड़ी बड़ी तेज तेज चलने लगी। पंद्रह बीस दिनों से वर्षा की बूँद न गिरी थी। इस लिए सारा वायु मण्डल धूल से भरा था। धूल ने आस पास के जंगलों पर भी परदा डाल दिया था। हां, कहीं कहीं जंगलों में कुछ जलने की गन्ध आरही थी। तेज हवा के झोंकों से बादल के टुकड़े आकाश में

इधर उधर उड़ रहे थे। अपना सिर तकिये पर टिकाये बांहे आगे किये, लैवरिटस्की यह सब देख रहा था। सड़क के दोनों ओर फैले हुए खेत, कहीं कहीं वृक्षों के झुंड और उन पर बैठे कौए। लैवरिटस्की ध्यान से सब देखता गया। प्रकृति का यह नग्न सौंदर्य देख, यह हरियाली, यह लंबे चौड़े मैदान, पेड़ों के झुंडों में से झांकते हुए छोटे छोटे गांव, यह अपनी प्रिय मातृभूमि देख उसका हृदय भर आया। भूली विसरी बातें याद आ गईं। ऊपर आकाश में उड़ते हुए बादलों की नाईं उसके मस्तिष्क में भी अनेकों विचार आ जा रहे थे। उसे अपना बचपन याद आया और अपनी मां। अभी भी मां की मृत्यु का दृश्य उसके हृदय पट पर अंकित था। मां ने उसे बुला हृदय से लगा प्यार किया था और फिर वह सहमी हुई, घबराई हुई सी आंखों से ग्लैफीरा की ओर देखने लगी थी मानों विनय कर रही हो। फिर उसे अपना पिता याद आया—पहिले बड़ा बलवान, स्वस्थ, रोबीला भारी आवाज वाला और फिर वही पिता अंधा, रोगी, दयनीय दशा में। उसे अभी भी याद था, एक दिन जब भोजन के बाद उसका पिता कुछ अधिक शराब पी गया था तो कैसे हाथ हिला हिला कर और हंस हंस कर वह अपनी पिछली बातें सुनाता रहा था। और फिर वारबारा की याद आई। कटु स्मृति पीड़ा की नाईं उसके शरीर में फैल गई। सिर हिला कर उसने उसे भूलना चाहा।

अन्त में उसकी विचार धारा लिज़ा पर आ कर ठहर गई।

"लिज़ा, अभी जीवन में पग धरने लगी है। कितनी सरल है यह लिज़ा, वह सोचने लगा। न जाने इसका क्या होगा। सुन्दर भी है। भोला सा पीला मुख, बड़ी बड़ी गम्भीर आंखें, और बच्चों सा निर्दोष पवित्र हृदय। केवल धर्मपरायण है बहुत

शरीर भी सुन्दर है। पर सब से प्यारा तो लगता है उसका एक दम बातें करते करते खड़े हो गम्भीर सा मुँह बना ध्यान से सुनना और फिर सिर हिला बालों को पीछे हटाना। फिर उसे पाशिन का विचार आने लगा "न जाने पाशिन मुझे क्यों नहीं भाया है। तो अच्छा, बुरा नहीं है, पर लिज़ा के योग्य नहीं है।

ऐसे ही विचारों में लैवरिटस्की डूबता उतराता रहा। फिर उसे ख्याल आया कि भला मुझे क्या लगे लिज़ा से, मैं भला क्यों यह सब सोच रहा हूं। उसने आंखें बंद करलीं और सोने का यत्न करने लगा। वह ठीक तरह सो तो न सका हां गाड़ी के धीमे धीमे हचकोलों से अर्द्धनिद्रित सा हो गया। न जाने कैसे सोते सोते उसे फ्रैंच इतिहास का विचार आने लगा। यदि वह जनरल होता तो कैसे युद्ध जीतता। उसे यूँ लगा मानों वह युद्ध भूमि की चीख पुकार, कराह और गोले चलने की आवाजें सुन रहा है। अचानक उसका सिर तकिए से नीचे खिसक गया और वह चौंक कर उठ खड़ा हुआ। वही खेत, वही हरियाली चारों ओर फैली थी। गाड़ीवान के वस्त्र हवा में उड़ रहे थे। गाड़ी को धक्का सा लगा और लैवरिटस्की अच्छी तरह उठकर बैठ गया। सामने टीले पर एक छोटा सा गांव दिखाई दे रहा था। उसके बांई ओर एक छोटा पुराना सा घर दीख रहा था। उसके खिड़कियां दरवाजे सब बंद पड़े थे। छोटी ड्योढ़ी भी अच्छी दशा में न थी। फाटक से लेकर घर तक बड़े से आंगन में छोटी बड़ी झाड़ियां और कांटे उग रहे थे। एक ओर कोने में लकड़ी का बना हुआ पुराना पर अभी तक पक्का तबेला था। यह था वैसीलीस्कोय।

गाड़ीवान ने फाटक से बाहर ही गाड़ी रोक ली। लैवरिटस्की के नौकर ने जोर से आवाज दी "कोई है।" कहीं दूर से भौंकने की आवाज आई पर कोई बाहर न आया। नौकर ने फिर से आवाज दी "कोई है।" भौंकना फिर से सुनाई दिया और थोड़ी देर बाद एक आदमी कहीं से भागता हुआ आंगन में आया। उसने पुराने से देहाती ढंग के वस्त्र पहिने थे। उसके बाल बरफ से ढके थे। गाड़ी के पास आ वह बड़े ध्यान से देखने लगा और फिर एकदम भाग कर आया। जल्दी से उसने फाटक खोला। गाड़ी आंगन के पत्थरों और कांटों से होकर डयोढ़ी के सामने जा खड़ी हुई। सफेद बालों वाला वृद्ध अब दरवाजे के सामने खड़ा था। मालिक के उतरने के लिए उसने गाड़ी का दरवाजा खोला और एक ओर हो गया "क्यों भाई कैसे हो तुम? तुम्हारा नाम ऐण्टन है न।" लैवरिटस्की बोला "अभी तक चलते फिरते हो।"

बूढ़े ने झुक कर अभिवादन किया और घर की चाबियाँ लेने चला गला।

गाड़ीवान चुपचाप बांहें लटकाये बंद दरवाजे की ओर देखता रहा और लैवरिटस्की का नौकर एक ओर सन्दूकों के पास खड़ा बूढ़े के लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। इतने में वृद्ध चाबियों का बड़ा सा गुच्छा ले लौट आया। उसने घर का दरवाजा खोला और झुक कर एक ओर खड़ा हो गया।

"आखिर मैं घर लौट ही आया हूँ" अन्दर पैर रखते हुए लैवरिटस्की ने सोचा "अब यही है मेरा ठिकाना"। नौकरों ने खिड़कियाँ दरवाजे खोले और अन्धेरे सुनसान घर में रोशनी हो गई।

इसी छोटे घर में जहां लैवरिटस्की लौटा, दो ही वर्ष पहिले ग्लैफीरा का देहांत हुआ था। यह छोटा सा देखने में टूटा फूटा घर पिछली सदी में बहुत बढ़िया लकड़ी से बनाया गया था देखने से तो लगता था कि अब इस के अन्तिम दिन आ गये हैं पर वास्तव में यह अभी काफी पक्का था, अभी और ५० वर्ष तो बड़ी सुगमता से काट सकता था। लैवरिटस्की ने घर के सब कमरे घूम कर देखे और सब खिड़कियाँ और रोशनदान आदि खुलवाये। ग्लैफीरा की मृत्यु के बाद सब बंद पड़ा था और कोई भी वस्तु अपनी जगह से नहीं हिलाई गई थी। बैठक में पतली पतली टांगों वाला, बढ़िया चमकीले कपड़ों से ढका दीवान अभी तक कैथरीन के समय की याद दिला रहा था। वहीं एक कोने में ग्लैफीरा की सीधी पीठ वाली कुरसी भी पड़ी थी। वृद्धावस्था में भी ग्लैफिरा ने इसकी पीठ का आसरा ना लिया था।

दीवार पर फेदया के दादा ऐन्ड्री लैवरिटस्की की तसवीर टंगी थी। उसका मुख तो बहुत स्पष्ट नहीं दिखता था, हां, भारी भौंहों के नीचे छोटी-छोटी तेज आंखें अभी भी चमक रही थीं। विशाल मस्तक के ऊपर काले बाल भी बहुत थोड़े दिखाई देते थे। तसवीर के नीचे एक ओर एक मुरझाई हुई पुरानी माला भी लटक रही थी जो ग्लैफीरा ने अपने हाथों से बनाई थी। सोने वाले कमरे में एक बड़ी सी मच्छरदानी वाला छोटा सा पलंग लगा था। उस के एक ओर कुछ पुराने तकिये और दूसरी ओर एक घिसी फटी चद्दर पड़ी थी। उसी पलंग के एक ओर कुमारी मेरी की मूर्ति टंगी थी जिसे मरते समय ग्लैफीरा ने हाथ में रखा था।

कमरे के एक कोने में पच्चीकारी के काम वाली छोटी सी शृंगार की मेज भी रखी थी । उसका काले फ्रेम वाला शीशा भी अभी वहीं एक ओर पड़ा था। सोने वाले कमरे के साथ ही पूजा का छोटा सा कमरा था। उस में एक पूजा की मूर्ति और फटी हुई दरी के सिवा और कुछ न था। यहीं बैठ अकेली ग्लैफीरा घन्टों पूजा पाठ किया करती थी ।

एएटन घर खोल कर लैवरिटस्की के नौकर को घुड़साल दिखाने ले गया। उसकी जगह एक बहुत बूढ़ी एएटन की ही आयु की स्त्री वहाँ आ गई । माथे पर उसने रूमाल बांधा था। वृद्धावस्था से उसका सिर हिल रहा था । वर्षों की दासता से उस की पीठ और आँखें झुक गई थीं। सिर झुका, अभिवादन कर वह स्वभाववश ही एक ओर खड़ी हो मालिक की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगी । फेदया ने बहुत सोचा पर उस का नाम उसे याद न आया। उस का नाम ऐपरेक्सीया था । चालीस वर्ष पूर्व ग्लैफीरा ने उसे घर के काम से हटा बाहिर मुर्गीयों आदि की देख भाल के लिए रखा था। वह बहुत कम बोलती थी केवल बड़ी विनीत सी दृष्टि से देखती रहती। इन दो वृद्धों के सिवाय घर में दो तीन, फूले पेट वाले, रोगी से बच्चे थे। एक और टूटी बाँह वाला आदमी भी था पर वह कुछ काम नहीं कर सकता था। एक कुत्ता भी था पर वह भी अब बिल्कुल काम का न था। दस वर्ष पहिले ग्लैफीरा ने उसे खरीदा था तब से निरंतर बंधे रहने से उसके सब अंग शिथिल हो गये थे। अब तो अपना भार भी उठाना उसके लिए कठिन हो गया था ।

घर की देख भाल कर लैवरिटस्की बाहर बगीचे में गया यहाँ उसका मन प्रसन्न हो उठा। तरह तरह की झाड़ियां

इधर उधर उग आई थी। एक कोने में बड़े-बड़े सुन्दर पेड़ों का झुंड था। पेड़ बहुत पास-पास थे। पर उन की छंटाई किये शायद कोई १०० वर्ष हो गये थे पर उनकी घनी छाँह बड़ी सुन्दर लगती थी। बगीचे के दूसरी ओर लम्बी-लम्बी घास से घिरा छोटा सा पर बड़ा सुन्दर स्वच्छ पानी का तालाब था। मनुष्य का अस्तित्व कितनी जल्दी समाप्त हो जाता है। ग्लैफीरा का अब कोई चिन्ह न था। हां, उसका घर, प्राकृति की गोद में, सागर की हलचल से परे मानों सोया पड़ा था।

लैवरिटस्की उठा और गाँव में घूमने चला गया। छोटे-छोटे घरों में से ग्रामीण स्त्रियों ने झाँक कर देखा कि यह परदेसी कौन है, पुरुषों ने दूर से ही अभिवादन किया। और बच्चे नई शक्ल देख कर भाग गये और कुत्तों ने भौंकना शुरू कर दिया। लैवरिटस्की को भूख लग रही थी। उसको नौकरों की शाम से पहले पहुंचने की कोई आशा न थी क्योंकि वह लैवरिकी से आवश्यक सामग्री लाने गये थे। उसे एण्टन का ही अतिथि बनना पड़ा।

एण्टन ने जल्दी से एक बूढ़ी मुर्गी पकड़ी। ऐपरैक्सीया ने उसे काट, छाँट साफ कर पकाया। जब वह पक गई तो एण्टन ने एक साफ सुथरा सफेद मेज़ पोश मेज़ पर बिछाया, छुरी काँटा, नमक-दानी सब आवश्यक वस्तुयें रख मालिक को खाने के लिए बुलाया। खाना रख वह लैवरिटस्की की कुर्सी के पास ही खड़ा हो गया। बूढ़े पेड़ की तरह उसके शरीर से एक अजीब सी गन्ध आती थी। लैवरिटस्की ने जो भी अच्छा बुरा था, खाया। और खा कर चाय का प्याला माँगा। एण्टन ने कहीं से ढाँढ भाल कर चाय की पत्ती और चीनी निकाली और एक बड़े से प्याले में

चाय ले आया। लैवरिटस्की ने ध्यान से प्याले को देखा। जब वह छोटा था तो अतिथियों को इसी प्याले में चाय दी जाती थी आज वह भी तो अपने घर में अतिथि सा ही था।

शाम को उस के नौकर सब सामान आदि ले आये। क्योंकि वह ग्लैफीरा के पलंग पर नहीं सोना चाहता था, उस ने खाने वाले कमरे में ही अपना बिस्तर लगवा लिया दिय बुझा कर वह बहुत देर अनमना सा विचारों में डूबा अपने पलंग पर बैठा रहा। बहुत समय से सुनसान पड़े इस घर में उसे बहुत अजीब सा लगा रहा था। चारों ओर फैले घोर अन्धकार को भी मानों उसका वहां आना बुरा लग रहा था। घर की दीवारें ही मानों इस हलचल से चौंक पड़ी थीं। इन्ही विचारों में पड़े-पड़े आखिर उसे नींद आ गई।

सब के सो जाने के बाद भी एण्टन बैठा ऐपरैक्सीया से बातें करता रहा। उन्हें कभी स्वप्न में भी विचार न था कि लैवरिकी जैसे सुन्दर विशाल भवन को छोड़ वह टूटे फूटे वैसीलैस्कोय में आयेगा।

पर वह क्या जानते थे कि लैवरिकी किन कटु समृतियों से भरा है।बातें करते-करते एण्टन भी सो गया। मई की सुहावनी रात के शान्त वातावरण ने उसे गाढ़ी नींद में सुला दिया।

अगले दिन लैवरिटस्की जल्दी ही उठ पड़ा। अमीन को बुला उसने बात चीत की। थोड़ा इधर उधर देखा भाला और फिर कुत्ते की जंजीर खुलवा दी। कुत्ता जरा भौंका और फिर वहीं बैठ

गया । लैवरिट्स्की भी घर लौट कर सुस्त हो गया । "आखिर मैं यहाँ पहुंच गया हूँ" वह सोचने लगा और कुरसी खींच खिड़की के पास बैठ गया। देहात में एकदम चुप्पी सी छाई रहती है। कहीं झाड़ियों के नीचे से आवाज सी आई जिसे सुन बुटकी ने गाना शुरू कर दिया। आवाज बन्द हो गई पर बुटकी का गीत चलता ही रहा। मक्खियों की धीमी निरन्तर "बज-बज" की ध्वनि में कभी-कभी बड़ी मक्खी की छत से टकराने की आवाज आती। बाहर दूर कहीं एक कौआ कार्य-कार्य कर रहा था। एक छकड़ा धीरे-धीरे फिर गांव में जा रहा था। किसी स्त्री ने बड़े तीक्ष्ण स्वर में कहा, "क्या कर रहे हो"। कहीं एक किवाड़ खुला और एण्टन बाहिर बैठा अपनी दो वर्ष की पोती क गोदी में ले प्यार कर रहा था। उसी स्त्री का स्वर एक बार फिर सुनाई दिया और फिर सब चुपचाप हो गया। सन्नाटा सा छा गया। किसी पत्ते के हिलने की भी आवाज अब नहीं आ रही थी। दूर हवा में चिड़ियां एक दूसरे के पीछे उड़ रही थीं। उन्हें देख लैवरिट्स्की और उदास हो गया "तो आखिर मैं यहाँ पहुंच गया हूँ । यहाँ जीवन कितना शांत है, जो भी यहां आये उसे ऐसा ही होना पड़ता है—हल के पीछे चलते हुए किसान की तरह शान्त। पर इस चुप्पी में कितनी महान शक्ति छिपी है । इस धरती से कितने-कितने विशाल पेड़ और अनाज से भरे खेत उग रहे हैं। पेड़ों के एक-एक पत्ते में, घास में, अनाज के एक-एक दाने में कितनी शक्ति कितनी जान छिपी है। बस ऐसे ही वह सोचता रहा "मैंने अपने जीवन की कितनी ही अनमोल घड़ियां व्यर्थ एक स्त्री के पीछे गंवा दीं। अब प्रकृति की शान्तिमय गोद में शायद मेरे विकल हृदय को भी शान्ति मिल जाये।"

फिर वैसे ही चुपचाप वह कान लगाये बैठ गया मानों कोई ख्वास बात होने वाली हो। चारों ओर फैली हुई चुप्पी ने उसके हृदय को भी घेर लिया। आकाश में बादलों के टुकड़े धीरे-धीरे चल रहे थे मानों उन्हें अपने लक्ष्य का कुछ पता हो। इस समय दूर शहरों में जीवन भागता, हाँफता, एक दूसरे से टकराता-ठुकराता चल रहा था। पर यहाँ सब चुपचाप था। कीचड़ पर आते पानी की न्याईं। ऐसे ही सायंकाल तक लैवरिटस्की बैठा रहा। जैसे बसन्त ऋतु में सर्दीयों की जमी बरफ़ घुल जाती है वैसे ही इन विचारों से उसके मन की अशान्ति और विकलता धुल के बह गई। आज जीवन में पहली बार उसे अपनी मातृभूमि भी प्रिय लगने लगी।

एक दो सप्ताह में लैवरिटस्की ने ग्लैफीरा के घर का रंग ही बदल डाला। आँगन और वाटिका को साफ करवाया। लैव-रिकी से घर का आवश्यक सामान और शहर से मदिरा और पुस्तकें आदि मंगवाईं। घुड़सालों में नये घोड़े आगये। तात्पर्य यह कि लैवरिटस्की ने सुख की सब सामग्री एकत्रित कर ली और वहां जमींदारों सा रहने लगा। ऐसे ही विशेष बिना किसी घटना के दिन निकलते गये पर वह एकाकी जीवन से घबराया नहीं। वह जिमीं-दारी की देख भाल करता, घोड़े पर दूर-दूर तब घूमने चला जाता कभी कभी बैठा थोड़ा बहुत पढ़ लेता। और बहुत सा समय तो वृद्ध ऐण्टन की बातें सुनने में निकल जाता। लैवरिटस्की प्रायः खिड़की के पास कुर्सी खींच, चाय का प्याला और तम्बाकू

ले बैठ जाता और ऐण्टन दरवाजे के पास हाथ पीछे किए खड़ा हो घन्टों, पिछली बातें सुनाया करता। कैसे उन दिनों में अनाज बिना तोलने के, बड़ी-बड़ी बोरियों के हिसाब से बिका करता था। दो तीन कोपेक की एक बड़ी बोरी आ जाया करती थी। शहर के पास ही बड़े-बड़े घने जंगल और मैदान होते थे, अब तो सब पेड़ गिराए जा रहे हैं—कहीं गाड़ी के लिए भी रास्ता नहीं। ऐसे ही ऐण्टन घन्टों बातें सुनाया करता। उसकी आयु अब ८० वर्ष से अधिक हो चुकी थी। अपनी मालकिन ग्लैफीरा की वह बहुत बातें कहता। "वह बहुत समझदार और मितव्ययी थी। बहुत वर्ष हुए जब वह छोटी थी तो एक युवक उसे घोड़े पर मिलने आया करता था। ग्लैफीरा भी उसके संग अपने सब से बढ़िया वस्त्र पहिन जाया करती थी। पर एक बार ग्लैफीरा को पता लगा कि वही युवक किसी से उसकी धन सम्पत्ति के विषय में पूछ रहा था। बस उसी दिन से ग्लैफीरा ने उसका आना जाना बन्द कर दिया और अजीवन कुँवारी ही रही। अपनी एक-एक वस्तु वह अपने भतीजे लैवरिटस्की के नाम छोड़ गई और वास्तव में था भी यूँ ही। ग्लैफीरा की एक एक चीज, उसके कपड़े तक भी सभी ज्यों की त्यों पड़े थे। लैवरिटस्की का विचार था कि देख-भाल करने पर उसे कुछ पुराने पढ़ने योग्य पत्र, कागज व पुस्तकें अवश्य मिलेंगी पर उसे कुछ भी न मिला। हाँ एक पुरानी पुस्तक जिस पर उसके दादा ने कुछ लिखा हुआ था वह मिली। और भी दो चार कागज मिले पर विशेष रोचक कुछ भी न था। ग्लैफीरा की शृँगार की मेज के एक दराज में खूब अच्छी तरह गोंद से बन्द किया हुआ एक बण्डल सा मिला। उसमें एक तसवीर थी। बड़े-बड़े घुँघराले

सुनहरी बाल, बादाम सी, अलसाई हुई सी आँखें और अधखुला मुँह। यह लैवरिटस्की का पिता ईवान था। उसी के साथ आधी बुझी हुई एक और तसवीर भी थी। यह उसकी माँ थी—सफेद वस्त्र पहिने और हाथ में गुलाब का फूल लिए वह खड़ी थी। ग्लैफीरा का कोई चित्र न मिला। उसने कभी कोई खिंचवाया ही न था।

ऐएटन घन्टों बातें सुनाया करता, कभी किसी की, कभी किसी की। "आप का पड़ दादा एएटन बहुत रोबीला था। उसके समय में मैं घर का काम नहीं करता था। जब उसकी मृत्यु हुई तो मैं १८ वर्ष का था। एक दिन बाहर कहीं वह मुझे मिला। उसने मेरा नाम पूछा तो मैं थर-थर काँप ने लगा। डर के मारे मेरे होश हवास उड़ गए। और बात कुछ भी न थी। उसने मुझे घर से रुमाल लाने के लिए भेजा था। सच वैसा आदमी मैंने कभी नहीं देखा। उसे किसी साधू ने प्रसन्न होकर एक तावीज दिया था और उसी तावीज़ के कारण ही सब उससे इतना डरते थे। वह स्वयं तो एक छोटे से घर में ही रहता था पर अपनी मित-व्ययता से उसने बहुत धन और वस्तुएँ एकत्रित की थीं। यहाँ जो चाँदी के बर्तन, छुरी काँटे हैं सब उसी के हैं। उसके पश्चात् आपका दादा पोयटोर तो बिल्कुल किसी काम का न था। उसने तो बाप का बना बनाया धन नष्ट कर दिया। जो कुछ अब बचा है वह तो सारी ग्लैफीरा की ही कृपा है।"

"क्या यह सच है कि तुम उसे कंजूस मक्खी चूस कहते थे?" लैवरिटस्की बीच में ही बोल पड़ा।

"कौन कहता है?" एएटन चिढ़ कर बोला। मानो यह बात अच्छी न लगी हो।

एक बार बहुत हिम्मत कर एएटन ने मालिक से पूछ ही लिया कि मालकिन कहाँ है ?

"मैंने उसे छोड़ दिया है" लैवरिटस्की बोला। "अब उसका नाम मत लो।"

तीन सप्ताह बाद एक दिन फेदया लैवरिटस्की घोड़े पर चढ़, नगर, कालीटीन के घर गया। लैम्म वहाँ बैठा था। फेदया को वह बहुत अच्छा लगा। चाहे पिता की कृपा से उसने कभी भी संगीत न सीखा था फिर भी उसे पक्के, शास्त्रीय संगीत सुनने का बहुत शौक था। उस दिन पाशिन भी कालीटीनों के घर न था। गवर्नर ने उसे सरकारी काम पर कहीं बाहर भेजा हुआ था। लिज़ा अकेली बड़ी तन्मय हो पियानो बजा रही थी। लैम्म भी बड़ा मग्न हो कागज़ के टुकड़े से ताल दे रहा था। मारया मित्रीविना पहिले तो सुनती रही, कभी-कभी मुस्कराती भी रही पर थोड़े ही समय में उकता गई। "यह शास्त्रीय संगीत मुझे तो नहीं भाता" वह बोली और उठ के चली गई।

आधी रात गए लैवरिटस्की लैम्म को उसके घर छोड़ने गया और तीन बजे तक वहीं बैठा रहा। लैम्म आज बड़ा प्रसन्न था। वह खूब बातें कर रहा था। आज उसकी बुझी हुई आँखें फिर से चमक पड़ी थीं। झुकी हुई पीठ भी कुछ सीधी लग रही थी। बहुत देर के बाद आज उसे यह प्रशंसक मिला था। लैवरिटस्की बड़े ध्यान और श्रद्धा से बैठा उसकी बातें सुन रहा था।

लैम्म ने अपने पुराने लिखे हुए गीत निकाले और गाकर फेदया को सुनाए। जाने से पहिले फेदया ने उसे अपने गाँव चलने को कहा—लैम्म उस समय तो मान गया पर जब लैवरिटस्की चला गया तो वह खड़ा-खड़ा सोचने लगा कि कहीं मैं

पागल तो नहीं हो गया। और थोड़ी देर बाद वह बिस्तर में घुस सोने का यत्न करने लगा।

कुछ दिन बाद जब अपनी गाड़ी ले लैवरिटस्की स्वयं उसे लेने आया तो लैम्म ने बीमारी का बहाना किया। पर लैवरिटस्की कहाँ मानने वाला था। उसे खींच कर वह ले ही गया। एक पियानो उसने विशेष रूप से लैम्म के लिए मंगवाया था फिर भला लैम्म न कैसे करता।

रास्ते में दोनों कालीटीन के यहाँ गए। पर आज उस दिन जैसी बात न थी। पाशिन दौरे से लौट आया था और जिन-जिन लोगों को वह वहाँ मिला था उनकी नकलें उतार, सब को हँसा रहा था। लैवरिटस्की तो हँसता रहा पर लैम्म कोने में बैठा टिड्डों की तरह बुड़ बुड़ करता रहा। जब लैवरिटस्की जाने को उठा तो लैम्म प्रसन्न हो गया।

गाड़ी में भी पहिले तो वह चुपचाप बैठा रहा पर रास्ते की सुगन्धित पवन, तारों के धीमे प्रकाश, घास की और जंगल की मादक गन्ध और रात्रि के शान्त सौन्दर्य ने मानो उस पर जादू सा कर दिया। धीरे-धीरे वह बोलने लगा।

वह संगीत की बातें करने लगा, फिर लिजा की और फिर संगीत की। जब वह लिजा का नाम लेता तो उसकी वाणी में कोमलता सी आ जाती। लैविरटस्की उसके गीतों के विषय में बातचीत करने लगा और हंसी हंसी में ही उसे एक नया संगीत नाटक लिखने को कहा।

"नाटक" लैम्म ने उत्तर दिया "नहीं, यह मेरे बस की बात नहीं। अब मुझ में वह कल्पना शक्ति ही नहीं रही और न ही अब कलम में वह जादू है जो नाटक लिखने के लिए चाहिए, हां यदि लिख पाऊं तो शृंगार रस की कुछ चीज लिखना चाहता हूं पर शब्द उपयुक्त होने चाहिएं।"

लैम्म चुप हो गया और देर तक आकाश की ओर आंखें उठाये निश्छल बैठा रहा।

"कुछ ऐसा हो" वह आखिर बोला "ओ तारो, ओ पवित्र सितारो"

लैवरिटस्की ने मुड़ कर उसकी ओर देखा।

"ओ तारो...तुम ऊपर नभ से, न्यायी, अन्यायी सभी को देखते हो। पर केवल पवित्र निर्मल हृदय ही...तुम्हें प्रेम कर सकता है। कुछ ऐसा होना चाहिए। "लैम्म बोला," मैं कवि नहीं, लिख नहीं सकता पर कुछ ऐसा उच्च भाव हो।"

लैम्म ने अपनी टोपी पीछे कर ली।

राती के धीमे प्रकाश में वह आगे से पीला और छोटा लग रहा था। फिर वह गुनगुनाने लगा "तुम...तुम जो प्रेम करना जानते हो...केवल तुम ही जान सकते हो...तुम प्रेमी हो...तुम पवित्र हो...बस, कुछ ऐसा ही, पर ऐसा भी नहीं।...काश, मैं कवि होता।"

"खेद है मैं भी कवि नहीं" लैवरिटस्की बोला।

"यह तो निर्मूल स्वप्न है" और लैम्म आंखें बंद कर गाड़ी के एक ओर लेट गया मानों सोने का प्रयत्न कर रहा हो।

कुछ क्षण यूँ ही बीत गए। लैवरिटस्की कान लगाये बैठा रहा।

लैम्म फिर से गुनगुनाया "तारे...पवित्र...प्रेम-लैवरिटस्की भी विचारों में डूब गया। उसका हृदय भर आया।

"वह जो तुमने फरीडोलीन का गीत लिखा है, क्रिस्टोफर लैम्म, वह सच बहुत सुन्दर है" फेदया बोला, "मेरा तो विचार है कि फरिडोलीन जब काऊन्ट की पत्नी को मिला तो उसी समय से उसका प्रेमी हो गया।"

"तुम्हें ज्यादा पता होगा। तुम्हें इन बातों का अनुभव है" लैम्म यह कह एकदम चुप होगया। उससे यह क्या भूल हो गई थी।

लैवरिटस्की ने हंसी हंसी में बात उड़ानी चाही और फिर बाहिर देखने लगा।

जब गाड़ी वैसीलिस्कोय पहुंची तो तारे धुंधले पड़ रहे थे। पूर्व में आकाश की रंगत बदल रही थी। लैवरिटस्की अतिथि को उसके कमरे में छोड़, कुरसी खींच स्वयं खिड़की के पास बैठ गया। बाहिर, दिन चढ़ने से पहिले, बुलबुल अपना अन्तिम गीत गा रही थी। लैवरिटस्की को विचार आया कि उस दिन कालीटीनों की वाटिका में भी बुलबुल गा रही थी और लिज़ा सब कुछ छोड़ उसी गीत में ही खो गई थी। उसके मस्तिष्क में लिज़ा के विचार ही आने लगे "कितनी भोली और पवित्र है लिज़ा... तारों जैसी" वह उठा और सोने को चला गया।

लैम्म बहुत देर तक संगीत की एक पुस्तक हाथ में ले कर बैठा रहा। उसके दिमाग में एक बड़ा सुन्दर गीत घूम रहा था पर लाख यत्न करने पर भी वह उसे शब्दों के बन्धन में न बांध सका।

"न मैं कवि हूं न गायक" वह निराश हो कर उठ पड़ा और पलंग पर जा सोने का यत्न करने लगा।

अगले दिन अतिथि और मेजबान दोनों वाटिका में एक बड़े पेड़ के नीचे बैठे चाय पी रहे थे।

"गुरु जी, अब तुम्हें शीघ्र ही एक विजय गान लिखना होगा," लैवरिटस्की बोला।

"क्यों"

"पाशिन और लिज़ा का विवाह होने वाला है। क्या तुमने देखा नहीं वह कैसे लिज़ा के आगे पीछे घूम रहा था। बस काम तैय्यार ही लगता है।"

"यह काम नहीं हो सकता" लैम्म बोला।

"क्यों नहीं"

"क्यों कि यह हो ही नहीं सकता" पर फिर कुछ ठहर कर वह बोला, पर संसार में कुछ भी असंभव नहीं और फिर विशेषतः रूस में तो ...।"

वह अभी बात समाप्त भी न कर पाया था कि फेद्या बोला, रूस की बात तो छोड़ो। तुम यह बताओ कि आखिर इस विवाह में बुरा क्या है।"

"बुरा—सभी कुछ बुरा है, गलत है। ऐलिजबीटा सीधी, भोली भाली बड़े उच्च और नेक विचारों वाली है। और वह बस केवल शौकीन, दिखावे वाली बातें करने वाला।

"पर वह उसे प्रेम तो करती है।"

लैम्म उत्तेजित हो खड़ा हो गया। "नहीं...नहीं प्रेम करती वह उससे। वह तो बहुत भोली है। वह तो जानती भी नहीं

कि प्रेम क्या होता है। उसकी मां मैडम कालिटीन कह देती हैं कि पाशिन बहुत अच्छा है और वह भी मां की हां में हां मिला देती है। वह बड़ी सीधी है। चाहे अब उसकी आयु तो १६ वर्ष की हो गई है पर है वह निरी बालिका। वह तो प्रातः सांझ तीनों समय पूजा पाठ करने वाली है। भला वह पाशिन से कैसे प्रेम कर सकती है। पाशिन की तो आत्मा सुन्दर नहीं।"

लैम्म यह सब बड़ी जल्दी जल्दी कह गया।

"प्रिय महोदय" लैवरिटस्की ने हंस कर कहा "मुझे तो लगता है कि तुम लिज़ा से प्रेम करते हो।"

लैम्म चलता चलता खड़ा हो गया।

"फेदया, मेरी हंसी मत उड़ाओ। मैं इतना मूर्ख नहीं हूँ। मेरे लिए अब कोई सुनहला भविष्य नहीं। मैं तो बस अपने अंधेरे बीते दिनों को ही देखता हूँ।"

लैवरिटस्की को बहुत दुख हुआ कि उसने व्यर्थ ही वृद्ध लैम्म का हृदय दुखाया। उसने लैम्म से अपनी धृष्ठता के लिए क्षमा मांगी।

चाय के बाद लैम्म ने एक गीत गाया।

पर खाना खाते समय उसने फिर लिज़ा की ही बातें शुरू कर दीं।

कुछ देर ध्यान से सुनने के बाद लैवरिटस्की बोला "अब यहाँ घर भी ठीक हो गया है। वाटिका में भी खूब फूल खिले हैं। क्या ही अच्छा हो यदि एक दिन के लिए लिज़ा, उस की माँ और वृद्धा बूआ को यहां बुलायें तो—कहो तुम्हारा क्या विचार है।"

लैम्म झुक के खाना खाने लगा।

"हाँ, ठीक है" वह धीरे से बोला।

"पाशिन से भी छुटकारा होगा।"

"यह बहुत ठीक है" लैम्म बड़ी प्रसन्नता से बोली। दो दिन बाद फोयडोर लैवरिटस्की शहर गया।

वे सब घर पर ही थे। पर लैवरिटस्की ने कुछ न कहा। उसने सोचा कि पहिले लिजा से पूछ लूँ फिर बात करूँगा। कुछ समय बाद वह और लिजा अकेले ही बैठक में रह गये। ...वह बात चीत करने लगे। अब तक लिजा से काफी जान पहिचान हो चुकी थी। वैसे तो वह स्वभाव से ही बहुत लज्जाशील न थी पर अब वह लैवरिटस्की से जरा भी नहीं शर्माती थी। फेदया लिजा की बातें सुनता रहा। उसे देख कर उस को लैम्म की बात याद आ गई। लैम्म सच ही तो कहता था कि वह बहुत भोली है। कभी-कभी यूँ होता है कि हम चाहे किसी व्यक्ति को बहुत न जानते हों फिर भी उस से कुछ आत्मीयता, कुछ अपनापन सा हो जाता है। यूँ ही लिजा और फेदया में हो गया। लिजा कहने लगी कि बहुत देर से वह उससे कुछ पूछना चाहती थी पर पूछते झिझकती थी कि कहीं वह बुरा न मान ले।

"घबराओ मत–कहो" लैवरिटस्की उस के पास आ खड़ा हो गया। अपनी निर्मल आँखें ऊपर उठा लिजा बोली,

"तुम इतने अच्छे हो...सच तुम बहुत अच्छे हो।...फिर...

मुझे पूछना तो नहीं चाहिए...पर फिर तुम ने...अपनी पत्नी को क्यों छोड़ दिया ?"

लैवरिटस्की चुप सा उसके पास बैठ गया ।

"तुम अभी बच्ची हो, लिज़ा । मेरे घावों को मत छेड़ो। तुम्हारे हाथ कोमल हैं पर फिर भी चोट लगती है ।"

"मैं सब जानती हूँ" बात अनसुनी सी कर लिज़ा बोली, "उस ने तुम्हें बहुत दुःख दिया है। पर फिर भी भगवान के बांधे इस बँधन को भला मनुष्य कैसे तोड़ सकता है ?"

"लिज़ा," लैवरिटस्की ने कहा "इस विषय पर हमारे विचार एक दूसरे से इतने भिन्न हैं कि तुम मेरी बात समझ ही नहीं सकोगी ।"

लिज़ा का मुँह पीला हो गया । आवेगवश उसका शरीर कांप उठा । "तुम्हें सब कुछ क्षमा कर देना चाहिए यदि तुम भगवान से क्षमा चाहते हो तो"

"क्षमा" लैवरिटस्की बोला, "तुम्हें पता तो होना चाहिए किस व्यक्ति के लिए तुम क्षमा की याचना कर रही हो। उस स्त्री को मैं क्षमा कर दूँ—उसे मैं अपने घर में रख लूँ—उस हृदय-हीन नीच स्त्री को। पर वह आना ही कब चाहती है...वह तो वहाँ बहुत प्रसन्न है। ये बातें करना ही फिजूल है । और तुम्हें तो उसका नाम तक भी नहीं लेना चाहिए। तुम जो इतनी पवित्र हो—तुम जान भी नहीं सकती कि वह कितनी नीच है ।"

"उसे ऐसा बुरा भला मत कहो" लिज़ा के हाथ काँप रहे थे। "तुम ने स्वयं ही तो उसे छोड़ा था ?"

"तुम जानती तो हो नहीं वह है कैसी लैवरिटस्की खीझ उठा और खड़ा हो गया।

"फिर तुमने उससे विवाह क्यों किया था...विवाह मैंने इस लिए किया था कि मैं भोला था, बच्चा था, बस सुन्दरता देख फिसल गया। स्त्रियों को तो मैं बिल्कुल ही नहीं जानता था। ईश्वर करे तुम्हारा विवाह अच्छा हो पर मैं सच कहता हूं पहिले कुछ नहीं कहा जा सकता।"

"मेरे भी भाग्य में शायद यही हो" लिज़ा की आवाज़ भरीई हुई थी "पर जो भी भाग्य में हो उसे स्वीकार करना चाहिए।

लैवरिटस्की ने जोर से पैर ज़मीन पर मारा।

"मुझे क्षमा कर दो। इतना क्रोध न करो" लिज़ा बोली।

उसी समय मारया मित्रविना ने कमरे में प्रवेश किया। लिज़ा जाने को उठ खड़ी हुई।

"एक मिनट ठहरो", लैवरिटस्की बोला। "मुझे तुम दोनों से कुछ प्रार्थना करनी है। एक दिन आप सब आ कर मेरे घर को पवित्र करें मैंने नया पियानो लिया है—लैम्म भी वहीं है। फूल खूब खिले हैं। एक दिन आइए देहात की वायु भी अच्छी होती है बस उसी दिन लौट आइएगा।

लिज़ा ने माँ की ओर देखा तो मारया मित्रविना ने गम्भीर सा मुँह बना लिया। पर लैवरिटस्की ने उसे सोचने का समय ही न दिया। उसने उसके दोनों हाथ चूम लिए। मारया बिचारी ऐसी बातों से शीघ्र ही प्रसन्न हो जाती थी और फिर ऐसे गंवार से शिष्टाचार की आशा ही कहां थी। वह एकदम मान गई। अभी वह सोच ही रही थी कि कौन सा दिन पक्का किया जाय कि

लैवरिटस्की लिज़ा के पास जा धीरे से बोला "धन्यवाद, तुम बहुत अच्छी हो। मुझे अफसोस है——लिज़ा का पीला मुख लाल हो गया और वह हंस पड़ी। उसे डर था कि कहीं फेदया ने बुरा न मान लिया हो।

"पाशिन भी हमारे साथ आ जाए," मारया मित्रविना ने पूछा

"क्यों नहीं" लैवरिटस्की ने उत्तर दिया "पर यदि केवल घर के ही लोग हों तो क्या ज्यादा ठीक न रहेगा।

"पर—खैर जैसी तुम्हारी इच्छा।"

अन्त में लिनोचका और शरूचका को भी साथ ले जाने का फैसला हुआ। मारफा टिमोफीना ने न कर दी।

"मुझे क्षमा करना, वह बोली" "अब मैं बहुत बूढ़ी हो गई हूं नई जगह पर सो भी नहीं सकती। तुम बच्चे बच्चे जाओ।"

लैवरिटस्की को लिज़ा से बात करने का फिर समय न मिल सका। पर उसकी नजर से ही लिज़ा सब समझ गई। जाते समय फेदया ने केवल उसका हाथ दबाया। बाद में बहुत देर तक वह विचारों में डूबी रही।

जब लैवरिटस्की घर पहुंचा तो दरवाज़े पर ही उसे एक लम्बा पतला सा आदमी मिला। उसका नीला कोट बहुत पुराना हो गया था...तेजस्वी मुख पर झुर्रियां पड़ने लगी थीं बाल बिखरे हुए, लम्बी सी नाक और छोटी छोटी सूजी हुई आंखें थीं। यह मिखेलोविच था उसका पुराना कालिज का सखा। पहिले तो लैवरिटस्की ने उसे पहिचाना ही नहीं पर जब उसे पता लगा तो

उसने मिखैलोविच को बहुत प्रेम से बाहुपाश में बांध लिया। बहुत दिनों के बाद वे मिले थे। प्रश्नों की झड़ी लग गई। भूली बिसरी बातें फिर से याद आ गई। सिगरट पर सिगरट फूँकते हाथ में चाय का प्याला लिए मिखैलोविच बांहें फैला फैला अपनी बातें लैवरिटस्की को सुना रहा था।

उसके जीवन में कोई भी विशेष कथनीय घटना न हुई थी पर फिर भी वह खूब बोलता और हंसता रहा। एक महीना हुआ उसे किसी बड़े ज़मीदार के यहां काम मिला था और वहीं से, नगर से कोई २०० मील परे, फेद्या के विदेश से लौटने का समाचार सुन, वह अपने मित्र को मिलने आ रहा था। अभी भी मिखैलोविच ऐसे ही उत्साह से बात चीत करता था जैसे युवावस्था में कालिज में किया करता था।

लैवरिटस्की ने कुछ अपना हाल सुनाना चाहा पर मिखैलोविच ने उसे बीच में ही टोक दिया "मैं सब जानता हूं, मित्र। मैंने सब सुना है। कभी स्वप्न में भी विचार न था कि ऐसा होगा और उसने दूसरी बातें छोड़ दी।

"कल मैंने चले जाना है" वह बोला, आज यदि तुम मानों तो बहुत देर तक बैठ के बातें करेंगे। मैं देखना चाहता हूं, तुम कैसे हो गए हो, तुम्हारे विचार कैसे हैं, जीवन में तुमने क्या सीखा है। मैं तो एक तरह से काफी बदल भी गया हूं और मेरे वैसे ऊपर से ही मानों जीवन की लहरें बह गई हैं, मैं वैसे का वैसा ही हूं। अभी भी मुझे सत्य में और मनुष्य की मनुष्यता में विश्वास है। केवल विश्वास ही नहीं श्रद्धा है। तुम तो जानते ही हो मैं थोड़ी बहुत कविता लिखा करता था। मेरी कविता में बहुत सुन्दरता चाहे न हो पर सत्य अवश्य है। मैं

तुम्हें अपनी सब से पिछली कविता सुनाता हूं।" मिखैलोविच ने बोलना शुरू किया। कविता काफी लम्बी थी। उसकी अन्तिम दो लाईनें यूँ थी।

"मेरे हृदय में नित नई उमंगें हैं।
"मैं बालकों सा हो गया हूं।
"मैंने सब आराध्यों को फूँक दिया है।
"और जो फूँके थे उनकी पूजा करता हूँ।"

पिछली दो पंक्तियां कहते कहते मिखैलोविच की आंखों में पानी भर आया, उसके होंठ कांपने लगे, उसका मुख चमक उठा। लैवरिटस्की बहुत देर तो चुपचाप बैठा सुनता रहा पर फिर वह तंग आ गया। यह क्या बक बक है—न जाने क्यों अभी भी इसमें विद्यार्थीयों सा फिजूल उत्साह है।

मुश्किल से १५ मिनट बीते होंगे कि उन में वादविवाद होने लगा और वह भी ऐसा जो केवल रूसीयों में ही होता है। इतने वर्षों के बाद, एक दूसरे से बिल्कुल अलग प्रकार का जीवन व्यतीत कर, अनजान से वह दार्शनिक विषयों पर यूं तर्क करने लगे मानों जीवन इसी वाद विवाद पर ही निर्भर हो। वह इतनी जोर से बोलते और झगड़ते कि घर में सभी हैरान हो गये। वृद्ध लैम्म बिचारा तो बिल्कुल ही घबरा गया।

"तो फिर तुम क्या हो, अविश्वासी, नास्तिक।" आधी रात गए मिखैलोविच कह रहा था।

"तुम्हें मैं अविश्वासी दिखता हूं" लैवनिटस्की ने उत्तर दिया, "यदि यह बात होती तो मैं पीला, रोगी सा होता। कहो, तो तुम्हें अब भी एक हाथ से उठा लूँ।"

"तुम अविश्वासी नहीं तो क्या फिर नास्तिक हो। यह उससे भी बुरी बात है। पर तुम क्यों ऐसे हो। माना कि भाग्य ने तुम्हारा साथ नहीं दिया। स्वभाव से तुम भावुक थे, प्रेमी थे। बचपन से ही जबरदस्ती तुम्हें स्त्रियों से परे रखा गया और फिर जिस पहिली स्त्री से तुम्हारा वास्ता पड़ा उसी ने तुम्हें बेवकूफ बना दिया।"

"तुम्हें भी तो उसने मूर्ख बना दिया था" गम्भीर हो लैवरटस्की बोला।

"ठीक है भाई, ठीक है। मैं मानता हूं कि किस्मत के हाथों मैं भी एक बेवकूफ बन गया। हाँ, पर तुम यह तो बताओ कि इन सब बातों से क्या साबित हुआ।"

"साबित यह हुआ कि मुझे बचपन से ही दबा-दबा कर निःशक्त कर दिया गया था"

"तो तुम अपने आप को ठीक करलो। पुरुष हो तुम। क्या तुम्हारे में इतनी शक्ति भी नहीं है"

कुछ देर बाद वह फिर बोला

"हाँ, ऐसी विशेष स्थितियों से सामान्य नियम तो नहीं बनाया जा सकता।"

"यह तुम क्या कह रहे हो? मैं यह स्वीकार करने को तैय्यार नहीं" लैवरिटस्की बोल पड़ा।

एक घन्टे बाद भी वैसी ही बातें चल रही थीं।

"तुम स्वार्थी हो, पक्के स्वार्थी। तुम संसार में प्रसन्नता ढूँढते थे, तुम ऐश्वर्य ढूँढते थे। तुम बस केवल अपने लिए ही जीना चाहते थे" मिखैलोविच कहता जा रहा था।

"भई, इसमें कौन सा ऐसा स्वार्थ है। सब यही चाहते हैं"

"और अब तुम्हारा कोई ठिकाना नहीं। रेत पर तुमने जो घर बनाया था वह अब गिर गया है"

"ज़रा ठीक तरह बातें करो" लैवरिटस्की बोला "यह क्या उपमाएँ दे रहे हो। मुझे समझ नहीं आ रहा।"

"अच्छा तो फिर सुनो—चाहे बाद में तुम हँसोगे ही। बात यह है कि तुम में श्रद्धा नहीं, विश्वास नहीं। तुम्हारे हृदय नहीं है बस केवल बुद्धि ही है—केवल रूखी कोरी बुद्धि—तुम भी वाल-टेयर के शिष्य ही निकले"

"मैं—वालटेयर का शिष्य"

"हाँ हाँ—तुम बिल्कुल अपने पिता जैसे हो चाहे तुम्हें स्वयं यह पता न हो"

"फिर मैं भी यह कहूँगा कि तुम पागल हो, निरे पागल हठधर्मी।"

"काश मैं होता पागल और हठधर्मी। पर अभी मैं इस उच्च दशा तक कहाँ पहुंचा हूँ" मिखैलोविच आह भर के बोला।

"अब मुझे पता लगा है तुम क्या हो" प्रातः दो बजे मिखै-लोविच कह रहा था "तुम न अविश्वासी हो, न नास्तिक हो, तुम हो आलसी—परले दरजे के आलसी।—पर हाँ ज़रा पढ़े लिखे आलसी। जो तुम्हारे जैसे आलसी अनपढ़ और गँवार होते हैं, वह यूँही हाथ पैर मारा करते हैं क्योंकि उन्हें कोई और काम आता ही नहीं—वह बिचारे कुछ सोच भी नहीं सकते। पर तुम इतने विचारशील, बुद्धिमान होकर भी कुछ कर नहीं रहे। तुम बस ऐसे ही पड़े हो। पेट भर खा लिया और सोच लिया कि मनुष्य के हाथ में तो कुछ है ही नहीं—यही होना था"

"पर तुम्हें यह किसने कहा है कि मेरे ऐसे विचार हैं और मैं आराम से पड़ा हुआ हूँ" लैवरिटस्की ने कहा।

"मैं सब जानता हूँ। तुम सब के सब ऐसे ही होते हो। पढ़े लिखे, नपुंसक, आलसी। तुम्हें बस यह पता है कि जर्मनी में क्या त्रुटियाँ हैं और अँग्रेजों और फ्राँसीसियों में कौनसी न्यूनता है और ऐसे ही खोखले से ज्ञान के सहारे तुम सारा जीवन काट देते हो—तुम्हारे जैसे इस बात को ही सोच कर प्रसन्न रहते हैं कि अहा, हम कितने समझदार हैं—आराम से बैठे हैं जब कि मूर्ख लोग व्यर्थ में ही हाथ पैर मार रहे हैं। सच, हमारे में कई ऐसे हैं, क्षमा करना मैं तुम्हें नहीं कह रहा जो अपना सारा जीवन ऐसे ही काट देते हैं। यह आलस्य की घोर निद्रा हमारी रूसियों की मृत्यु का और पतन का कारण बन रही है। आलसी सदा सोचता रहता है कि अब यह करूँगा पर........."

"क्यों इतने गरम हो रहे हो, विद्वान जी" लैवरिटस्की जोर से बोला, "बातें करनी बहुत आसान होती हैं। बताओ न हम करें तो क्या करें।"

"अच्छा, यह बात है। भला मैं तुम्हें क्या बताऊँ। यह तो हर व्यक्ति को आप ही सोचना पड़ता है।" मिखैलोविच व्यंगपूर्ण हँसा और बोला "भाई, तुम इतने बड़े रईस और जमींदार और तुम्हें यह पता नहीं लगता कि क्या करो, क्या न करो। जिसमें विश्वास न हो भला उसे ज्ञान कहाँ से आए।"

"भई, मुझे जरा सांस लेने का तो समय दो। अभी तो लौट के आया हूँ। जरा देख भाल तो लूँ सब कुछ।"

"सांस लेने के लिए समय ही कहाँ है—मृत्यु किसी के लिए नहीं ठहरती फिर भला जीवन ही क्यों ठहरे।"

प्रातः चार बजे तक बातें चल रही थीं "आज हम रूसी यदि आलसी बन जायें तो बड़ी शरम की बात है। आज हमको अपना कर्तव्य पूरी तरह निभाना चाहिए—अपने देश की ओर, अपनी ओर और अपने भगवान की ओर। हम सो रहे हैं और समय बीत रहा है"

"हम कहाँ सो रहे हैं" लैवरिटस्की बोला "हम तो औरों को भी नहीं सोने दे रहे। हम तो दो मुर्गों की भाँति लड़ रहे हैं। यह लो बाहर एक तीसरा भी बोल पड़ा" इस बात से मिखैलोविच हँस पड़ा।

"अच्छा तो फिर कल तक प्रणाम" वह अपनी सिगरेट एक ओर कर उठ खड़ा हुआ।

"अच्छा भाई प्रणाम" लैवरिटस्की भी उठ पड़ा पर बातें करते-करते एक और घन्टा बीत गया। हाँ, अब उनकी आवाजें इतनी ऊँची नहीं जा रही थीं। बातचीत का विषय भी बदल गया था। अब वह धीरे धीरे मन की बातें कर रहे थे।

लैवरिटस्की के लाख कहने पर भी मिखैलोविच अगले दिन चला ही गया। फेदया उसे रोक न सका। हाँ, उन्होंने जी भर बातें कर लीं थी। मिखैलोविच बड़ा दरिद्र था। उसके पास एक कौड़ी भी न थी। लैवरिटस्की ने आते ही उसकी दरिद्रता के चिन्ह देख लिए थे। उसके जूतों की ऐड़ियाँ बिल्कुल घिस चुकी थीं—कोट में पूरे बटन नहीं थे—हाथों से देख लगता था कि दस्ताने कभी पहिने ही नहीं। मिखैलोविच ने आकर मुँह हाथ भी नहीं धोया था वैसे ही जल्दी हाथों से तोड़ भोजन के बड़े-बड़े कौर मुँह में डालता गया था। सरकारी नौकरी से उसका कुछ न बना था। अब वह इस धनी जमींदार पर आशा लगाए बैठा था।

पर यह सब होते हुए भी मिखैलोविच के विचार बड़े उच्च थे। अभी भी वह आदर्शवादी और कवि था। अपना पेट चाहे भरे न भरे पर उसे सारे जग का फ़िकर लगा था। मिखैलोविच अभी तक कुवाँरा था। विवाह उसने नहीं किया था। हाँ, प्रेम तो कईयों से किया था। अपनी सब प्रेमिकाओं के लिए उसने कवितायें भी लिखी थीं। एक बहुत सुन्दर कविता उसने किसी काले बालों वाली अपनी पोलिश प्रेमिका के लिए लिखी थी। कहा जाता था कि वह "पोलिश सुन्दरी" कुछ ऐसी वैसी ही थी और फौज के अफ़सर प्रायः उसके यहाँ जाया करते थे पर भला मिखैलोविच को इन बातों से क्या फ़रक पड़ता था।

लैम्म को मिखैलोविच तनिक न भाया। विचारा वृद्ध जर्मन उसके ऊँचे बोल से ही घबरा गया। फिर भला दो भिखारियों की भी कभी बनी है !

जाने से पहिले मिखैलोविच ने फिर जी भर कर लैवरिटस्की से बातें कीं। "तुम्हारा नाश होने वाला है। अभी से संभल जाओ। यदि किसानों की अच्छी तरह देख भाल न करोगे तो तुम्हारा कुछ भी नहीं रहेगा।" "मेरी ओर ही देखो," वह बोला, "मैंने अपने आप को विपत्तियों की कठिन अग्नि में पवित्र किया है और अब मैं बहुत प्रसन्न हूँ। हवा में उड़ने वाले पक्षियों और फूलों की तरह मैं प्रसन्न हूँ।"

"तुम—फूल" लैवरिटस्की हँस पड़ा।

"छोड़ो भी—घमण्ड न करो। शुकर करो भगवान का कि तुम्हारी नसों में भी जन साधारण का पवित्र लहू है। अब तो बस किसी देवी की आवश्यकता है जो तुम्हें इस अन्धकार से खींच निकाले।"

"धन्यवाद, सखा !" लैवरिटस्की बोला, "इन देवियों से तो अब मैं परे ही अच्छा हूँ !"

"चुप रहो, आलस्यवासी"

गाड़ी में बैठता बैठता भी मिखैलोविच बोल रहा था। उसके पास एक छोटा सा पतला सा थैला था और एक बड़ा सा विदेशी ढंग का कोट। वह जोर-जोर से हाथ हिला रूस के भविष्य के विषय में कुछ कह रहा था। घोड़े आखिर चल दिए "मेरे अन्तिम शब्द याद रखना, "उसने मुँह बाहर निकाल कर कहा," "धर्म, उन्नति, मानवता अच्छा प्रणाम।" और वह चल दिया। जब तक गाड़ी दिखाई देती रही लैवरिटस्की वहीं खड़ा रहा। घर लौटते हुए वह सोचता गया कि सच ही तो कहता है मिखैलोविच, मैं आलसी ही तो हूँ ! चाहे लैवरिटस्की उसके साथ कितना ही झगड़ता रहा था पर मिखैलोविच के शब्द उसके हृदय में घर कर गए। भला सत्य के आगे कौन नहीं झुकता !

प्रतिज्ञानुसार दो दिनों बाद मारया बच्चों सहित वैसीलीस्कोय आ गई। छोटी लड़कियां तो सीधी वाटिका में भाग गईं और मारया घर के सब कमरे आदि देखने लगी। उसकी बातचीत से यूँ लगता था मानों यहां आकर उसने लैवरिटस्की पर बड़ा एहसान किया है। एण्टन और ऐपरैक्सीया ने पुराने नौकरों की तरह झुक कर अभिवादन किया और मारया का हाथ चूमा। मारया ने बड़ी थकी हुई, धीमी सी आवाज में चाय माँगी। [illegible] बड़ी इच्छा थी कि वह स्वयं इस भद्र महिला की सेवा

करे पर लैवरिटस्की का दूसरा कोई नौकर चाय ले आया। जब भोजन का समय आया तो एएटन डट कर मारया की कुरसी के पीछे खड़ा हो गया और स्वयं ही उस की सब मांगें पूरी कीं। उसे यह देख बड़ी प्रसन्नता हो रही थी कि उस के मालिक के ये मित्र कितने सभ्य हैं। लैम्म भी उस दिन बड़ा प्रसन्न था। अच्छे-अच्छे कपड़े और नया गुलूबन्द पहिने वह भी अतिथियों में घूम रहा था। लैवरिटस्की को यह देख बड़ी खुशी हो रही थी कि उसके और लिज़ा के बीच बड़ी आत्मीयता सी, बड़ा अपनापन सा हो गया था। लिज़ा आते ही हाथ बढ़ा कर बड़े प्रेमपूर्वक उससे मिली थी।

लैम्म बड़ी देर से अपनी जेबें टटोल रहा था। भोजन के बाद उसने एक कागज़ का टुकड़ा जिस में एक नया गीत लिखा था, खोल कर पियानो पर रख दिया। लैम्म ने यह प्रणाय गीत पिछली ही शाम को लिखा था। उसके बहुत से शब्द किसी पुराने जर्मन गीत के थे, कहीं-कहीं तारों की चर्चा भी थी। लिज़ा पियानो पर बैठ गीत गाने लगी। पर गीत कुछ कठिन सा था। उसमें बहुत वलफेर थे। गायक ने बहुत गहरी भावनाएँ व्यक्त करनी चाही थीं पर कुछ बात न बनी थी। यत्न था पर फल कुछ न था। लैवरिटस्की और लिज़ा दोनों ने यह अनुभव किया और लैम्म भी जल्दी समझ गया। गीत जिस कागज़ पर लिखा था उसे उठा कर, जेब में डाल, लिज़ा के बहुत कहने पर भी वह चुप हो एक ओर बैठ गया।

दोपहर बाद सब के सब मछलियाँ पकड़ने गये। वाटिका के साथ नाले में कई प्रकार की छोटी बड़ी मछलियाँ थीं। मारया मित्रविना के लिए वहाँ किनारे के पास एक कुरसी रख

दी गई और उसके पैरों में एक दरी, मछली पकड़ने का सब से बढ़िया जाल भी उसे दिया गया और एण्टन जो अपने आप को बड़ा मछेरा समझता था उसके पास उसकी सहायता के लिए खड़ा हो गया। वह कभी जाल को इधर करता और कभी उधर। मतलब यह कि वह अपना पूरा ध्यान लगा मारया को प्रसन्न करने का यत्न कर रहा था। लैम्म दोनो छोटी लड़कियों को ले नीचे बाँध की तरफ चला गया और लैनरिटस्की लिज़ा के पास रह गया।

इधर उधर मच्छियाँ पकड़ने के लिए जाल फेंके जा रहे थे और लिनोचका और शिरुचका प्रसन्नता के मारे चीख रही थीं। कभी-कभी मारया मित्रविना भी उत्तेजित हो धीरे से चिल्ला देती। लैवरिटस्की और लिज़ा ने सब से कम मच्छियाँ पकड़ीं। उनका पूरा ध्यान ही उस ओर न था। उनके जाल आप ही धीरे धीरे खिसक के किनारे के पास आ जाते। आस पास की लम्बी लम्बी घास हवा के झोंकों से हिल रही थी। तालाब का पानी भी हवा की लहरों से चमक रहा था। लैवरिटस्की और लिज़ा वहां बैठे धीरे-धीरे बातें कर रहे थे। लिज़ा एक लकड़ी पर खड़ी थी और लैवरिटस्की पेड़ के झुके हुए तने पर बैठा मन्त्र-मुग्ध सा उसकी ओर देख रहा था। लिज़ा ने आज बिल्कुल श्वेत वस्त्र पहिने थे। उसके एक हाथ में टोपी थी और दूसरे में जाल की रस्सी। उसके बाल पीछे की ओर खिंचे हुए थे। सूर्य्य की किरणें उसके गालों को चूम रही थीं। लिज़ा दूसरी ओर देख रही थी और उस की आंखें ऐसे लगती थीं जैसे हंस रही हों।

"कितनी भली लगती हो तुम मेरे तालाब के पास खड़ी।"

लैवरिटस्की ने सोचा और कहने लगा "जब से तुम्हारे साथ बात चीत की है, सोचता हूँ कि तुम कितनी अच्छी हो।

"मैं नहीं चाहती थी कि तुम ऐसा समझो" लिज़ा कहने लगी पर शरमा गई।

"तुम बहुत अच्छी हो।" लैवरिटस्की ने कहा, "मैं हूँ तो गंवार ही पर मैं भी समझ सकता हूँ क्यों तुम सब को इतनी अच्छी लगती हो।—जानती हो लैम्म भी तुम से प्रेम करता है।"

लिज़ा के माथे पर बल पड़ गए—मानों बात अच्छी न लगी हो।

"आज मुझे उस पर बहुत तरस आ रहा था, उस पर और उसके गीत पर।" लैवरिटस्की बोला, "युवावस्था में ऐसी न्यूनताएँ ऐसी त्रुटियाँ नहीं खटकतीं पर वृद्धावस्था में यह देखकर बड़ा खेद होता है। सब से बुरी बात तो यह है कि मनुष्य को स्वयं पता नहीं लगता कि उसकी शक्ति कितनी क्षीण हो चुकी है।—वह—वह देखो मछली।"

थोड़ी देर बाद वह बोला "सुना है पाशिन ने एक बहुत सुन्दर गीत लिखा है।"

"हाँ, है तो छोटा सा पर बुरा नहीं है"

"तुम्हारा क्या विचार है," लैवरिटस्की ने पूछा, "क्या वह अच्छा गाता है?"

"हाँ, उसे संगीत की बड़ी समझ है, पर वह इस ओर ज्यादा ध्यान नहीं देता।"

"अच्छा। वैसे वह कैसा आदमी है?"

लिज़ा हंस पड़ी और उस की ओर देखने लगी।

"कैसी अजीब बात करते हो?" वह जाल फेंक कर बोली

"क्यों, अजीब क्या है। मैं अभी अभी यहां आया हूं और फिर मैं तुम्हारा संबंधी हूं"

"संबंधी"

"हां, शायद तुम्हारा मामा लगता हूं"

"पाशिन बहुत उदार चित्त है और बहुत लायक व बुद्धिमान है। मां को वह बहुत अच्छा लगता है।"

"तुम्हें अच्छा लगता है या नहीं ?"

"वह बहुत भला आदमी है—मुझे कैसे न अच्छा लगे।"

और लैवरिटस्की चुप हो गया। उसके मुख पर खेद और साथ साथ घृणा का भाव आ गया। चुपचाप वह लिज़ा की ओर देखता रहा।

"ईश्वर करे तुम सदा प्रसन्न रहो" और उसने दूसरी ओर मुँह मोड़ लिया।

लिज़ा का मुंह लज्जा से लाल हो गया।

"फेदया तुम्हें गलती लग रही है तुम क्या समझते हो.... अच्छा क्या तुम्हें पाशिन अच्छा नहीं लगता, लिज़ा ने पूछा।"

"नहीं।"

"क्यों ?"

"क्यों कि उसके हृदय नहीं है।"

लिज़ा के मुख से मुस्कान उड़ गई।

कुछ ठहर के वह बोली "तुम बहुत कठोर हो।"

"भला मैं कैसे कठोर हो सकता हूं। मैं तो स्वयं जग से तरस और दया मांगता हूं। क्या तुम्हें भूल गया है कि मुझ पर तो सभी हंसते हैं। और हां...तुमने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की थी ?"

"कौनसी प्रतिज्ञा ?"

"मेरे लिए प्रार्थना की थी ?"

"हां, की थी, मैं तो रोज ही तुम्हारे लिएप्रार्थना करती हूं। पर इस बात की हंसी मत उड़ना।"

लैवरिटस्की उसे समझाने लगा कि वह कभी भी ऐसी बातों की हंसी नहीं उड़ाता। उसे दूसरे के विचारों के लिए बड़ी इज्जत है। फिर वह बहुत देर तक धर्म के महत्व और उसके मानव इतिहास पर प्रभाव आदि के विषय में बातें करता रहा।

"मनुष्य को भक्त होना ही पड़ता है। इस लिए कि आखिर सब को मरना है" लिजा बोली।

लैवरैटस्की उसकी बात सुन हैरान सा हो गया।

"यह क्या कहा तुमने ?"

"शब्द कोई मेरा अपना तो नहीं।"

"पर तुम्हें मृत्यु का विचार कहां से आया ?"

"न जाने क्यों मुझे बहुत बार यह विचार आता है।"

"बहुत बार।"

"हां"

"तुम्हें देख कर, तुम्हारा हंसता हुआ प्रसन्न मुख देखकर कौन मान सकता है कि तुम्हें ऐसे विचार आते हैं।"

"हां, आज मैं बहुत प्रसन्न हूं।" लिजा ने भोले भाव से कहा।

लैवरिटस्की का दिल चाहा कि उस के दोनों हाथ अपने हाथों में ले दबा लूँ।

"लिजा, लिजा" मारया मित्रविना बोली, "देखो, गत्रिना इधर मैंने मच्छी पकड़ी है।"

"आ रही हूं, मां" लिजा ने उत्तर दिया और लैवरैटस्की को वहीं बैठा छोड़ मां की ओर चली गई।

"कितना मोह हो गया है इससे। मैं तो यूँ बातें कर रहा हूं जैसे आगे जीवन काट नहीं चुका" लैव्ररिटस्की सोचने लगा। जाने से पहिले लिज़ा अपनी टोपी वहीं छोड़ गई थी। लैव्ररिटस्की उसको बहुत देर तक देखता रहा मानों उस टोपी से, उसके कुचले हुए रिबनों से भी प्रेम हो गया हो। लिज़ा फिर लौट के वहीं आ गई।

"तुम क्यों कहते हो कि पाशिन हृदयहीन है ?"

"पता नहीं। शायद मेरा विचार गलत ही हो पर समय ही बतायेगा।"

लिज़ा विचारों में खो गई।

लैव्ररिटस्की फिर बातें करने लगा अपने एकाकी जीवन की, अपने मित्र मिखैलोविच की, एण्टन की। उसका जी कर रहा था कि जी भर बातें करले लिज़ा से, इतने ध्यान से जो सुनती है वह और फिर बड़ा उचित एक आध शब्द बोल देती है आखिर उसने कह ही दिया "तुम बहुत स्यानी हो लिज़ा।"

लिज़ा हैरान हो गई।

"मैं स्यानी" वह बोली," मैं तो सदा यही समझती रही हूं कि अपनी दासी नसटास्या की तरह मैं भी कोई बात नहीं कर सकती। एक बार नसटास्या ने अपने मंगेतर से कहा था कि तुम मुझ से तंग आजाओगे। तुम तो इतने चतुर हो और मैं कुछ कह ही नहीं पाती। बस वही हाल मेरा है।"

"यह भी अच्छा ही है, लैवरिटस्की सोचने लगा।

शाम हो गई थी। मारया मित्रविना कहने लगी कि अब घर लौटना चाहिए। छोटी लड़कियों को तो तालाब से खींचना ही पड़ा, वह खेल में इतनी मग्न थीं। लैवरिटस्की ने अपना घोड़ा तैय्यार करवाया और अतिथियों को आधे रास्ते तक छोड़ने चल पड़ा। जब वह सब गाड़ी में बैठ रहे थे तो उसे एकदम लैम्म का ध्यान आया। "कहाँ है वह" उसने बहुत ढूँढा पर लैम्म का कहीं पता न लगा। ऐएटन ने जोर से गाड़ी का दरवाजा बंद किया और कोचवान को चलने को कहा। गाड़ी चल पड़ी। मारया मित्रविना और लिज़ा पिछली सीट पर बैठीं और लिनोचका, शुरुचका दासी सहित आगे बैठ गईं। सांझ बड़ी सुहावनी थी। खिड़कियों के परदे उठा दिए गए। लैवरिटस्की घोड़े पर चढ़ लिज़ा के पास की खिड़की के साथ-साथ चल पड़ा। घोड़े की लगामें उसने ढीली छोड़ दीं और एक हाथ गाड़ी पर रखे, लिज़ा से बातें करता वह चलता गया। सूर्यास्त हो रहा था। आकाश से लालिमा विलीन हो गई थी और रात्रि का अन्धकार फैल रहा था पर वैसी ही सुहानी, ऊष्ण वायु बह रही थी। मारया को नींद आने लगी और थोड़ी देर में दोनों छोटी लड़कियाँ और उनकी दासी सभी सो गईं। गाड़ी खूब तेज जा रही थी, ऊपर आकाश में चाँद भी निकल आया था। लिज़ा ने बाहर मुँह निकाल के देखा। आज वह बहुत प्रसन्न थी। चाँदनी में उसका मुख खिला हुआ लग रहा था। सुन्दर ऊष्ण समीर उसे पंखा झल रही थी। गाड़ी के दरवाजे पर उसका हाथ लैवरिटस्की के हाथ के साथ ही

रखा था। और लैवरिट्स्की की खुशी का ठिकाना ही न था। लिज़ा के सुन्दर मुख को देखते, उसकी बातें सुनते, वह भूल गया कि मार्ग आधे से अधिक समाप्त हो चुका है। मारया मित्रबिना को जगाना उसने ठीक न समझा। लिज़ा का हाथ अपने हाथ में ले वह बोला "तो हम अब मित्र हैं न।" अपना घोड़ा उसने खड़ा कर दिया, गाड़ी ऊँची नीची सड़क से होती अपने रास्ते चली गई।

लैवरिट्स्की घर की ओर मुड़ा। ग्रीष्म की इस सुहानी रात की सुन्दरता उसके हृदय पर छा सी गई। आज चारों ओर की पुरानी देखी हुई वस्तुएं भी उसे नई नई लग रही थीं मानों एक नये ही आवरण में ढकी हुई हों। सब ओर शान्ति ही शान्ति का साम्राज्य था। पर इस धुंधले आकाश में भी दूर दूर तक सब दिखाई दे रहा था। इस चुप्पी में मानों यौवनथा और जीवन था। घोड़ा हिलता हुआ तेज तेज जा रहा था। उसकी काली परछाईं भी साथ साथ भाग रही थी। आज उसकी टापों में ही लैवरिट्स्की को एक विचित्र संगीत सुनाई दे रहे थे। हां, अर्धचन्द्र के प्रकाश में नन्हे नन्हे बादल के टुकड़े चमक रहे थे। वायु में आज कुछ अजीब जादू सा था। वह एक एक अंग को मानों आज नवजीवन प्रदान कर रही थी। लेरिवटस्की आज बड़ा खुश था। जी भर के वह आज इस सौन्दर्य का आनन्द उठाना चाहता था "अभी मुझ में बहुत कुछ है...अभी मैं दिखा दूंगा" वह गुनगुनाया। पर क्या और किसे यह उसने न कहा। घड़ी घड़ी उसे लिजा का विचार आता और वह सोचता कि भला उसे पाशिन से क्यों कर प्यार हो सकता है। काश कि वह उसे किसी और हालत में मिला होता। तो फिर ...फिर...न जाने

क्या होता। लैम्म सच ही तो कहता था। फिर उसे लिज़ा का ध्यान आया। वह कहती थी कि हंसी न उड़ाना इस बात की। बस इन्हीं विचारों में डूबता, उतराता वह चलता गया और फिर उसे मिखैलोविच की कविता का वह पद याद आ गया।

"मैं ने सब आराध्यों को फूँक दिया है
और जो फूँके थे उन की पूजा करता हूँ"

घोड़े को छांटा मार अब वह तेजी से घर की ओर चल पड़ा। घर पहुंच उसने चारों ओर जी भर देखा मानों कृतज्ञता जता रहा हो। रात्रि के सुखदायक आँचल में सारी प्राकृति सोई पड़ी थी। न जाने कहाँ से सुगन्धित पवन के झोंके आ रहे थे।

दूसरा दिन यूंही निकल गया। सवेरे ही थोड़ी वर्षा हुई। लैम्म सारा दिन माथे पर बल डाले और मुंह बंद किये यूँ फिरता रहा मानों मौन व्रत धारण किये हो। सोने के समय लैवरिटस्की कुछ फ्रैंच समाचार पत्र पढ़ने के लिए ले गया। यह अखबारें कोई दो सप्ताह से यूंही पड़ी थीं। उसने ऊपर के कागज़ फाड़ सब देखीं पर उन में कुछ विशेष समाचार था ही नहीं। वह उन्हें एक ओर रखने ही लगा था कि एकदम उसकी दृष्टि एक समाचार पर पड़ी। वह ऐसे चौंका मानों किसी ने काट खाया हो। एक अखबार में हमारे पुराने मित्र मि० जूल्स ने लिखा था

"पाठकों को यह जान कर बड़ा शोक होगा कि आकर्षक, रूसी सुन्दरी, फैशन की सम्राज्ञी मैडम लैवरिटस्की, जो कि कुछ समय पैरिस की शोभा बढ़ाती रही थीं, उनका देहान्त हो गया।

यह शोकपूर्ण समाचार मि० जूल्स को, जो कि मैडम लैवरिटस्की के बड़े मित्र थे अभी अभी ही मिला है।"

लैवरिटस्की ने कपड़े पहिने और बाहिर बाग में चला गया। दिन चढ़ गया पर वह अभी भी बाहिर ही घूम रहा था।

अगले दिन प्रातः चाय के समय लैम्म ने वापिस शहर लौटने की इच्छा प्रकट की "काफी समय गँवाया है यहाँ, अब मुझे वापिस जा कुछ काम करना चाहिए" वह कहने लगा। लैवरिटस्की ने पहिले तो कुछ उत्तर न दिया। वह बड़ा परेशान सा था पर फिर वह बोला कि चलो मैं स्वयं ही तुम्हें छोड़ आता हूँ। बुड़-बुड़ करते हुए लैम्म ने अपने कमरे में जाकर छोटे से सूटकेस में अपना सामान बंद किया। कुछ कागज़ फाड़े और कुछ जलाये। घोड़े तैय्यार थे। लैवरिटस्की ने आते हुए मि० जूल्स वाला वह समाचार पत्र जेब में डाल लिया। सारा रास्ता दोनों ने कोई विशेष बात न की। दोनों ही अपने-अपने विचारों में इतने मग्न थे कि वह किसी प्रकार की बाधा न चाहते थे। लैम्म का घर आ गया। लैवरिटस्की ने गाड़ी खड़ी कर दी। लैम्म बिना हाथ मिलाये रूखी सी नमस्कार कर, अपना सूटकेस हाथ में ले उतर गया। "नमस्कार" लैवरिटस्की ने भी कहा और फिर गाड़ीवान को घर चलने को कहा। यहाँ शहर में भी उसने अपने लिए एक दो कमरे ले रखे थे। कुछ आवश्यक पत्र लिख और भोजन कर वह कालीटीनों के यहाँ चल दिया।

बैठक में केवल पाशिन बैठा था। मारया मित्रविना अभी आती ही होगी वह बोला और लैवरिटस्की के साथ बातें करने लगा। अभी तक वह लैवरिटस्की के साथ ज्यादा बात-चीत न करता था और जब कभी बोलता भी तो ऐसे मानों उस पर बड़ी दया कर रहा हो। पर इस बार जब "वैसिलस्कोय" से लौट लिज़ा ने उसकी बड़ी प्रशंसा की तो पाशिन भी लैवरिटस्की से प्रेम पूर्वक बोलने लगा। पाशिन कहने लगा कि "मारया मित्र-विना और बाकी सब भी वहाँ से बहुत प्रसन्न होकर आए हैं" और फिर जैसे उसका स्वभाव था वह अपनी बातें करने लगा—क्या उसके विचार हैं सरकार के विषय में, अपने विषय में। बात-चीत काफी देर तक चलती रही। पाशिन रूस के भविष्य की बाबत बहुत कुछ कहता रहा। "प्रान्तीय गवर्नरों को बहुत दबा कर रखना चाहिए" वह बोला यूँही बड़ी-बड़ी जटिल राजनीतिक और अन्य समस्याओं को उसने बातों ही बातों में सुलझा दिया मानों कोई विशेष बात ही न हो।

"यदि मैं सरकार होता तो यूँ करता।" "आप भी समझदार आदमी हैं" "आप का तो यही विचार होगा" ऐसी बातें वह घड़ी-घड़ी कहता। लैवरिटस्की बहुत देर तक चुपचाप पाशिन की बातें सुनता रहा। उसे यह देखने में सुन्दर, बांका युवक, उसकी हँसी और भेदी आँखें जरा भी अच्छी नहीं लगती थीं। पाशिन भी पहिचान गया कि लैवरिटस्की को उसकी बातचीत पसंद नहीं आई और वह बहाने से बाहर चला गया। दिल में वह सोचता गया कि यह लैवरिटस्की चाहे कितना ही भला होगा पर कुछ सनकी सा अवश्य है।

मारया मित्रविना और गोडेन्सकी थोड़ी देर में आ गये और

उनके बाद मारफा टिमोफीना और लिज़ा। धीरे-धीरे घर के सभी लोग आ गए और सब के बाद मैडम वैलैन्टसीना आई। वह संगीत की बहुत शौकीन थी।

मैडम वैलैन्टसीना संगीत की बहुत प्रेमी थी। उसका मुँह बच्चों सा सुन्दर और भोला था पर वह बहुत भड़कीले वस्त्र और गहने पहिने थी—उसके साथ उसका पति भी था। वह बहुत मोटा सा था, उसके हाथ पैर बड़े-बड़े थे, भौंहें गेहुंआ थीं, उसके मोटे-मोटे होठों पर सदा मुस्कराहट रहती। मैडम वैलैन्टसीना बाहर तो उससे बहुत कम बातचीत करती पर घर में प्यार से उसे "छोटा सा सूअर" कहा करती।

पाशिन भी अब लौट आया। सारा कमरा खचाखच भरा था। लैवरिटस्की को यह इतना शोर गुल और भीड़ अच्छी नहीं लग रही थी। सब से बुरी तो उसे मैडम वैलैंटसीना लगी। वह आँखें फाड़-फाड़ कर उसकी ओर देख रही थी। वह जल्दी ही चला जाता पर जाने से पहिले लिज़ा से एक आध बात करना चाहता था। बहुत देर वह लिज़ा की ओर देखता रहा। आज वह कितनी भली लग रही थी। कभी भी वह उसे इतनी सुन्दर और इतनी प्यारी न लगी थी। मैडम वैलन्टसीना के पास होने से वह ज्यादा ही चमक उठी थी। मैडम वैलन्टसीना घड़ी-घड़ी अपनी कुरसी में हिलती, मुँह बनाती, कभी आँखें सिकोड़ लेती और कभी आँखें फाड़-फाड़ कर इधर उधर देखती। उसके विपरीत लिज़ा बिना हिले-जुले शान्त बैठी थी। वह जिसकी ओर भी देखती, निर्भय, आँखें मिला के देखती और न ही वह उसकी तरह फिजूल "ही ही" कर हँसती।

मारया मित्रविना, मारया टिमोफीना, गोडोन्सकी और मैडम वैलन्टसीना ने ताश खेलनी शुरू कर दी। गोडोन्सकी ठीक तरह नहीं खेल रहा था। वह बिचारा बहुत सी ग़लतियां कर रहा था और फिर घबरा कर कभी रुमाल से अपना मुँह पोंछता और कभी आँख। पाशिन भी आज कुछ चुपचाप सा एक ओर बैठा था—मानो उकता गया हो। मैडम वैलंटसीना ने उसे गाने को कहा पर उसके हजार कहने पर भी पाशिन टस से मस न हुआ। लैवरिटस्की के आने से मानों उस पर घड़ों पानी पड़ गया था। लैवरिटस्की भी कुछ अधिक बातचीत न कर रहा था। लिजा ने आते ही भाँप लिया था कि आज उसके मुँह पर कुछ अजीब सा भाव है। उसे यह भी लगा था कि लैवरिटस्की उसे कुछ कहना चाहता है। पर न जाने क्यों उसे पूछते हुए कुछ भय सा लगता था। आखिर जब वह दूसरे कमरे में चाय लेने जा रही थी तो सहसा उसकी आँखें लैवरिटस्की से जा मिलीं। वह शीघ्र ही उठ कर उसके पीछे चल दिया।

"क्या बात है" चाय का पानी चूल्हे पर रखती हुई वह बोली।

"क्यों, तुम्हें कुछ विशेष बात लगती है, क्या?" उसने पूछा।
"आज तुम आगे जैसे नहीं लग रहे"
लैवरिटस्की मेज़ पर झुक गया।

"मैं तुम्हें कुछ कहना चाहता था—पर कहा नहीं जाता। हाँ, यहाँ अखबार में कुछ है। मैंने निशान लगाया है, तुम पढ़ लेना" उसे अखबार देते हुए वह बोला "पर किसी से कुछ कहना मत। मैं कल प्रातः आऊँगा।"

लिज़ा हैरान सी हो गई। इतने में पाशिन पीछे से आ गया। लिज़ा ने अख़बार जेब में डाल ली।

"क्या तुमने ओबरमान पढ़ लिया है" पाशिन बड़ी गम्भीर आवाज़ में बोला

लिज़ा धीरे से कुछ गुनगुनाई और फिर ऊपर चली गई। लैवरिटस्की बैठक में लौट गया और खेल देखने लगा। मारफा अपने साथी गोडोन्सकी को बहुत गुस्से हो रही थी "तुम बिल्कुल किसी काम के नहीं, ताश खेलना चुगली करने की तरह आसान नहीं होता" वह बोली।

अपराधी बिचारा अपना सा मुँह लेकर रह गया। लिज़ा आ गई और एक कोने में बैठ गई। उसने लैवरिटस्की की ओर देखा और लैवरिटस्की ने उसकी ओर और वे दोनों किसी अज्ञात भय से काँप उठे। लिज़ा घबराई हुई लगती थी उसकी आँखें लैवरिटस्की को धिक्कार रही थीं। चाहते हुए भी लैवरिटस्की उससे बोल न सका। लिज़ा के पास, उसी कमरे में, और लोगों की तरह अतिथि बन कर बैठना उसे अच्छा नहीं लग रहा था। वह जाने के लिए उठा और जाते-जाते लिज़ा से कहने लगा "कल आऊँगा—मेरे साथ नाराज़ मत होना"

"हाँ—आना" लिज़ा ने उत्तर दिया। उसकी आँखों में व्याकुलता थी।

लैवरिटस्की के जाने की देर थी कि पाशिन चमक उठा। वह गोडोन्सकी को सलाह देने लगा कि ऐसे करो, ऐसे न करो। मैडम वैलन्टसीना की हँसी उड़ाने लगा और अन्त में वही अपना पुराना गीत गाने लगा। पर लिज़ा की ओर वह जब भी देखता तो कुछ उदास सी मुद्रा बना लेता मानो उलाहना दे रहा हो।

उस रात भी लैवरिटस्की न सो सका। उसके हृदय में तनिक भी दुःख या घबराहट न थी पर नींद नहीं आ रही थी। वह अपने बीते दिनों को बिल्कुल भी याद नहीं करना चाहता था पर फिर भी उसके हृदय में यही विचार घूम रहे थे कि मेरा जीवन भी कैसा रहा है। ऐसे ही सारी रात बीत गई। न नींद आई और न ही नींद का विचार ही आया। केवल कभी-कभी उसे लगता कि वह सब स्वप्न ही था।

लैवरिटस्की जब अगले दिन सवेरे फिर आगया तो मारया को कुछ अच्छा न लगा। यह अब रोज़ रोज़ ही आने लगा है उसने सोचा। वास्तव में उसे लैवरिटस्की कुछ अच्छा ही न लगता था। पर पाशिन जिस की बात वह बहुत मानती थी, कल लैवरिटस्की की बड़ी प्रशंसा कर रहा था इस लिए वह चुप ही रही। मारया उसे अतिथि नहीं समझती थी वह संबंधी ही तो था इस लिए जब कभी वह आता तो मारया उसका बहुत आदर सत्कार न करती। इसी लिए आने के कोई आध घन्टे बाद वह बाग में लिज़ा के साथ घूम रहा था। लिनोचका और शरुचका पास ही खेल रही थीं।

स्वभावनुसार लिज़ा चुपचाप ही चल रही थी। आज उसका मुख असाधारण रूप से पीला था। अपनी जेब से समाचार पत्र का वही टुकड़ा निकाल उसने लैवरिटस्की के हाथ में दिया।

"बहुत खेद की बात है" वह बोली।

लैवरिटस्की चुप रहा।

"पर शायद यह सत्य न हो।"

"इसी लिए ही तो मैंने कहा था कि किसी और को न बताना"

लिज़ा दो क़दम चल कर बोली," सच बताओ क्या तुम्हें तनिक भी दुःख नहीं हुआ।

"मुझे तो स्वयं पता नहीं कि मुझे कैसा लग रहा है।"

"पर तुम उससे प्रेम तो करते थे।"

"हां"

"बहुत"

"हां"

"और तुम्हें उसकी मृत्यु से दुःख नहीं हो रहा।"

"मेरे लिए तो वह कब की मर गई है।"

"ऐसे मत कहो—यह पाप है...मेरी बात से बुरा मत मानना। मित्रों को तो सभी कुछ कहने का अधिकार होता है। इसी लिए मैं यह सब कह रही हूँ। पर सच मुझे बहुत खराब लगा था तुम्हारे मुख का भाव। तुम्हें याद है अभी उस दिन तुम उसे बुरा भला कह रहे थे और वह बिचारी तब शायद मर भी चुकी थी। यह तुम्हें भगवान ने सज़ा दी है।"

लैवरिटस्की हंसा। "तुम यह समझती हो।...खैर अब मैं स्वतंत्र तो हूँ।

लिज़ा कांप उठी..."कृपया ऐसी बातें मत करो। तुम अपनी स्वतन्त्रता को क्या करोगे। अब तो तुम्हें केवल क्षमा का विचार करना चाहिए।"

"क्षमा" हाथ हिला कर वह बोला "मैंने ने तो उसे बहुत देर का क्षमा कर दिया हुआ था"

"नहीं नहीं" लिज़ा लजा गई" तुम मेरी बात नहीं समझते, तुम्हें क्षमा की याचना करनी चाहिए।"

"किससे"

"भगवाम से। भगवान के सिवा और कौन क्षमा कर सकता है ?"

लैवटरिस्की ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया "ऐलिज़-बीटा सच मानो मुझे आगे ही बहुत दुख मिल चुका है। मैंने बहुत संताप, बड़ी वेदना सही है।"

"यह तुम्हें कैसे पता हो सकता है। अभी उस दिन तो तुम उसे क्षमा करने को तैय्यार न थे।"

ऐसे ही वह टहलते रहे। एक दम लिज़ा खड़ी हो गई "तुम्हारी बेटी का क्या बनेगा ?"

लैवरिटस्की भी एक दम चौंक पड़ा।

"ओह, उसका फिकर न करो। मैंने चारों ओर पत्र भेज दिये हैं और उसकी मेरी लड़की की अच्छी तरह देख भाल की जायेगी।" लिज़ा उदास सी हो गई फिर हंस पड़ी।

"हां ठीक है" लैवरिटस्की बोला "मुझे अपनी स्वतंत्रता का क्या फायदा है।"

"यह अखबार तुम्हें कब मिली थी" लैवरिटस्की की बात अनसुनी कर वह बोली।

"तुम्हारे आने के अगले दिन"

"और क्या...क्या तुमने एक आंसू भी नहीं गिराया ?"

"नहीं...हां, मैं बिल्कुल हैरान हो गया था। पर आंसू नहीं आये। आते भी कहां से ? भला मैं उन बीते दिनों के लिये कैसे रोऊँ जिन्हें मैं हृदय से ही निकाल चुका हूं। उसके दुराचार से

से मेरे सुख का संसार नष्ट नहीं हुआ था, बस केवल मुझे यह पता लगा था कि सुख कभी था ही नहीं। फिर मैं भला क्यों रोऊँ। हां...शायद यदि यही समाचार मुझे अब से पंद्रह दिन पहिले मिलता तो दुःख होता।"

"पन्द्रह दिन पहिले...इन पंद्रह दिनों में क्या हो गया है ?" लैवरिटस्की ने कोई उत्तर नहीं दिया पर लिज़ा का मुख लज्जा से लाल हो गया।

"हां, तुम ने बूझ लिया है। इन पन्द्रह दिनों में मुझे पता लगा है कि एक सच्ची पवित्र स्त्री का हृदय कैसे होता है। और वह दिन अब मेरी स्मृति से और भी दूर चले गये हैं।"

लिज़ा शरमा कर लिनोचका और शरुचका की ओर चलदी।

"मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि मैंने तुम्हें अखबार दिखा दी। तुम से कुछ भी छिपाने को जी नहीं करता। पर आशा है तुम भी मुझ पर इतना ही विश्वास करोगी" लैवरिटस्की उसके पीछे चलता हुआ बोला।

"फिर तो मुझे भी" लिज़ा खड़ी हो कर कहने लगी "पर कैसे कहूँ ...नहीं कुछ नहीं।"

"क्या बात है ? बताओ न ?

"पता नहीं बताना चाहिए या नहीं...पर बात छिपाने का भी क्या फायदा...हां तो ...आज मुझे एक पत्र आया था।"

"पाशिन का ?"

"तुम्हें कैसे पता लगा ?"

"तुम्हारे साथ विवाह करना चाहता है"

"हां" लिज़ा गम्भीर सा मुँह बना उसकी ओर देखने लगी लैवरिटस्की भी उसकी ओर देखता रहा।

"तो तुमने क्या उत्तर दिया है" आखिर वह बोला।

"समझ नहीं आती क्याउत्तर दूं"

"क्यों, क्या तुम उससे प्रेम नहीं करतीं?"

"हां, मुझे वह अच्छा ही लगता है। बहुत भला आदमी है"

"यही बात तुमने तीन दिन पहिले भी कही थी। मैं तो पूछ रहा हूं कि तुम उसे हृदय से प्रेम करती हो या नहीं।"

"जैसे तुम कहते हो, वैसे तो मैं प्रेम नहीं करती उससे"

"तो फिर तुम उससे प्रेम नहीं करतीं"

"नहीं। पर प्रेम करना कोई आवश्यक थोड़ा होता है"

"क्या"

"माँ को वह बहुत अच्छा लगता है। मुझे भी उसमें कोई बुरी बात नहीं दिखाई देती"

"फिर झिझकती क्यों हो?"

"तुम्हारे कारण-जो कल तुम ने कहा था बस उसी कारण। क्या तुम्हें याद है क्या कहा था तुम ने? पर खैर है तो यह मेरी निर्बलता ही"

"तुम बहुत भोली हो" लैवटिस्की की आवाज़ काँप रही थी, "क्यों अपने आप को धोखा दे रही हो। तुम्हारा हृदय बिना प्रेम किये किसी का होना नहीं चाहता। बिना प्रेम के तुम कैसे यह भार उठाओगी"

"मुझे तो जो कहा जाय वही करती हूँ" लिज़ा ने कहा।

"जो तुम्हारा मन चाहें वह करो। केवल तुम्हारा अपना हृदय ही तुम्हें ठीक राह दिखायेगा। अनुभव, ज्ञान यह सब बकवास है। संसार में जो सब से महान, सब से मधुर चीज है उससे अपने आपको वंचित मत करो"

"फोयडोर तुम ऐसा कहते हो...तुम। तुमने भी तो प्रेम के लिए ही विवाह किया था...तुम कौन से प्रसन्न रहे।" लैवरिटस्की ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर कहा "मेरी बात छोड़ो। तुम नहीं समझ सकतीं कि एक बिल्कुल अनजान, भोला युवक किस चीज को प्रेम समझ लेता है। और फिर मैं झूठ क्यों कहूँ। अभी मैं तुम्हें कह रहा था कि मुझे कभी सुख मिलता ही नहीं, वह सब झूठ था। मैं तब बहुत प्रसन्न था।"

"मेरे विचार में तो" लिजा की आवाज बिल्कुल धीमी पड़ गई, "प्रसन्नता या सुख हमारे हाथ में नहीं है"

"यह गलत है—यह ठीक नहीं—मेरी बात मानों," "आवेग में आ उसने लिजा के दोनों हाथ पकड़ लिये। लिजा कुछ घबरा गई पर उसी प्रकार उसकी ओर देखती रही।

"सब हमारे बस में ही है जब तक कि हम अपने जीवन को बिल्कुल ही नष्ट न कर लें। कइयों के लिए ऐसा विवाह शायद बुरा हो पर तुम्हारे लिए नहीं। तुम इतनी पवित्र हो और इतनी अच्छी हो। मैं प्रार्थना करता हूँ, लिजा, कभी ऐसा ही विवाह न करना यह सब विवाहों से बुरा है। मैं तुम्हें सच कह रहा हूँ और मुझे यह सब कहने का अधिकार है और अधिकार बहुत महंगे दामों मिला है?"

लैवरिटस्की एक दम मानों स्वप्न से जाग पड़ा हो। लिनोचका और शरुचका बिल्कुल हैरान हो पास खड़ी उसकी ओर देख रही थीं। उसने लिजा का हाथ छोड़ दिया।

"मुझे क्षमा करो" कह कर वह घर की ओर चल पड़ा।

"एक प्रार्थना और करनी है" वह फिर लौट आया।

"तुम जल्दी में कुछ निर्णय न कर लेना। मेरी बातों को भी जरा ध्यान देना और यदि तुमने ऐसे ही विवाह करना है तो भी पाशिन से न करना। वह तुम्हारा पति होने के लायक नहीं बताओ—प्रतिज्ञा करो जल्दी तो नहीं करोगी ?"

लिज़ा ने लैवरिटस्की को उत्तर देना चाहा पर वह कुछ न बोली, कुछ बोल ही न सकी। उसका हृदय ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा और एक अज्ञात भय से वह काँप उठी।

जब वह कालीटीनों के घर से जा रहा था तो रास्ते में उसे पाशिन मिला। दोनों ने एक दूसरे को प्रणाम किया और अपने-अपने रास्ते चल दिये। लैवरिटस्की अपने घर चला गया। आज उस के हृदय में अजीब भावनायें उठ रही थीं। अभी थोड़े दिन पहिले उसे लगता था कि अब मैं जीवन के संग्राम को छोड़ अपने छोटे से गाँव के शान्त वातावरण में सदा के लिए डूब गया हूँ तो फिर आज यह हलचल सी क्या हो गयी थी। एक साधारण सी घटना (पत्नी की मृत्यु) ने यह उथल-पुथल मचा दी थी। पर उसके हृदय में न तो पत्नी की मृत्यु का ही विचार न था अपनी स्वतन्त्रता था। हाँ पर रह-रह कर यही विचार आता कि न जाने लिज़ा पाशिन को क्या उत्तर देगी। इन पिछले दिनों में ही वह उसके लिए क्या से क्या बन गई थी। उस दिन उन्हें आधे रास्ते छोड़ रात को घर लौटते हुए ही तो उसे

विचार आया था कि यदि वह और हालतों में होता तो... और अब जिस बात की उसे स्वप्न में भी आशा न थी वही हो गई थी। पर उसकी स्वतन्त्रता का क्या फयादा था। वह तो अपनी माँ का ही कहा मानेगी और पाशिन से ही विवाह करवायेगी। और यदि न भी करवाये तो...सामने शीशे में उसने अपना मुँह देखा तो निराश सा हो गया।

ऐसे ही विचारों में दिन बीत गया। शाम हुई तो वह फिर तेज-तेज चलता कालीटीनों के घर पहुंचा। घर के पास पहुंच उसकी चाल धीमी पड़ गई। डयोढ़ी के बाहिर पाशिन की गाड़ी खड़ी थी। जी चाहा कि लौट जाये पर फिर उसने सोचा कि इतना अभिमान भी क्या करना है और वह अंदर चला गया। वहाँ कोई न था। बैठक से भी कोई आवाज न आ रही थी। उसने धीरे से दरवाजा खोला तो वहाँ एक कोने में मारया मित्रविना और पाशिन बैठे ताश खेल रहे थे—पाशिन ने झुक कर प्रणाम किया और मारया मित्रविना माथे पर बल डाल कर बोली "इस समय तो तुम्हारे आने की आशा न थी" लैवरिटस्की उसके पास बैठ खेल देखने लगा।

"तुम भी खेलते हो" उसने बड़े गुस्से से कहा और फिर बोली कि मेरी तो सारी खेल ही बिगड़ गई है। पाशिन ने ९० तक चाल चली और फिर बड़ा गंभीर सा मुंह बना खेलने लगा। वह ऐसे खेल रहा था मानों कोई बड़ा भारी राजनीतिज्ञ हो। शायद पीटर्सबर्ग के उच्च अधिकारियों से वह ऐसे खेलता था। १०१ और फिर १०२, वह बोला। लैवरिटस्की को लगा मानों उस की आवाज में उलाहना था।

"क्या मैं मारफा टीमोफीना को मिल सकता हूँ ?" लैवरिटस्की बोला। उसने देखा कि वह नई बाजी खेलने लगे थे। पाशिन वैसे ही गंभीर सा ताश के पत्ते मिला रहा था "पूछ लो। मेरा खयाल है वह ऊपर अपने कमरे में ही है" मारया बोली।

लैवरिटस्की ऊपर चला गया। वहां मारफा भी नसटास्या के साथ ताश खेल रही थी। कुत्ता लैवरिटस्की को देख भौंकने लगा पर दोनों वृद्धाएँ उसे देख बड़ी प्रसन्न हुईं। मारफा तो उस दिन विशेष रूप से प्रसन्न लगती थी। "आओ फेद्या आओ बैठो। बस मैं अभी यह ताश खतम करती हूँ। मिठाई खाओगे ओ शुरुचका, थोड़ी मिठाई तो ला। क्यों नहीं खाओगे ? अच्छा तुम्हारी मरजी पर सिगरट मत पीना। तंबाकू की बू मुझे अच्छी नहीं लगती और मेरी बिल्ली भी उससे छींकने लगती है।"

लैवरिटस्की ने कहा कि इस समय उसे तंबाकू की तनिक भी इच्छा नहीं।

"नीचे होकर आये हो," मारफा बोली," कौन है वहां ? पाशिन बैठा होगा और लिज़ा। नहीं, लिज़ा तो शायद अभी यहां आये...वह देखो आ गई। लिज़ा कमरे में आई। लैवरिटस्की को देख कर वह लजा सी गई।

"मैं तो एक मिनट के लिए आई थी,"

मारफा बोली, "क्यों एक मिनट के लिये क्यों। तुम आज कल की लड़कियां भी न जाने कैसी हो। देखती नहीं हो मेरा अतिथि आया है। आकर उसके पास बैठो और कुछ बात चीत करो।

लिज़ा आकर एक कुरसी पर बैठ गई। उसने लैवरिटस्की की ओर देखा। जी चाहा कि उसे बताये कि पाशिन से उसकी

क्या बातचीत हुई है। पर बताये तो कैसे। कुछ अजीब सा लगता था। वह उसे कितना कम जानती थी। अभी वह अनजान सा ही तो था वह जो न कभी गिरजे जाता और जिसने अपनी पत्नी की मृत्यु पर भी एक आंसू तक न गिराया था। कैसे वह बताये उसे अपने मन की बात। पर न जाने क्यों उसे लैवरिटस्की पर बड़ा विश्वास सा हो गया था। वह उसे काफी अच्छा लगता था। इन विचारों से ही वह लजा गई मानों कोई अनजान उसके पवित्र घर के अंदर घुस आया हो।

मारफा बोली, "यदि तुम इसकी आव भगत न करोगी तो कौन करेगा। मैं तो बूढ़ी हूँ और फिर यह है बड़ा होशियार। और नसटास्या के लिए यह बहुत बड़ा है। उसे तो छोटे छोटे छोकरे ही भाते हैं।"

"मैं कैसे फेद्या का जी बहला सकती हूँ," लिजा बोली "हां यदि वह चाहे तो मैं पियानो बजाने को तैय्यार हूँ।"

बहुत अच्छा। तुम बड़ी होशियार हो। नीचे ले जाओ इसे, प्रिय। जब गा बजा लोगी तो लौट आना। हम ने तो बस ऐसे ही जीवन गंवाया" मारफा बोली। लिजा उठी और लैवरिटस्की उसके पीछे चल पड़ा। रास्ते में लिजा खड़ी हो गई "मनुष्य का मन भी कैसा होता है। तुम्हें देख कर मुझे चाहिए था कि मैं प्रेम विवाह से डरती पर मैं उल्टे ही......"

"तुमने न करदी है" लैवरिटस्की बीच में ही बोल पड़ा।

"नहीं। पर हां भी नहीं की मैंने उसे सब बता दिया था कि क्या विचार है मेरे हृदय में और उससे थोड़ी देर ठहरने को, इन्तजार करने को कहा है। क्यों ठीक है न? तुम प्रसन्न हो?" वह हंस पड़ी और जल्दी से सीढ़ियाँ उतर गई।

पियानो का ढकना उठाते हुए वह बोली, "क्या बजाऊँ"

"जो तुम्हारा जी चाहे" लैवरिटस्की ऐसी जगह बैठा जहां से उसे अच्छी तरह देख सके।

लिज़ा पियानो बजाने लगी और बहुत देर बड़ी ध्यान मग्न अपनी अंगुलियां की ओर ही देख, बजाती रही। आखिर जब उसने ऊपर मुँह उठा लैवरिटस्की की ओर देखा तो गाना एकदम बंद कर दिया। लैवरिटस्की का मुँह इतना अजीब लग रहा था।

"क्या बात है" वह बोली ।

"कुछ नहीं, मैं बहुत प्रसन्न हूँ ...तुम्हें देख कर। बजाती जाओ न"

"मुझे लगता है कि यदि वह वास्तव में ही मुझ से प्रेम करता होता, तो ऐसा पत्र न लिखता। मुझे कुछ सोचने का समय देता। मैं इतनी जल्दी उत्तर कैसे दे सकती थी।

"यह कौन सी बात है" लैवरिटस्की बोला, "बड़ी बात तो यह है कि तुम उससे प्रेम नहीं करतीं।"

"ऐसी बातें मत करो, फेद्या। मुझे तो तुम से भय लगने लगता है। मुझे तो हर दम तुम्हारी मृत पत्नी का विचार आता रहता है और तुम—"

नीचे बैठक में बैठी मारया पाशिन से कह रही थी "कितना अच्छा पियानो बजाती है मेरी लिज़ा।"

"सच, बड़ा अच्छा बजाती है" पाशिन बोला।

मारया ने बड़े प्रेम से युवक खिलाड़ी की ओर देखा पर वह वैसे ही गंभीर मुद्रा बनाये बोला "१४ बातशाह"

लैवरिटस्की अब बच्चा तो था नहीं। उसे यह जानते देर न लगी कि वह लिज़ा से प्रेम करने लगा है। पर इस विचार से

उसे प्रसन्नता न हुई। "यह मुझे क्या सूझा है। मैंने क्या कर लिया है। अब ३५ वर्ष की आयु में मैं फिर अपना हृदय किसी स्त्री को सौंपने लगा हूं। पर लिज़ा तो वैसी नहीं। वह मुझ से वैसे बलिदान तो नहीं मांगेगी। वह मुझे पढ़ने लिखने से नहीं रोकेगी। वह तो मुझे उच्च और महान बना देगी और हम दोनों साथ साथ अपने आदर्श की ओर जा सकेंगे।" लैवरिटस्की को ऐसे विचार आते पर वह साथ ही सोचता "यह तो सब ठीक है पर लिज़ा की ही कहां इच्छा है मेरे संग जीवन व्यतीत करने की। वह स्वयं ही तो कह रही थी कि उसे मुझ से डर लगता है। खैर इतना तो अच्छा है कि वह पाशिन से प्रेम नहीं करती।"

लैवरिटस्की वैसिलिस्कोय चला गया पर वहां भी वह चार दिनों से ज्यादा न रह सका। उसका जी उकता गया। वैसे भी उसकी अजीब ही दशा थी। मिस्टर जूल्स का समाचार अभी तक पक्का न हुआ था। उसके एक भी पत्र का उत्तर नहीं आया था। वह फिर शहर लौट आया।

शाम को वह कालीटीनों के यहां गया। उसे यह भांपते देर न लगी कि मारया कुछ नाराज़ सी है। वह उसके साथ ताश खेलने लगा और खेलते खेलते पंद्रह रुपये हार दिये। मारया इतने से ही खुश हो गई। मां के हज़ार कहने पर, कि ऐसे आदमी से ज्यादा मेल जोल अच्छा नहीं. लैवरिटस्की को लिज़ा के साथ बात चीत करने को आधा घन्टा मिल ही गया। लिज़ा भी आज कुछ चुप सी थी। उसने उसे इतने दिन न आने का

उलाहना दिया और कहने लगी कि कल इतवार है गिरजे आना "आवश्य आना" वह बोली, "हम उसकी आत्मा के लिए प्रार्थना करेंगे, ।" फिर वह कहने लगी "मुझे पता नहीं लगता क्या करूं पाशिन को ऐसे ही असमंजस में रखने का मुझे भला क्या अधिकार है ?"

"क्यों" लैवरिटस्की ने पूछा।

"क्योंकि अब मझे पता है मेरा क्या निर्णय होगा।"

फिर वह कहने लगी कि आज उसकी तबीयत ठीक नहीं है सिर में थोड़ा दर्द सा है और वह ऊपर अपने कमरे में चली गई।

अगले दिन लैवरिस्टकी गिरजे गया।

लिजा उससे पहिले ही आ चुकी थी। लैवरिटस्की की ओर मुँह फेरे बिना ही वह जान गई कि वह आ गया है। अपना सिर झुकाये वह प्रार्थना में बड़ी लीन हो गई। उसकी आंखें चमक रही थीं। लैवरिटस्की को लगा कि वह उसके लिए प्रार्थना कर रही है और उसका मन लिजा के प्रति प्रेम से भर आया। पर प्रसन्न होने के साथ साथ वह कुछ उदास सा भी हो गया। चुप चाप खड़े यह लोग, जानी पहिचानी हुई सी आकृतियां, भजनों की गम्भीर आवाज, धूप की सुगंधि से महकता हुआ यह वातावरण अंधेरी छत में से आती हुई सूर्य की किरणें ये सब उसके हृदय को उदास कर रही थीं। आज वह बहुत देर बाद गिरजे आया था। उसे प्रार्थना के कोई शब्द नहीं आते थे नहीं वह हृदय में ही कुछ प्रार्थना कर रहा था। हां कुछ क्षणों के लिए उसने मानों अपनी आत्मा ही भगवान के चरणों में बिछा दी। उसे याद आया कैसे वह बचपन में घन्टों बैठ प्रार्थना किया करता था और

फिर उसे लगता था मानों किसी देवता ने अपने शीतल हाथों से उसके मस्तक को छू लिया है। उसने लिजा की ओर देखा और सोचा कि तुम ही मुझे यहां खींच लाई हो। वह अभी धीरे धीरे प्रार्थना कर रही थी। उसका मुख प्रसन्नता से खिला हुआ था। लैवरिटस्की भी हाथ जोड़ प्रार्थना करने लगा।

गिरजे के बाहर वे मिले। लिजा के गम्भीर मुख पर प्रसन्नता की छाप थी। सूर्य के उज्ज्वल प्रकाश में स्त्रियों के चमकीले वस्त्र और भी चमक रहे थे। साथ के गिरजों के घन्टे बज रहे थे—हवा में चिड़ियाँ इधर उधर उड़ कलोल कर रही थीं। लैवरिटस्की नंगे सिर खड़ा मुस्करा रहा था। हवा में उसके बाल और लिजा की टोपी के रिबन उड़ रहे थे। उसने लिजा और लिनोचका दोनों को गाड़ी में बिठाया और जेब में जितने पैसे थे, सब भिखारियों में बाँट, खुशी खुशी घर चला गया।

फेदया के बुरे दिन आ गये। रोज प्रातः वह डाकखाने जा पत्रों की प्रतीक्षा करता। जब डाक आती तो बड़ी अधीरता से लिफाफे फाड़ चिट्ठियाँ देखता पर अभी तक वह अफवाह न तो पक्की ही हो पाई थी और न ही झूठी साबित हुई थी। कभी-कभी तो उसे अपने आप पर बड़ा क्रोध आता। मैं भी कैसा हूँ। गिद्ध की तरह लहू का प्यासा पत्नी की मृत्यु के समाचार के पक्के होने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

कालीटीनों के घर वह प्रायः रोज ही जाता पर वहाँ भी उसे कुछ चैन न मिलता। मालकिन तो उसकी शक्ल से ही तंग थी।

पाशिन का व्यवहार भी रूखा था। लैम्म कभी कभी सिर हिला प्रणाम कर देता पर वह भी उसके साथ बातचीत करना न पसंद करता। सब से बुरी बात तो यह थी कि लिजा भी उससे परे-परे रहती। कभी वह यदि अकेली उसके पास रह जाती तो एकदम घबरा सी जाती। पहिले तो वह उसे अपना बड़ा विश्वास पात्र मानती थी अब मानो लैवरिटस्की के साथ करने को कोई बात ही न थी। लैवरिटस्की बिचारा भी झिझक जाता। इन कुछ दिनों में लिजा काफी बदल गई थी। वह कुछ घबराई सी, चिंतित सी रहती। उसकी बोलचाल में, यहाँ तक कि उसकी हँसी में भी कुछ घबराहट सी आ गई। मारया मित्रविना जो अपने आप में ही मग्न रहती थी यह न जान पाई। पर मारफा की आँखों से कुछ न छिपा था। उसने अपनी चहेती लिजा पर कड़ी नज़र रखनी शुरू कर दी। कई बार लैवरिटस्की को दुःख होता कि क्यों उसने लिजा को वह अखबार दिखाया। लिजा जैसी पवित्र आत्मा को शायद उसका आचार घृणित लगता हो। फिर वह सोचता कि शायद यह सब उसकी आत्मा में हो रहे अन्तर्द्वन्द का ही फल है। लिजा अभी तक पाशिन वाली बात का निर्णय नहीं कर पाई थी।

एक दिन वह लैवरिटस्की को एक उपन्यास लौटाने लगी तो लैवरिटस्की ने पूछा "पढ़ लिया है?"

"नहीं। आजकल कुछ पढ़ने का जी ही नहीं करता" और वह जाने को मुड़ी।

"ज़रा ठहरो। इतनी देर से तुम्हारे साथ बात ही नहीं की। लगता है जैसे तुम मुझ से डरती हो"

"हाँ, मैं डरती हूँ"

"क्यों"

"मैं नहीं जानती"

लैवरिटस्की चुप हो गया।

"अच्छा यह बताओ कि अभी कुछ फैसला कर लिया है या नहीं"

"यह क्या कह रहे हो" वह आँखें नीचे करके बोली

"तुम्हें पता ही है मैं क्या कह रहा हूँ"

लिजा लज्जा गई।

"मुझे कुछ मत पूछो—मुझे पता ही नहीं लगता" और वह चली गई।

अगले दिन लैवरिटस्की भोजन के बाद कालीटीनों के घर गया तो उसने देखा पूजा की तैय्यारियाँ हो रही हैं। खाने वाले कमरे में एक ओर मेज पर सफेद कपड़ा बिछा था उसके ऊपर छोटी-छोटी सुन्दर मूर्तियाँ सोने के फ्रेमों में जड़ी हुई दिवार के साथ लगी थीं। एक वृद्ध नौकर ने धीरे से आ दो दीप प्रतिमाओं के आगे जलाये, झुक कर प्रणाम किया और चला गया। बैठक खाली पड़ी थी। लैवरिटस्की ने इधर-उधर से पूछा कि क्या बात है तो पता चला कि लिजा और मारफा के कहने पर आज पूजा हो रही थी। पूजा के लिए एक विशेष प्रतिमा मंगाई गई थी पर सहसा ३० मील दूर किसी रोगी को उसकी आवश्यकता पड़ गई थी। थोड़ी देर में पादरी भी आ गया। वह अधेड़ उमर का गंजा सा आदमी था। आते ही वह जोर-जोर से खाँसा। घर की सब स्त्रियाँ बारी-बारी से उसका आशीर्वाद लेने आई। लैवरिटस्की ने भी झुक कर सब को प्रणाम किया। पादरी कुछ देर ठहरा और फिर खाँस के बोला "अब शुरू करें?"

"हाँ महाशय" मारया ने उत्तर दिया।

पादरी ने पूजा के वस्त्र धारण किए। एक दूसरे पुजारी ने जलता हुआ कोयला माँगा। धूप जलाई। धूप की सुगन्धि से सारा कमरा महक उठा। दास दासियाँ सब आ कर पीछे की ओर खड़े हो गये। मारया का कुत्ता 'रोस्का' न जाने कहाँ से आ गया। उसे भगाने के बहुत यत्न किये गए पर वह बिचारा घबरा के वहीं बैठ गया। आखिर एक नौकर उसे उठा कर बाहर ले गया। पूजा शुरू हो गई। लैवरिटस्की एक कोने में बैठ गया। यह सब देख उसका मन उदास सा हो गया। मारया मित्रविना सब से आगे खड़ी थी वह कभी इधर देखती कभी उधर और कभी अपनी आँखें ऊपर की ओर उठा लेती—मानों उकताई हुई हो। मारफा बड़ी चिन्तित सी लग रही थी। नस्टासया ने बड़ी श्रद्धा से जमीन तक झुक कर प्रणाम किया और उठ कर पीछे चली गई। लिज़ा बिना हिले जुले यों खड़ी थी मानो ज़मीन में गड़ी हो। उसके मुख के भाव से लगता था कि वह प्रार्थना में बहुत मग्न है। प्रार्थना के पश्चात् क्रास' के साथ-साथ उसने पादरी का हाथ भी चूम लिया। मारया ने पादरी को चाय पीने के लिए कहा। पादरी ने अपने पूजा के वस्त्र उतार दिए और स्त्रियों के साथ बैठक में चला गया। उसने चार प्याले चाय पी। घड़ी घड़ी वह रुमाल से अपना सिर पोंछता और खाँसता। बातों ही बातों में वह कहने लगा कि ऐवेशनीकोव व्यापारी ने गिरजे के कलश के लिए ७०० रूबल दान दिये हैं।

लैवरिटस्की यत्न कर लिज़ा के पास ही एक कुर्सी पर बैठ गया पर व चुपचाप कठोर सी बिल्कुल सीधी बैठी रही। एक बार भी उसने लैवरिटस्की की ओर नहीं देखा। वह अपनी ही धुन में

मग्न थी और जान बूझ कर उसकी ओर से उदासीन सी हो रही थी। लैवरिटस्की को मन ही मन हँसी आ रही थी। उसका जी चाहा कि कोई हँसी वाली बात कहे पर वह चुप ही बैठा रहा और थोड़ी देर बाद चला गया। लिजा में न क्या जाने था जो उसकी समझ से बहुत परे था।

एक और दिन लैवरिटस्की उनकी बैठक में बैठा गोडोन्सकी की गप्पें सुन रहा था कि सहसा उसकी दृष्टि लिजा पर पड़ी। लिजा उसकी ओर प्रश्न भरी आँखों से देख रही थी। सारी रात लैवरिटस्की को लिजा की उस नजर का विचार आता रहा। उसका प्रेम युवकों सा तो नहीं था। वह लम्बी-लम्बी आहें तो न भरता पर फिर भी प्रेम प्रेम ही होता है और लैवरिटस्की को भी वेदना व दुःख सहना ही पड़ता।

एक दिन लैवरिटस्की स्वभावानुसार शाम को कालीटीनों के यहाँ बैठा था। सारा दिन बहुत गरम रहा था पर अब शाम बड़ी सुहावनी हो गई थी। मारया ने सब खिड़कियाँ दरवाजे खुलवा दिये और कहने लगी कि ऐसी मनोहर साँझ को ताश खेल कर गंवा देना पाप है। आज तो प्राकृति के सौंदर्य का ही आनन्द उठाना चाहिए। पाशिन ही केवल एक अतिथि था। चारों ओर की सुन्दरता से प्रेरित हो, उसका जी चाहा गाऊँ पर क्योंकि लैवरिटस्की वहां बैठा था उसने यह विचार छोड़ दिया और कुछ कविता पढ़नी शुरू की। वह बड़ी अच्छी तरह कविता पाठ करता रहा, हां, कहीं कहीं कुछ अनावश्यक सा जोर डाल देता। उस

ने लैरमैन्टोव की एक आध कविता पढ़ी और फिर जैसे अपनी ही आवाज से तंग आगया हो उसने वर्तमान युग को ही बुरा भला कहना शुरू कर दिया। बात-बात में वह कहता कि यदि मेरे हाथों शक्ति होती तो मैं क्या का क्या कर देता। "रूस बाकी यूरोप के पीछे रह गया है" वह बोला, "हमें औरों के साथ मिलना होगा। कहा जाता है कि हम अभी एक युवक राष्ट्र हैं पर यह सब बक बक है। हम में कुछ करने की शक्ति ही नहीं। हमने तो चूहे पकड़ने का पिंजरा भी स्वयं नहीं बनाया था सब कुछ दूसरों की नकल है। हम एक रोगी जाति हैं। हम रोगी हैं क्योंकि हम पूरी तरह यूरोपीयन नहीं बन पाये।" फिर वह कहने लगा "वास्तव में तो सब एक ही जैसे होते हैं हमारे यहाँ भी अच्छी संस्थाऐं होतीं तो हम भी सुधर जाते। और अच्छी संस्थाऐं लाना और बनाना भी तो हमारा ही काम है—हमारा, सरकार का—हमारी सरकार के अफसरों का।" मारया मित्रविना यह लम्बा चौड़ा व्याख्यान सुन रही थी और बड़ी प्रसन्न हो रही थी कि मेरे घर में इतना विद्वान आदमी बात-चीत कर रहा है। लिजा एक ओर चुप-चाप खिड़की के पास बैठी थी। लैवरिटस्की भी चुप था। मारफा टिमोफीना जो एक कोने में अपने साथी के साथ ताश खेल रही थी थोड़-बोल थोड़ा बुड़-बुड़ा रही थी पाँशिन कमरे में टहल-टहल कर रहा था पर उस की बातों से यूँ लगता था कि जन साधारण को नहीं बल्कि कुछ विशेष व्यक्तियों को बुरा भला कह रहा हो। संध्या अब गहरी हो गई थी। उसकी बातो के बीच बाहिर से कोयल की कूक सुनाई दे रही थी। दूर पेड़ों के ऊपर चाँद दिखाई देने लगा। अब लैवरिटस्की भी उठा और दोनों में खूब

गरमागरम वाद विवाद शुरू हो गया। लैवरिटस्की ने रूस के स्वतंत्र विचारों की दुहाई दी। वह कहने लगा कि हम में और हमारी संस्थाओं में त्रुटियाँ तो हैं पर अब आने वाली पीढ़ियों में यह बात नहीं। पाशिन कहने लगा कि हम यदि समझदार होतो अभी ही इन पुरानी रूढ़ीयों को तोड़ फोड़ देते।" बातों-बातों में पाशिन को क्रोध आ गया वह आपे से बाहिर हो लैवरिटस्की को बुरा भला कहने लगा। उसने कहा लैवरिटस्की पुरातन वादी, पुराने सड़ियल मरियल विचारों वाला है और उसका समाज में स्थान ही क्या है। लैवरिटस्की बड़ी शान्ति से यह सब सुनता रहा। उस ने पाशिन की एक एक बात का मुँह तोड़ जवाब दिया। यह ठीक है कि हमें बहुत कुछ बदलना चाहिए पर यह परिवर्तन बहुत धीरे-धीरे होना चाहिए। सरकार के कुछ इने गिने अफसर जनता को और जनता की संस्थाओं को बिना भली प्रकार समझे कुछ भी नहीं कर सकते उस ने अपना ही उदाहरण दिया कि कैसे बिना उसे समझे एक विशेष प्रकार की शिक्षा दे उसके पिता ने ठीक नहीं किया था। हाँ यह बात उसने अवश्य मानी कि बहुत समय और शक्ति यों ही नष्ट हो चुके हैं।

"यह तो ठीक है" पाशिन को अब बहुत गुस्सा आ चुका था "पर यह बताओ कि अब तुम क्या करना चाहते हो।"

"खेती-बाड़ी" लैवरिटस्की ने उत्तर दिया "जितनी भी अच्छी तरह कर सकूँ"

"बहुत अच्छा! और मैंने सुना है कि तुम इस दिशा में बड़े सफल भी रहे हो। पर देखो सब तो यह काम नहीं कर सकते"

हाँ जो कलाकार हो, स्वभाव से ही कला का प्रेमी हो वह तो ऐसा काम नहीं कर सकता" मारया मित्रविना बोली "अब पाशिन को ही देखो। यह तो बस बड़े शानदार काम ही कर सकता है"

यह पाशिन के लिए भी बहुत था। बिचारे ने शर्मिंदा हो बात-चीत का विषय ही बदल दिया। उसने प्राकृति की, सुन्दरता की बात की फिर संगीत के विषय में कुछ कहने लगा परकुछ बात न बनी। आखिर तंग आकर उसने मारया से ताश खेलने को कहा। पहिले तो वह हाँ नाँ करती रही पर आखिर उसने ताश मंगवा ही ली।

पाशिन ने नई ताश को जोर से खोला और खेलने लगा। लैवरिटस्की और लिजा इक्ट्ठे उठे और मारफा के पास जा बैठे। आज वे बहुत खुश थे—इतने खुश कि एक दूसरे के पास बैठते भी उन्हें भय सा लगता। और न जाने कैसे पिछले कुछ दिनों का खिंचाव सा एकदम समाप्त हो गया सदा के लिए। मारफा टिमोफीना ने बड़े प्रेम से लैवरिट-स्की को थपथपाया और धीरे से बोली "तुम ने अच्छा किया। अपने आप को बड़ा विद्वान समझने वाला यह अभिमानी पाशिन भी आज सीधा हो गया।" कमरे में चुप्पी सी छा गई। केवल जलती हुई मोम बत्तियां कभी-कभी "कड़-कड़" करतीं या कभी ताश खेलने वाले मेज पर हाथ मार कर अपने नंबर आदि गिनते। बाहिर सारा वायुमंडल कोयल की मीठी "कूहू कूहू" से भर रहा था।

इस सारे वाद-विवाद में लिज़ा ने एक अक्षर भी न कहा था पर वह एक-एक बात ध्यान से सुन रही थी और उसे लैवरिटस्की का दृष्टिकोण ही ठीक लगा। राजनीतिक विषयों से उसे तनिक भी लगाव न था पर फिर भी पाशिन की बातें उसे ठीक न लगीं। रूस और रूसियों के प्रति उसकी घृणा तो लिज़ा को बहुत खटकी उसने अपने आप को कभी भी देश भक्त नहीं समझा था पर फिर भी उसे अपने देश वासी, उनका रहन सहन, रीति रिवाज सभी प्रिय थे। घन्टों वह अपनी जिमींदारी के किसानों से बैठ बातें किया करती मानो उन्हीं में से एक हो। लैवरिटस्की यह सब समझता था और इसी लिए उसने पाशिन की एक-एक बात का उत्तर भी दिया था। लिज़ा और लैवरिटस्की ने एक दूसरे से बात तक नहीं की; एक दूसरे की ओर देखा भी नहीं पर इस बहस के बाद दोनों ने अनुभव किया कि वे एक दूसरे के बहुत निकट आ गए हैं। उनके विचार बिल्कुल एक ही जैसे थे। हाँ एक विषय पर उनका दृष्टिकोण भिन्न-भिन्न था और वह था 'धर्म'। लिज़ा के हृदय में यह पक्का विश्वास था कि वह लैवरिटस्की का विचार बदल सकेगी। मारफा के पास बैठे वह चुपचाप खेल देख रहे थे—पर दोनों के हृदय आज प्रसन्न थे। यह गाती हुई कोयल, यह हँसते हुए तारे, सुन्दर पेड़ों के झुँड और यह सुहावनी रात सब उन्हीं के लिए ही तो था। लैवरिटस्की की प्रसन्नता का ठिकाना न था। पर लिज़ा स्वयं भी आज अपने मन की बात नहीं समझ रही थी। न जाने क्या-क्या विचार उसके मन में घूम रहे थे।

दस बज गए। मारफा टिमोफीना, नसटास्या को साथ ले, ऊपर चली गई। लैवरिटस्की और लिजा उठ कर वाटिका की ओर जाने वाले दरवाजे के पास खड़े हो गए। बाहर अन्धकार था। उन्होंने एक दूसरे की ओर देखा और मुस्करा दिए। जी तो चाहा कि एक दूसरे का हाथ पकड़ खूब बातें करें पर वह लौट कर मारया और पाशिन के पास आ गये। आखिर खेल खत्म हुआ। मारया थक कर उठी। पाशिन ने अपनी टोपी उठाई—मारया का हाथ चूमा और चलने लगा "कई लोग कितने भाग्यवान होते हैं। जब जी चाहे सोयें, जब जी चाहे उठें, जी में आए तो इस सुहावनी रात का अनन्द उठायें,पर हम बिचारे सुबह तक बैठे सरकारी कागज देखेंगे।" उसने बड़े कोरे ढंग से लिजा को प्रणाम किया और चल दिया। उसे स्वप्न में भी विचार न था कि लिजा उसके प्रस्ताव का उत्तर देने में झिझकेगी और इस लिए वह नाराज था। लैवरिटस्की भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। बाहर फाटक पर पहुंचा। दोनों अलग-अलग रास्ते चल दिए। पाशिन का गाड़ीवान सो गया था। उसने उसे सोटी चुभा कर उठाया और घर की ओर चलने को कहा। लैवरिटस्की का मन घर जाने को न चाहा और वह शहर के बाहर की ओर चल पड़ा। चारों ओर बिलकुल चुप्पी छाई थी। घना अन्धेरा था। इस समय चाँद भी न था। बहुत देर गीली घास में इधर-उधर घूमने के बाद लैवरिटस्की को एक छोटी सी पगडण्डी मिली और वह बिना कुछ सोचे उसी पर चलने लगा। पगडण्डी के अन्त में बड़ी-बड़ी झाड़ियों के बीच एक छोटा सा फाटक था। लैवरिटस्की ने पैर से उसे धकेला तो वह एक दम खुल गया मानों उसी की प्रतीक्षा कर रहा हो। उसने देखा यह कोई वाटिका थी। लम्बे-लम्बे पेड़ों के बीच

वह चलता गया और तब..........एकदम उसे विचार आया कि यह तो कालीटीनों का ही उद्यान था। वह अन्धेरे में एक फूलों की झाड़ी के पास खड़ा हो गया। न जाने क्यों और कैसे उसके पाँव स्वयं ही उसे यहाँ खींच लाए थे। चारों ओर सन्नाटा था। घर की ओर से भी कोई आवाज़ नहीं आ रही थी। वह धीरे-धीरे चलता गया। एक मोड़ के बाद एकदम सारा घर दिखाई देने लगा। ऊपर के छत की दो खिड़कियों के सिवाय सब जगह अन्धेरा ही अन्धेरा था।

लिज़ा के कमरे में सफेद परदे के पीछे बत्ती जल रही थी और मारफा के सोने वाले कमरे में मूर्ति के सामने जलते हुए दीपक का लाल-लाल प्रकाश चारों ओर फैला था। नीचे का द्वार बिल्कुल चौपट खुला था। लैवरिटस्की वहीं एक लकड़ी की बैंच पर बैठ गया। अपना मुँह हथेली में लिए वह लिज़ा की खिड़की की ओ देखने लगा। दूर किसी घड़ी ने आधी रात का घन्टा बजाया। घर के अन्दर से भी किसी घड़ी के १२ बजाने की आवाज आई। चौकीदार भी ज़रा होशियार हुआ और उसने घड़याल पर हाथ मारा। लैवरिटस्की यूँ ही चुपचाप बिना कुछ सोचे समझे वहाँ पर बैठा रहा। लिज़ा की निकटता से ही वह प्रसन्न था—उसकी वाटिका में, उसी बैंच पर जहाँ वह इतनी बार बैठती थी।

लिज़ा के कमरे का दीपक बुझ गया। "प्रणाम, प्रियतमा" मन ही मन में लैवरिटस्की ने कहा और वहीं बैठा-बैठा अब अन्धेरी खिड़की की ओर देखने लगा।

फिर उसने देखा कि नीचे के एक कमरे में कुछ उजाला हुआ फिर दूसरे में और फिर तीसरे में। कोई कमरों में दीपक लिए घूम

रहा था। "शायद लिज़ा ही हो" उसने सोचा और खड़ा होकर देखने लगा। वही परिचित प्रिय मुखड़ा था। लिज़ा अब बैठक में आ गई थी। लम्बा सा सफेद चोला पहिने, बालों को पीछे की ओर बाँधे वह धीरे-धीरे एक मेज़ के पास गई और दीपक रख कर कुछ ढूँढने लगी। फिर वाटिका की ओर मुँह कर वह खुले दरवाज़े में आ खड़ी हुई। उसके सफेद चोले में ढके, इकहरे शरीर को देख लैवरिटस्की काँप गया।

"लिज़ा" धीमी सी आवाज़ में वह बोला।

लिज़ा हैरान हो अन्धेरे में देखने लगी।

"लिज़ा" अब लैवरिटस्की ज़रा ऊँचा बोला और अन्धकार से बाहर आ गया।

लिज़ा उसे देख एक दम घबरा गई। उसने उसे पहचान लिया था।

"लिज़ा" लैवरिटस्की ने तीसरी बार पुकारा और अपनी बाहें फैला दीं। लिज़ा अब दरवाज़े से वाटिका में आ गई।

"तुम......यहां"

"हां...मैं...मेरी बात तो सुनो" वह उसे पकड़ कर बैंच की ओर ले गया। लिज़ा बिना कुछ कहे उसके साथ चलदी। उसके पीले मुख और घबराई हुई आंखों से हैरानगी टपक रही थी। लैवरिटस्की ने उसे बिठा दिया और स्वयं उसके सामने खड़ा हो गया।

"मेरा यहां आने का तनिक भी विचार न था" वह बोला, "मैं...मुझे कुछ खींच लाया है...मैं...मैं तुम्हें प्रेम करता हूँ" आखिर उसने कह ही डाला।

लिज़ा ने धीरे धीरे आंखें ऊपर उठाईं मानो नींद से उठी हो। अब उसे पहिली बार ज्ञान हुआ कि मैं कहां हूँ और यह सब क्या हो रहा है। उसने उठना चाहा पर उठ न सकी और अपना मुँह हाथों में छिपा कर बैठ गई। उसके सारे शरीर में सनसनी सी फैल गई और यह कांप उठी। अपने हाथों को उसने और ज़ोर से दबा लिया।

"क्यों...क्या है" लैवरिटस्की बोला। एक दबी हुई सिसकी उसे सुनाई दी। इन आंसुओं का आशय वह जान गया।

"तो...क्या, क्या तुम भी मुझ से प्रेम करती हो" और वह लिज़ा के घुटनों को पकड़ कर बैठ गया।

"उठो...उठो फेदया" उसने सुना "यह हम क्या कर रहे हैं?" वह उठा और उसके पास बैठ गया। अब वह रो नहीं रही थी केवल गीली गीली आंखों से एकटक उसकी ओर देख रही थी।

"मुझे डर लगता है" वह बोली "यह हम क्या कर रहे हैं"

"मैं तुमसे प्रेम करता हूँ, लिज़ा। मैं अपना सारा जीवन तुम पर न्योछावर करने को तैय्यार हूँ।"

वह फिर से कांप उठी मानो कहीं चोट लगी हो और ऊपर आकाश की ओर आंखें उठा देखने लगी।

"यह सब भगवान के हाथों में है" वह बोली।

"पर तुम मुझे प्रेम तो करती हो न, लिज़ा। हम बहुत प्रसन्न रहेंगे।"

उसने आखें नीची करलीं। लैवरिटस्की ने उसे अपनी ओर खींचा। उसका सिर लैवरिटस्की के कन्धे से सट गया। लैवरिटस्की झुका और उसके होंठ लिज़ा के होठों से जा मिले।

आध घन्टो बाद लैवरिटस्की बाग के फाटक पर खड़ा था फाटक बंद था इस लिए उसे कूद के जाना पड़ा। वह शहर की ओर चल पड़ा। चुपचाप, सूनी अंधेरी सड़कों से लैवरिटस्की चलता गया। आज उसके मन में बहुत खुशी थी। इतनी तो उसे कभी आशा भी न थी। उसके मन के सब संशय मिट गये। "अतीत की भद्दी परछाईयो, अब मुझे छोड़ दो। वह मुझ से प्रेम करती है" वह मन ही मन सोचता रहा और तभी—एक दम सारा वायुमंडल एक स्वर्गीय संगीत से भर गया। लैवरिटस्की रुक गया। संगीत अब और भी ऊँचा हो गया...मानों कहीं से स्वर की लहरें आ रही हों, मानों उसके हृदय का सारा उल्लास उसी संगीत में भरा हो। लैवरिटस्की ने इधर उधर देखा। एक छोटे से घर के ऊपर के कमरे से यह स्वर लहरी बह रही थी।

"लैम्म" लैवरिटस्की चिल्लाया। "लैम्म, लैम्म" वह जोर जोर से पुकारने लगा।

स्वर रुक गए। खिड़की में से एक वृद्ध पुरुष ने झांका। उसके बाल सब बिखरे थे। रात का पुराना सा कोट पहिने वह खड़ा था।

"ओह," बड़ी गम्भीरता से बोला "तुम हो।"

"क्रिस्टोफर लैम्म, यह इतना बढ़िया संगीत...भगवान के लिये मुझे आने दो।

बिना कुछ कहे वृद्ध ने ऊपर से ही घर की चाबी फैंक दी। लवरिटस्की भाग कर सीढ़ियां चढ़ता हुआ ऊपर लैम्म के पास

पहुंचा पर लैम्म ने उसे दूर से ही कुरसी पर बैठने का इशारा किया। "बैठो—सुनो" और वह स्वयं पियानो के पास कुरसी पर बैठ गया।

बहुत समय से लैवरिटस्की ने ऐसा संगीत न सुना था। उस सुन्दर तान ने शुरू से ही उस के हृदय पर जादू कर लिया। उसमें मानो संसार का सारा सुख और सारी सुन्दरता भरी थी। धीरे धीरे सारा वातावरण ही संगीत से भर गया और फिर हवा से होती हुई वह तान मानों स्वर्ग की छोर तक पहुंच गई। उसमें मानों मानव हृदय की सब उमंगे भरी थीं। लैवरिटस्की झूम उठा। संगीत ने उस के हृदय के तारों को छेड़ दिया। प्रेम से वह सिहर उठा।

अभी अन्तिम स्वर डूब भी न पाए थे कि लैवरिटस्की ने लैम्म से फिर बजाने की प्रार्थना की। वृद्ध ने अभिमान से उसकी ओर देखा और छाती ठोक कर बोला, "यह सब मैंने रचा है। मैं गायक हूं...बहुत बड़ा गायक।" उसने फिर से वही तान बजाई। कमरे में कोई दीप न था। खिड़की में से नये चाँद की किरणें झांक रही थीं। वायु भी मानो संगीत से भरी थी। छोटा सा वह मैला कुचैला कमरा उस समय बड़ा पवित्र लग रहा था। चांद की चांदनी में चमकता हुआ वृद्ध लैम्म का मुख भी बड़ा तेजस्वी लग रहा था। लैवरिटस्की ने उठ कर उसे गले से लगा लिया। पहिले तो लैम्म ने उसकी ओर तनिक भी ध्यान न दिया बल्कि उल्टा उसे हाथ से दूर करता रहा। कुछ देर वह वैसे ही गंभीर सी मुद्रा बनाये बैठा रहा पर आखिर उसके मुख का भाव भी बदल गया। लैवरिटस्की के घड़ी घड़ी बधाई देने पर पहिले वह ज़रा मुस्कराया और फिर बालकों की तरह रोने लगा।

"यह अजीब बात है", वह बोला 'कि तुम इस समय आ जाए हो। पर मैं सब समझता हूँ, सब जानता हूँ।"

"सब जानते हो" लैवरिटस्की हक्का बक्का सा हो गया।

"तुमने यह सुना नहीं, तुम समझते नहीं कि मैं सब जानता हूँ।"

दिन तक लैवरिटस्की सो न सका। सारी रात वह अपने पलंग पर बैठा रहा। लिज़ा भी नहीं सोई। वह प्रार्थना करती रही।

पाठक लैवरिटस्की के विषय में तो सब कुछ जानते हैं। अब हम लिज़ा के बाल्यकाल और शिक्षा के विषय में कुछ बतायेंगे। जब उसके पिता का देहान्त हुआ तो वह अभी दस ही वर्ष की थी। पिता ने कभी भी उसकी ओर अधिक ध्यान न दिया था। वह सदा अपने काम में ही मग्न रहता। धन जोड़ने की लग्न में उसे औरों के लिए समय ही न था। स्वभाव से वह क्रोधी और ढीठ सा था। बच्चों के पालन पोषण के लिए, उनके पढ़ाने लिखाने के लिए जितना भी धन आवश्यक होता, वह बिना हूँ हाँ किये व्यय करता पर इससे अधिक वह कुछ न करता। बच्चों से वह कभी भी ज्यादा बात न करता—उसके पास समय ही कहाँ था। वह सारा दिन काम में ही लगा रहता। सोता भी वह बहुत थोड़ा। कभी-कभी आठवें या दसवें दिन थोड़ी ताश खेल लेता और फिर वैसे ही काम में लग जाता। वह कहा करता कि मैं

तो हल में जुते हुए बैल की तरह हूँ। मृत्यु शैय्या पर पड़े-पड़े भी उसे यही विचार आया कि मेरा जीवन कितनी जल्दी समाप्त हो गया है।

मारया ने भी लिज़ा की ओर अपने पति से अधिक ध्यान नहीं दिया। चाहे वह बातों में तो कह देती थी कि मैंने अकेले ही लिज़ा की देख भाल की है पर वास्तव में उसने भी पति की तरह बच्चों की परवाह नहीं की थी। वह लिज़ा को गुड़ियों जैसे कपड़े पहिना बना संवार कर रखती—अतिथियों के सामने उससे प्यार भी खूब करती- मुँह पर उसकी प्रशंसा भी कर देती। यहाँ तक ही मानों उसका कर्तव्य था। मारया वास्तव में इतनी आलसी थी कि उससे कुछ किया ही न जाता था।

पिता के जीवन काल में लिज़ा की अध्यापिका एक फ्रांसीसी, श्रीमति मोरियो थी पर पिता की मृत्यु के बाद मारफा टिमोफीना ही उसकी देखभाल करने लगी। मारफा को तो पाठक जानते ही हैं। मोरियो एक छोटी सी, सिकुड़ी हुई सी स्त्री थी। उसके हाव भाव पक्षियों से थे और बुद्धि भी केवल उतनी ही थी। युवावस्था में वह बहुत रंगीली होती थी पर आयु बड़ी होने पर अब उसे केवल दो ही शौक रह गए थे—खाना और ताश खेलना जब वह पेट भर खा लेती और उसे ताश आदि खेलने को न मिलती तो उसका मुख बिल्कुल मृतक और भावहीन सा लगता। वह चुपचाप बैठी इधर-उधर देखती रहती। उसके मस्तिष्क में कोई विचार न आता। वह ज़रा भी उदार-चित न थी—शायद उसकी युवावस्था कुछ ऐसी रही थी या शायद पैरिस में सारी उमर रहने के कारण उसका स्वभाव कुछ ऐसा हो गया था कि वह किसी ओर भी कुछ अधिक ध्यान न देती। ज्यादा बातचीत

करने की भी उसकी आदत न थी—ऐसी थी मोरियो, लिज़ा की अध्यापिका। भला इससे अधिक गुण और क्या हो सकता है, सभी सोचते। हाँ लिज़ा पर उसका बहुत ही कम प्रभाव पड़ा। उसकी धाय अगाफया का उसके चरित्र पर बड़ा असर हुआ।

अगाफया का जीवन भी विचित्र ही था। वह किसान घराने की थी और १६ वर्ष की अवस्था में उसका एक किसान से विवाह हो गया। पर उसकी कोई भी बात अपने साथ वाली किसान लड़कियों सी नहीं थी। उसका पिता बहुत वर्ष एक ज़िमींदारी पर लम्बरदार रहा था और उसने खूब धन एकत्रित किया था। अगाफया उसकी चहेती बेटी थी और उसने उसे खूब बिगाड़ा हुआ था। अगाफया बहुत सुन्दर थी। लोग उसे 'गांव की रानी' कहा करते। सुन्दर होने के साथ-साथ वह बड़ी साहसी और चतुर भी थी। मारया मित्रविना के पिता मित्री पैस्तोव ने एक बार उसे धान छाँटते देखा और उससे प्रेम करने लगा। थोड़ी ही देर बाद अगाफ़या विधवा हो गई। पैस्तोव को और क्या चाहिए था। चाहे वह स्वयं विवाहित ही था पर अगाफया को वह अपने घर ले आया। अगाफया चतुर तो थी ही वह वहाँ ऐसे रहने लगी मानों किसानों में कभी रही ही न हो। उसके हाव-भाव, बोल-चाल सभी धनियों से थे। वह बहुत सुन्दर वस्त्र पहनती, नरम बिस्तरों पर सोती और सारा दिन गप्पें मारने और चाय पीने में ही काट देती। शरीर उसका कुछ भारी हो गया और वह बिल्कुल व्यापारियों की स्त्रियाँ सी लगने लगी। पर यह हालत भी बहुत देर न रही—पाँच वर्ष बाद मित्री पैस्तोव का देहान्त हो गया। पैस्तोव की पत्नी बड़ी दयालु थी। उसने पहिले तो अगाफया को नहीं रहने दिया। अगाफया भी सदा

उससे परे-परे ही रहती थी इसलिए मालकिन को उससे विशेष वैर न था। थोड़ी देर बाद अगाफया का विवाह उसने अपनी जमींदारी के ही एक ग्वाले से कर दिया। तीन वर्ष बीत गए। एक दिन कड़कड़ाती गर्मी में मालकिन इसी ग्वाले के यहाँ गई। अगाफया ने इतने प्रेम और इतनी श्रद्धा से उसका आदर सत्कार किया कि वह पिछली सब बातें भूल उसे अपने साथ ले आई। छः महीने के अन्दर ही मालकिन को उससे इतना प्यार हो गया कि घर बाहर की देखभाल का सारा काम उसने अगाफया के हाथ सौंप दिया। अगाफया फिर से मोटी ताजी हो गई मालकिन की वह विश्वास पात्र जो थी।

ऐसे ही और पांच साल बीत गए और फिर अगाफया के बुरे दिन आ गए। उसका पति जो अब अर्दली की पदवी पर था बहुत शराब पीने लगा। कई बार वह घर से भाग जाता। एक दिन उसने मालकिन के छः चांदी के चमच चुरा कर अगाफया की ही अलमारी में छुपा दिए। बात छिपी न रही। उसे अरदली के पद से हटा दिया गया और अगाफया को भी घर की देख भाल के बदले केवल सीने पिरोने के काम पर लगा दिया गया। उसके सिर की लेस की बढ़िया टोपी हटा दी गई और उसकी जगह उसे केवल रुमाल बांधने की ही आज्ञा मिली। सब का विचार था कि अगाफया यह अपमान न सह सकेगी पर उस ने चुपचाप सिर झुका नम्रता से सब सहा। उसकी आयु अब तीस वर्ष से अधिक हो चुकी थी और उसकी सब संतानें मर चुकी थी। पति भी अब अधिक न जिया। अगाफया ने अब अपना ध्यान ही दूसरी ओर डाल लिया वह बड़ी भक्तिनी हो गई। अपने सब बढ़िया बढ़िया वस्त्र उसने दान दे दिए और

बड़े नियम से पूजा पाठ करना शुरु कर दिया। १५ वर्ष उसने ऐसे ही बिता दिए। चुपचाप सिर झुकाये वह अपना काम करती। यदि कोई कुछ बुरा भला कह भी देता तो वह चुपचाप सब सुन लेती। मालकिन ने उसे कब्र का क्षमा कर दिया था और उसे लेस की टोपी पहिनने की भी आज्ञा दे दी थी पर अगाफया ने अब अपने सीधे सादे काले वस्त्र और सिर का रुमाल न छोड़ा। मालकिन की मृत्यु के बाद तो वह और भी चुप और विनम्र हो गई।

रूसियों का प्रायः स्वभाव ही ऐसा होता है कि वह जल्दी ही डर जाते हैं और जल्दी ही प्रेम करने लगते हैं पर वह किसी की इज्ज़त थोड़े में नहीं करते। अगाफाया की अब घर में बहुत इज्ज़त थी। कोई कभी पिछली बातों का नाम तक न लेता।

जब कालीटीन का विवाह मारया मित्रविना से हुआ तो उसने घर की देखभाल का भार अगाफया पर छोड़ना चाहा पर अगाफया ने 'लालच के भय' से स्वीकार न किया। जब कालीटीन क्रोध में ज़ोर-ज़ोर से बोलने लगा तो वह चुप हो बाहर चली गई। कालीटीन ने भी बहुत दुनिया देखी थी। वह फौरन ही स्त्री का मूल्य पा गया। जब वह शहर के घर में गए तो उसने मारया की सहमति से ही उसे लिज़ा की देखभाल को नियुक्त किया। लिज़ा उस समय पाँच वर्ष की थी।

शुरू शुरू में तो उसकी कठोर और गम्भीर मुद्रा देख, लिज़ा अगाफया से डर जाती पर धीरे-धीरे वह अगाफया से बहुत प्रेम करने लगी। लिज़ा स्वयं भी बड़ी गम्भीर प्राकृति की थी। उसके मुख की बनावट, मुँह, नाक सब अपने पिता से थे केवल उसकी बड़ी-बड़ी कोमल, दयालु सी आँखें पिता से भिन्न थीं। गुड़िया

खेलने का उसे जरा भी शौक न था। वह कभी भी बहुत खिल-खिला कर न हँसती। स्वभाव से वह बहुत विचारशील न थी पर कुछ देर चुप बैठने के बाद वह कोई न कोई ऐसा प्रश्न कर देती जिससे पता लगता कि वह बहुत कुछ सोचती रही है। बड़ी छोटी आयु में ही उसने तुतलाना छोड़ दिया। तीन वर्ष की आयु में वह बिल्कुल स्पष्ट बोलने लगी। लिज़ा अपने पिता से बहुत डरती थी—माँ के प्रति भी उसका व्यवहार कुछ उदासीन ही था। वह न तो माँ से डरती और न ही कभी उससे बहुत प्यार करती। अगाफया से उसे बहुत प्रेम था पर उसके प्रति भी कभी उसने प्रेम नहीं दिखाया था। वह सदा अगाफ़या के साथ ही रहती। दोनों की जोड़ी बड़ी विचित्र थी। अगाफया सदा काले कपड़े पहिने रहती। उसका मोम की तरह पीला मुख अभी भी सुन्दर था। वह सीधी पीठ किए कुर्सी पर बैठ बुनती रहती और लिज़ा उसके पास अपनी छोटी सी कुर्सी पर बैठ कुछ काम आदि करती या अगाफया की बातें सुनती रहती। अगाफया कभी भी उसे कोई परियों आदि की कहानी न सुनाती वरन् उसे धार्मिक गाथायें सुनाया करती। कुमारी मेरी, इसा मसीह और सन्तों के विषय में बताया करती। कैसे वह जंगलों में रह कठोर से कठोर दुःख झेलते, भूखों मरते पर अपने धर्म पर सदा अटल रहते—कैसे जंगल के पशु पक्षी-आकर उनकी सहायता करते और जहाँ-जहाँ उनके पवित्र लहू की बूँद गिरती वहीं पर फूल निकल आते। "फूल", लिज़ा कहती, "चमेली के फूल"। फूलों से उसे बहुत प्रेम था। पर अगाफया उसे टाल देती और कहती कि बच्चे ऐसी बातें नहीं करते। ऐसी बातें रोज-रोज घन्टों सुन कर लिज़ा के हृदय में मानों धर्म ने घर कर लिया। उसके कोमल पवित्र हृदय

में भगवान बस गए और उसे इसा महीस से ऐसे प्रेम हो गया मानों कोई बहुत निकट के प्रिय जन हों। अगाफया ने उसे पूजा करनी भी सिखाई। कभी कभी वह बिल्कुल सवेरे ही लिजा को पलंग से उठा, उसके कपड़े बदल अपने साथ गिरजे ले जाती। प्रातः चोरी-चोरी उठ कर जाना, फिर वैसे ही धीरे से आ पलंग में लेट जाना, गिरजे का चुपचाप वातावरण, इन सब बातों से लिजा को बहुत आनन्द आता। अगाफया कभी भी किसी को गुस्से न होती और न ही कभी उसे लिजा पर क्रोध आता। जब उसे कोई बात अच्छी न लगती तो वह चुप हो जाती और लिजा इस चुप्पी का आशय भली प्रकार समझती। जब अगाफया उसके माँ बाप से नाराज होती तो भी लिजा सब भांप लेती। अगाफया को लिजा की देखभाल करते तीन साल हुए थे जब उसका स्थान फ्रैंच श्रीमति ने ले लिया। पर लिजा के हृदय में वह बुद्धिहीन फ्रैंच स्त्री कभी भी घर न कर सकी। अगाफया अब लिजा को छोड़ घर की देखभाल का ख्याल करती थी पर उसी घर में रहने के कारण वह उसे थोड़ा बहुत देखती ही रहती।

जब मारफा टिमोफीना, कालीटीनों के यहाँ रहने को आई तो उसकी अगाफया के संग न बन आई—ढीठ और स्वतन्त्र विचारों वाली मारफा को इस किसान स्त्री की यह गम्भीरता और संयम न भाया। अगाफया तीर्थ यात्रा को चली गई और फिर न लौटी। कई लोग कहते कि वह दूर रास्कोलिन्सक के आश्रम में चली गई। पर अगाफया लिजा के हृदय पर अमिट छाप छोड़ गई। लिजा बड़े नियम से गिरजे जाती और नियम से पूजा पाठ करती। मारया पुत्री की यह धर्म निष्ठा देख बड़ी हैरान होती। मारया चाहे लिजा को किसी भी बात से मना न

करती पर उसे लिज़ा की यह धर्मपरायणता सदा ही खटकती। भला भले घरों की लड़कियाँ भी कभी ऐसी करती हैं! लिज़ा बहुत मेहनती थी। इसी लिए चाहे उसकी बुद्धि कुछ बहुत तेज़ न थी फिर भी वह पढ़ने लिखने में अच्छी थी। पियानो भी वह खूब अच्छा जानती, पर केवल लैम्म ही जानता था कि उसे कितना परिश्रम करना पड़ता है। उसको पढ़ने का बहुत शौक न था और न ही वह बहुत बोलती थी पर करती वह सदा अपनी मनमानी ही थी। अपने पिता की तरह वह बिना किसी से पूछे जो जी में आए वही करती। ऐसे ही वह सयानी हो गई—१६ वर्ष की। अब वह बहुत सुन्दर और आकर्षक थी। उसकी बातचीत में एक अनोखा भोलापन सा था—उसकी आवाज़ में यौवन की मिठास थी—ज़रा सी बात से वह मुस्करा उठती और उसकी आँखें भी हँसने लगतीं। उसे अपने कर्त्तव्य का सदा ध्यान रहता और इस बात का वह पूरा विचार रखती कि उसकी किसी बात से किसी का जी न दुखे। उसे यों तो सब ही अच्छे लगते पर वह किसी से भी अधिक प्रेम न करती। बस केवल भगवान से ही उसे प्रेम था।

लैवरिटस्की ने पहिले आ उसके मन की शांति भंग की। ऐसी थी लिज़ा।

अगले दिन प्रातः ग्यारह बजे को करीब लैवरिटस्की कालीटीनों के यहाँ गया। रास्ते में उसे घोड़े पर जाता पाशिन मिला। पाशिन ने टोपी आँखों के ऊपर की हुई थी। कालीटीनों के यहाँ उसे

कोई न मिला। जब से उसका उनसे परिचय हुआ था, आज पहिली बार थी कि उसे कोई न मिला। अरदली ने कहा कि मारया मित्रविना आराम कर रही हैं और लिजा और मारफा घर पर ही नहीं। लैवरिटस्की कुछ देर वाटिका में इधर-उधर घूमता रहा कि शायद कहीं लिजा मिल जाए पर उसे निराश ही लौटना पड़ा। दो घन्टे बाद वह फिर आया पर अब भी वही उत्तर मिला। तीसरी बार जाना तो बुरा लगता था, इसलिए लैवरिटस्की 'वैसीलीस्कोय' चला गया। रास्ते में वह सोचता गया कि वहाँ क्या-क्या काम करना है पर वहाँ पहुंचते ही वह तंग आ गया। वृद्ध ऐण्टन भी आज अजीब सी भयावनी बातें कर रहा था। वह लैवरिटस्की को बताने लगा कि कैसे मृत्यु से पहले ग्लैफीरा ने अपना हाथ स्वयं ही काट लिया था और फिर लम्बी आह खींच कर बोला कि वास्तव में हर एक मनुष्य अपने आप को स्वयं ही मार डालता है।

जब लैवरिटस्की शहर वापिस लौटा तो काफी शाम हो चुकी थी। पिछली रात का वह मधुर संगीत अब भी उसके मस्तिष्क में गूँज रहा था। लिजा की पवित्र मूर्ति घड़ी-घड़ी उसकी आँखों के सन्मुख आती। "वह मुझे प्रेम करती है" इस विचार से लैवरिटस्की का मन आनन्द विभोर हो उठता। ऐसे ही विचारों में, लैवरिटस्की खुशी-खुशी अपने शहर वाले घर पहुंचा।

ड्योढ़ी में पहुंचते ही उसे एक विशेष प्रकार की गन्ध आई जिस से कि उसे घृणा थी। वहाँ सफर के बड़े-बड़े संदूक और सूटकेस पड़े थे। उसका नौकर जो बाहिर निकला तो उसे उसकी शक्ल भी अजीब सी लगी। बिना कुछ देखे सुने वह सीधा गोल कमरे में गया। दीवान से एक बड़े फैशनेबल काले कपड़ों

वाली स्त्री उठी । उस के हाथ में बड़ा सुन्दर सा रुमाल था और उसके बाल बहुत बढ़िया संवारे हुए थे। सिर झुका कर वह उस के पैरो में गिर गई। अब कहीं लैवरिटस्की को समझ आयी कि वह कौन है । यह उसकी पत्नी थी।

उसका सांस मानों रुक गया हो। दिवार का सहारा ले कर वह खड़ा हो गया।

"फेयोडोर, मुझे ठुकराओ मत" वह फ्रैंच में बोली। उसके शब्द तेज छुरी की भांति लैवरिटस्की के हृदय में चुभ गए। वह भौंचक्का सा उसकी ओर देखता रहा। उसे लगा कि वह आगे से मोटी और गोरी हो गई है।

"फेद्या" उसने फिर कहा।

वह अपनी आंखें कभी ऊपर उठाती और कभी नीचे देखती। अपने सुन्दर हाथों को वह मलती।

"फेद्या, मैं ने तुम्हें बहुत तंग किया है...बहुत...मैं बड़ी नीच हूं पर कृपया एक बार मेरी बात तो सुन लो। मुझे अपने किये पर बहुत खेद है...मैं बहुत दुखी हूं । जीवन अब मेरे लिए भार हो गया है—अब तो सहा नहीं जाता। कई बार सोचा है कि आकर तुम्हारे पैरों में गिर प्रार्थना करूँ, क्षमा की याचना करु पर...तुम्हारे क्रोध से मैं डर जाती हूँ। मैंने अपने अतीत को अब बिल्कुल भुला देने की ठानी है मैं बहुत बीमार थी और जब मेरी मृत्यु की अफवाहें उड़ने लगीं तो उन्हीं का फायदा उठा मैं बिना कहीं ठहरे सीधी यहां आ गई। आने के पहले मैं बहुत झिझकती थी पर तुम्हारे उदार हृदय का विचार कर मैंने हिम्मत की। "सच कहती हूँ" वह बोलती गई। जमीन से उठ कर अब वह एक कुरसी पर बैठ गई "बहुत बार सोचा

है कि मर जाऊँ...आत्महत्या कर लूँ...जीवन में धरा ही क्या है। पर फिर अपनी नन्हीं ऐडा का विचार मेरा हाथ थाम लेता है। वह भी यहीं है। बिचारी भोली बालिका साथ वाले कमरे में सोई पड़ी है...देखो वह कितनी थक गई है बिचारी। वह तो निर्दोष है...ओह-ओह मैं कितनी दुखी हू" वह फूट फूट कर रोने लगी।

लैवरिटस्की को मानों अब होश आया हो। वह दिवार से हट दरवाज़े की ओर चल पड़ा।

"तुम जा रहे हो" उसकी पत्नी चिल्लाई" ओह, कितने निष्ठुर हो तुम। एक शब्द भी नहीं बोले। हे भगवान, इतना अपमान तो नहीं सहा जाता।"

लैवरिटस्की खड़ा हो गया।

"क्या चाहती हो तुम"

"कुछ नहीं, कुछ नहीं" वह बोली "मैं जानती हू कि मेरा कुछ अधिकार ही नहीं। मैं पागल नहीं हू मैं समझती हूँ कि मेरे लिए कोई आशा नहीं...तुम मुझे क्षमा नहीं कर सकते। मेरी तो बस एक ही प्रार्थना है। तुम मुझे आज्ञा दो कि मैं क्या करूँ... मैं दासों की तरह तुम्हारी आज्ञा का पालन करना चाहती हूँ।"

"मैंने तुम्हें क्या आज्ञा देनी है। तुम्हें पता ही है कि अब हम में कुछ ऐसी बात ही नहीं है। जहां तुम्हारी इच्छा हो रहो, जो चाहे करो। हां जो तुम्हें पैसे मिलते हैं वह कम हैं तो..."

"ऐसी बातें मत करो" बारबरा बोली "मुझ पर कुछ दया करो" इस भोली बच्ची पर ही तरस करो। यह कह वह साथ वाले कमरे की ओर भागी और एक छोटी सी लड़की को उठा लाई। बालिका ने बहुत सुन्दर वस्त्र पहने थे। सुनहरे बालों की लटें उसके

गुलाबी मुँह पर गिर रही थीं। बड़ी बड़ी अलसाई आंखें खोल वह मुस्कराई और एक गोल सा हाथ मां के गले में डाल दिया।

"ऐडा, यह तुम्हारे पापा हैं" उसके बाल पीछे करते हुए बारबरा बोली।

"पापा" बच्ची तुतलाई।

"ओह बिचारी भोली" बारबरा ने कहा क्या तुम इसे प्यार करते हो।" लैवरिट्स्की को यह सब बहुत बुरा लगा।

"यह कौन से नाटक का दृष्य हैं" वह बोला और बाहिर चला गया।

बारबरा थोड़ी देर चुप खड़ी रही फिर अपने कंधे सिकोड़ वह दूसरे कमरे में चली गई। लड़की के कपड़े उतारे। और उसे सोने के लिए पलंग में डाल दिया। फिर उसने एक किताब उठाई, दीप जलाया और लगभग घन्टा भर पढ़ने के बाद वह भी सोने को चली गई।

"तो फिर, मालकिन" फ्रैंच दासी ने उसके कपड़े बदलते हुए कहा।

"हां जसटीन" उसने उत्तर दिया।" अब जरा उसकी आयु भी तो बड़ी हो गई है पर मेरा विचार है कि अभी भी वह वैसा ही दयालु होगा। मेरे रात वाले दस्ताने दे दो। सुबह के लिए मेरे ऊँचे गले वाला स्लेटी जोड़ा निकाल दो। और हां ऐडा के लिए मटन चाप्स मत भूलना। पता नहीं यहां मिलेंगे या नहीं पर ढूँढने की कोशिश अवश्य करना।"

"बहुत अच्छा" जसटीन ने दिया बुझा दिया।

दो घन्टे से अधिक लैवरिटस्की इधर उधर सड़कों पर घूमता रहा। पैरिस में भी एक रात उस ने यों ही काटी थी। उस के हृदय में अन्धकार सा हो गया था। उसका सिर घूमने लगा। "वह जीती है—वह लौट आई है" घड़ी घड़ी वह बुड़बुड़ाता। "अब लिजा सदा के लिए छूट गई है।" यह विचार उसे क्रोध से मतवाला कर रहा था। यह जो आकाश से बिजली सी आ गिरी थी। फिर वह सोचता कि "मैं अभी कितना मूर्ख हूँ। अखबार की बात को ही सत्य मान बैठा। पर यदि मैं न मानता, इस को क्या होना था। शायद मुझे कभी भी पता न लगता कि लिजा भी मुझ से प्रेम करती है और न ही शायद लिजा को यह पता लगता।"

पत्नी की मूर्ति, आँखें, आवाज घड़ी-घड़ी उसके दिमाग में आती और गुस्से में वह सारे संसार को गालियाँ देती।

थका टूटा वह प्रभात को लैम्म के घर पहुंच गया। बहुत देर तक वह दरवाजा खटखटाता रहा पर भीतर से कोई उत्तर न मिला। आखिर ऊपर की एक खिड़की से लैम्म ने झांका। रात वाली टोपी पहने आज वह बड़ा सिकुड़ा हुआ क्षीण सा लग रहा था। चौबीस घंटे पहले की आभा अब उसके मुख पर न थी।

"क्या है" लैम्म बोला "मैं हर रात तो नहीं गा सकता तुम्हारे लिए, आज मैं ने दवाई पी हुई है।"

लैवरिटस्की का मुँह बहुत उतरा हुआ था। लैम्म ने ध्यान से उसकी ओर देखा और दरवाज़ा खोल दिया।

लैवरिटस्की कमरे में आकर एक कुरसी पर पड़ गया। लैम्म हैरान सा हो अपना कोट लपेटे उसके सामने खड़ा हो गया। सर्दी के मारे वह काँप रहा था।

"मेरी पत्नी आ गई है" लैवरिटस्की ने कहा और जोर से पागलों की तरह हँसने लगा।

लैम्म बिल्कुल हैरान सा खड़ा उसकी ओर देखता रहा। वह हँसा नहीं केवल अपना पुराना सा कोट उसने और अच्छी तरह से लपेट लिया।

"तुम्हें शायद पता नहीं" लैवरिटस्की बोला "मैंने एक अखबार में पढ़ा था कि वह मर गई है"

"कब...अच्छा थोड़े ही दिन पहले तुम ने यह पढ़ा होगा"

"हां, थोड़े ही दिन हुए हैं"

"ओहो"...वृद्ध ने आँखें उठा कर कहा "और अब वह लौट आई है"

"हां, वह मेरे घर में है अब...मैं कितना भाग्यहीन हूँ"

"सच। तुम अभागे हो" लैम्म ने उसकी बात दुहराई।

"क्रिस्टफोर लैम्म, तुम मेरा एक काम करोगे। एक चिट्ठी पहुंचा दोगे"

"हाँ...किसको"

"ऐलिज़बीटा को"

"हाँ हाँ—मैं समझ गया........अच्छा कब पहुंचानी है"

"कल—जितनी भी जल्दी हो सके"

"तो मैं अपनी दासी कैथरीन को भेज दूँगा—पर नहीं मैं ही जाऊँगा"

"उत्तर भी लाना होगा।"

लैम्म ने लम्बी आह भरी। "सच मेरे मित्र तुम वास्तव में ही अभागे हो।"

लैवरिटस्की ने दो चार शब्द ऐलीजवीटा को लिखे। उसे बताया कि मेरी पत्नी आ गई है और मैं तुम्हें मिलना चाहता हूँ। यह लिख वह दीवान पर दीवार की ओर मुँह करके लेट गया। लैम्म भी अपने पलंग पर लेट गया पर सारी रात वह अशान्त सा करवटें बदलता रहा और खाँसता रहा।

प्रातः वह दोनों उठे। एक दूसरे की ओर यों देखने लगे मानो अनजान हों। लैवरिटस्की के जी में आया कि जीवन को ही समाप्त कर दूँ। दासी काफी के दो प्याले मेज पर रख गई। दोनों ने काफी पी। घड़ी ने टनटन कर आठ बजाए। लैम्म अपनी टोपी पहन चलने लगा "यों तो उनके घर मैं प्रायः दस बजे जाया करता हूँ पर आज कुछ बहाना ढूँढ लूँगा।"

लैवरिटस्की फिर उसी दीवान पर लेट गया। विधाता ने भी उसके साथ क्या खेल खेला था—उसे अपने ऊपर हंसी आ गई। उसकी पत्नी ने उसे घर से ही निकाल दिया। और लिज़ा बिचारी वह न जाने क्या सोचेगी? इन्हीं विचारों में खोया वह पड़ा लैम्म की प्रतीक्षा करता रहा। लिज़ा ने पैंसिल से लिख उत्तर भेजा "आज हम नहीं मिल सकते—शायद कल शाम को मिल सकें—प्रणाम।" लैवरिटस्की ने बड़ी रुखाई से लैम्म का धन्यवाद किया और घर की ओर चल पड़ा।

जब वह घर पहुंचा तो उसकी पत्नी बैठी नाश्ता कर रही थी। ऐंडा भी बाल संवारे, नीली रिबन वाली सफेद फ्राक पहने मटन चाप्स" खा रही थी। उसे देखते ही वारबरा बड़ी नम्रता से उठ खड़ी हुई। लैवरिटस्की ने उसे पढ़ने के कमरे में आने को कहा। कमरे का दरवाज़ा अन्दर से बन्द कर वह टहलने लगा और वारबरा चुपचाप एक ओर बैठ अपनी सुन्दर सुन्दर आँखों से उसे देखने लगी। कुछ समय तक लैवरिटस्की यत्न करने पर भी बोल न सका। उसने भली प्रकार पहचान लिया कि बारबरा चाहे ऊपर से कितना भी पाखण्ड करे, हृदय में उससे तनिक भी नहीं डरती। "देखो श्रीमती जी" वह आखिर बोला "हमें एक दूसरे को धोखा देने की आवश्यकता नहीं है। मुझे तुम्हारे इस पश्चाताप पर तनिक भी भरोसा नहीं। यदि यह सच्चा भी हो फिर भी मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता।"

बारबारा चुपचाप आँखें सिकोड़ उसकी ओर देखती रही। "इसे घृणा हो गई है अब मुझ से" उसने मन ही मन सोचा, "अब मैं इसकी दृष्टि में स्त्री भी नहीं रही।"

"यह कभी नहीं हो सकता" लैवरिटस्की ने अपना कोट बंद करते हुए कहा "पता नहीं क्यों तुम यहाँ आई हो? क्या पैसा कम हो गया है?"

"तुम मेरा अपमान करते हो" वारबरा बोली

"पर दुर्भाग्य से तुम अभी भी मेरी पत्नी हो। तुमको मैं घर से बाहर नहीं निकाल सकता। अब मेरा यह प्रस्ताव है— यदि तुम चाहो तो आज ही लैवरिकी चली जाओ। तुम जानती ही हो वहाँ का घर बहुत अच्छा है। अपनी पैंशन के साथ-साथ

और भी जो कुछ तुम्हें चाहिए वहाँ मिल जाएगा। पसंद है तुम्हें।"

बारबरा ने एक सुन्दर सा रुमाल निकाल कर आँखों पर रख लिया। "मैंने तो आगे ही कहा है" बड़ी रुआंसी आवाज़ से वह बोली "जो तुम कहो मुझे स्वीकार है। अब तो मेरी केवल एक ही प्रार्थना है कि जो तुमने मुझ अभागिन पर इतनी दया की है उसके लिए धन्यवाद तो करने दो।"

"धन्यवाद की बात छोड़ो", लैवरिटस्की जल्दी-जल्दी बोला "तो फिर तुम……"

"कल मैं लैवरिकी चली जाऊँगी" बारबरा अपनी जगह से उठ खड़ी हुई "किन्तु फेदया……"

"क्या"

"मुझे पता है कि तुमने मुझे क्षमा नहीं किया। पर क्या मैं आशा करूँ कि कुछ समय बाद………"

"ओह—बारबरा" लैवरिटस्की बीच में ही बोल पड़ा "तुम बहुत चालाक हो पर मैं भी इतना मूर्ख नहीं। मुझे पता है कि तुम्हें मेरी रत्ती भर भी परवाह नहीं। मैंने तुम्हें क्षमा तो कब का कर दिया है पर हमारे बीच सदा एक खाई रही है।"

"ठीक है" बारबरा सिर झुका कर बोली "मुझे अपने पाप भूल नहीं गए। मुझे तो यह जान कर भी हैरानगी नहीं हुई कि तुम मेरी मृत्यु के समाचार से भी प्रसन्न हुए थे" वह मेज़ पर पड़ी अख़बार की ओर इशारा करके बोली।

फेदया बिल्कुल हैरान हो गया। उस समाचार पर उसने पैंसिल से निशान लगाया हुआ था। बारबरा और भी विनम्र भाव से उसकी ओर देखती रही। इस समय वह बहुत सुन्दर लग

रही थी। पेरिस का बना हुआ स्लेटी गाऊन उसके इकहरे सुन्दर शरीर से चिपटा हुआ था। उसके सुन्दर गले पर सफेद कालर और सांस के साथ ऊँचा नीचा होता हुआ वक्षस्थल, नंगी गोल बांहें जिन पर कोई आभूषण न था सब बहुत आकर्षक लग रहे थे।

लैवरिटस्की को यह सब देख कर बड़ा क्रोध सा आ गया। उसका जी चाहा कि उसको ज़ोर से थप्पड़ मारूँ पर वह चुपचाप चला गया। घन्टे बाद वह "वैसीलीस्कोय" के मार्ग पर था और दो घन्टे के बाद बारबरा शहर का सब से बढ़िया घोड़ा गाड़ी ले, एक सीधी सादी टोपी और काली जाली तान, ऐडा को दासी के पास छोड़, काज़ोटीनों के यहाँ जा रही थी। नौकरों से उसने पता कर लिया था कि लैवरिटस्की प्रायः नित्य ही वहाँ जाता है।

जिस दिन लैवरिटस्की की पत्नी नगर पहुंची, वह दिन केवल लैवरिटस्की के लिये ही दुखप्रद नहीं था वरन् लिज़ा भी उस दिन बड़ी दुखी रही। अभी वह प्रातः उठ कर नीचे माँ के पास गई ही थी कि बाहिर से घोड़े के टापों की आवाज़ आने लगी और उसने देखा कि पाशिन आंगन में से आ रहा था। यह आज इतनी सवेरे मुझ से उत्तर लेने ही आया है। लिज़ा ने सोचा और उसका विचार सत्य ही निकला। बैठक में थोड़ी देर बैठ कर, पाशिन ने लिज़ा को बाहिर वाटिका में बुलाया और पूछने लगा कि मेरे भाग्य का क्या निर्णय हुआ है।

बड़ी हिम्मत कर लिज़ा ने उत्तर दिया कि वह उसकी पत्नी नहीं बन सकती। चुपचाप, टोपी नीचे कर पाशिन ने यह सुना और फिर बड़ी नम्रता से पूछने लगा "यह तुम्हारा निश्चय क्या पक्का है ? क्या मेरी किसी बात के कारण तुम ने यह निर्णय किया है" उसने आंखों पर हाथ रख लिया और लंबी साँस ले कर कहने लगा "मैंने दुनिया की रीति को ठुकरा कर अपने मन की इच्छानुसार एक जीवन साथी ढूंढना चाहा था पर भाग्य में तो यह न बदा था। अच्छा विदा मेरे सुन्दर स्वप्न।" इतना कह वह घर की ओर चल दिया।

लिज़ा का विचार था कि वह अब शीघ्र ही चला जायगा पर वह घन्टे भर से भी अधिक मारया मित्रविना के पास बैठा रहा। जाने से पहले उसने लिज़ा से कहा "अच्छा, कल तक प्रणाम" और घोड़े पर चढ़ कर घर चला गया। मारया मित्रविना की आंखों से आंसू बह रहे थे। पाशिन उसे सब बता गया था।

"यह तुम ने क्या कर दिया है...यह क्या किया है" बड़ी दुखी हो मारया बोली "तुम्हें और क्या चाहिए ? क्या यह तुम्हारे लिए अच्छा नहीं ? इतनी उच्च पदवी पर है। पीटर्सबर्ग में वह जिस से चाहे विवाह कर सकता है। यह तुमने क्या कर दिया है ? मैं तो इतनी आशा लगाये बैठी थी। कब से तुम ने अपनी राय बदली है ? मैं जानती हूं किसी के सिखावे में तुम यह सब कर रही हो। भला अपने आप यह कैसे हो सकता था ? कहीं मेरा वह गंवार भाई ही तो नहीं इस बात के पीछे ? बड़ा अच्छा मित्र बनाया है तुमने। और वह बिचारा पाशिन" वह कहती गई, "कितना विचारशील है वह ! इस समय भी वह कहता है कि मुझे नहीं त्यागेगा। ओह, लिज़ा मैं नहीं बचूंगी

अब। यह बहुत भारी आघात लगा है मुझे। उफ, मेरे सिर में बहुत दर्द हो रहा है। पलाशा को बुलाओ। फिर से सोचो नहीं तो समझो कि तुम ही मेरी मृत्यु का कारण बनोगी" ऐसे ही बुरा भला कह मारया ने लिज़ा को भेज दिया।

लिज़ा अपने कमरे में चली गई। अभी पाशिन और मारया की बात चीत के बाद उसके होश हवास ठिकाने ही आए थे कि फिर से तूफान उठ पड़ा। और अब उधर से जिधर से तनिक भी शंका नहीं थी। मारफा टिमोफीना, क्रोध से भरी तेज़ तेज़ चलती हुई लिज़ा के कमरे में आई और आते ही दरवाज़ा अंदर से बंद कर लिया। वृद्धा का मुख पीला हो रहा था, आंखें चमक रही थीं और होंठ कांप रहे थे। लिज़ा उसे देख कर बिल्कुल हैरान हो गई। इस समझदार बूआ को भी उस ने ऐसी दशा में नहीं देखा था। "बहुत अच्छा काम किया तुमने" मारफा ने कांपती हुई आवाज़ में कहा "बहुत अच्छा किया पर यह तो बताओ प्रिय, यह सब सीखा कहां से था ? थोड़ा पानी दो, मुझ से बोला नहीं जाता।"

"धीरज करो, बूआ, " लिज़ा ने पानी देते हुए कहा।" बात क्या है ? मेरा तो विचार था कि तुम्हें पाशिन अच्छा ही नहीं लगता।"

मारफा ने गिलास रख दिया।

"मुझ से नहीं पिया जाता। पर यह पाशिन की क्या बात है ? भला पाशिन का इससे क्या संबंध ? तुम मुझे वह बताओ कि आधी रात गए तुमने पराये लोगों से मिलना कहां से सीखा है ?"

लिज़ा पीली हो गई।

"अब झूठ मत बोलना" मारफा बोली "शारुचका ने अपनी आंखों से सब देखा है। मैंने उसे बात फैलाने से तो मना कर दिया है पर यह मैं भी जानती हूं कि वह झूठ कभी नहीं बोलती।"

"मैं कब न कर रही हूं, बूआ।" लिज़ा ने धीरे से कहा।

"अच्छा। यह बात है। तो फिर तुमने उस ऊपर से भोले लगने वाले पापी से मिलने की सलाह की हुई थी।"

"नहीं"

"तो फिर"

"मैं नीचे बैठक में एक किताब लेने गई थी। वह बाहिर बाग में था। उसने मुझे बुलाया।"

"और तुम चली गई। बहुत अच्छा किया। क्या तुम उससे प्रेम करती हो?"

"हां—मैं उससे प्रेम करती हूं।"

"हे भगवान। यह उससे प्रेम करती है।" मारफा ने अपने सिर की टोपी उतार कर हाथ में ले ली "यह प्रेम करती है एक विवाहित पुरुष से।"

"वह कहता था"—लिज़ा कहने लगी

"क्या कहता था?"

"कहता था कि मेरी पत्नी मर गई है।"

मारफा ने सीने पर 'क्रास' का चिन्ह बनाया। "भगवान् उसकी आत्मा को शान्ति दे" वह बोली "वह बड़ी अभिमानिनी थी। अच्छा......तो अब वह विधुर है। पर है काफी चालाक। इधर एक पत्नी मरी है और उधर दूसरी की खोज में लग गया है। ऐसे लोग सांप होते हैं सांप......। देखो, एक बात मैं तुम्हें बता दूँ। हमारे समय में कोई लड़की ऐसी बात करती तो

उसे खूब मजा चखाया जाता। गुस्से मत होना। गुस्सा करना भी मूर्खता होती है। आज मैंने नौकरों को आज्ञा दी है कि उसे घर में न आने दिया जाए। मुझे वह बहुत अच्छा लगता था पर इस बात के लिए मैं उसे कभी क्षमा न करूँगी—थोड़ा और पानी दो मुझे।—पाशिन को जो तुमने न कर दी है सो तो अच्छा किया पर यह आधी-आधी रात गए मरदों से मिलना ठीक नहीं। मेरा हृदय मत तोड़ो तुम। मुझे केवल लाड़ करने वाली ही मत समझ लेना। मैं बड़ी सख्त भी हो सकती हूँ।"

मारफा यह सब कह कर चली गई तो लिज़ा एक कोने में बैठ फूट-फूट कर रोने लगी। वह बड़ी दुःखी हो गई। ऐसी फटकार भला उसे क्यों कर मिली ? प्रेम में उसे तनिक भी तो सुख न मिला था। कल से वह दो बार रो चुकी थी। अभी तो उसे प्रेम का थोड़ा सा ही अनुभव हो पाया था कि उतना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ गया। अभी से ही उसके मन के इस सुन्दर भेद को दूसरों के अपवित्र हाथ छू गये थे। वह बड़ी दुःखी हो रही थी पर उसके हृदय में अब तनिक भी संशय न था और न ही कोई भय था। लैवरिटस्की अब उसे पहले से भी प्रिय था। जब तक वह अपने मन को समझ नहीं पाई थी तभी तक सब संशय थे पर अब पिछली रात्रि के बाद तो सब कुछ स्पष्ट हो गया था। वह अपने तन-मन से लैवरिटस्की से प्रेम करती थी। संसार की कोई भी शक्ति अब उनके स्नेह बंधन को नहीं तोड़ सकती थी।

जब मारया मित्रविना को बारबरा के आने का समाचार मिला तो वह घबरा गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि बारबरा को मिलना ठीक है या नहीं। कहीं फेद्या नाराज़ न हो जाय, इस बात से वह डरती थी पर आखिर उत्सुकता जीत गई। आखिर वह संबंधी ही तो है उसने सोचा और अरदली को आज्ञा दी कि उसे आने दे। कुछ क्षणों के बाद दरवाजा खुला। बारबरा बड़ी तेज़-तेज़ चलती हुई आकर मारया के पास घुटनों के बल झुक गई। मारया को उसने उठने का समय ही नहीं दिया।

"धन्यवाद, प्रिय मौसी" उसने धीमी आवाज़ में कहा, "सौ, सौ, धन्यवाद। मुझे इतनी कृपा की कभी आशा नहीं थी। तुम तो देवी हो।"

यह कह कर बारबरा ने मारया का एक हाथ बढ़िया दस्तानों में ले कर अपने गुलाबी होठों से लगा लिया। इस सुन्दर वस्त्राभूषण में सुसज्जित सुन्दरी को अपने पैरों में पड़े देख मारया की हैरानी का ठिकाना ही न रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। उसने सोचा कि अपना हाथ खींच कर इसे उठाऊँ पर उल्टे उस ने बारबरा का मस्तक चूम लिया।

बारबरा बड़ी खुश हो गई।

"तुम कैसी हो, प्रिय" आखिर मारया बोली, "मुझे आशा तो नहीं थी कि तुम आओगी पर मैं तुम्हें देख कर बड़ी प्रसन्न

हुई हूँ। भला पति पत्नी के झगड़े में मैं कहाँ की न्यायधीश हूँ, यह तो तुम जानती ही हो।"

"मेरा पति जो कहता है सब ठीक है" बारबरा बोली, "कसूर सब मेरा ही है।"

"यह तो तुम्हारा बहुत उत्तम भाव है," मारया बोली, "बहुत ही उत्तम। पर यह तो बताओ कि तुम कब से यहां आई हो और उस से मिली भी हो या नहीं। कृपया बैठ तो जाओ।"

"मैं कल ही आई हूँ" बारबारा एक नीची सी कुरसी पर बैठती हुई बोली, "मैं फेदया से मिली हूँ—बातचीत भी की है।"

"अच्छा। कैसा व्यवहार था उसका?"

"मेरा विचार था कि मेरे इस तरह आ जाने से वह बहुत नाराज़ होगा पर उस ने मुझे दुतकारा नहीं" बारबारा बोली।

"मतलब है कि वह....हाँ मैं समझ गई," मारया बोली, "ऊपर से चाहे वह कितना कठोर लगता है पर उसका हृदय कोमल है।"

"फेदया ने मुझे क्षमा नहीं दिया। मेरी बात भी पूरी नहीं सुनी पर उसने दया कर, मुझे रहने के लिए लैवरिकी दे दिया है।"

"ओह, कितनी सुन्दर जगह है लैवरिकी"

"उसकी आज्ञानुसार मैं कल ही वहां जा रही हूँ। पर जाने से पहले मैं ने सोचा कि आपको मिलना मेरा कर्तव्य है।"

"धन्यवाद प्रिय। अपने संबन्धियों को कभी नहीं भूलना चाहिए। मैं तो सच देख कर हैरान हो गई हूँ कि तुम कितनी अच्छी रूसी बोलती हो।" मारया बोली।

बारबरा ने लम्बी आह भरी।

"यह सच है कि मैं बहुत देर विदेश रही हूं—पर मेरा हृदय यहीं रहा है और एक क्षण के लिए मैं कभी अपनी मातृ-भूमि को नहीं भूली"

"ठीक है तुम सच कहती हो। यह बहुत अच्छी बात है। पर फेदया को तुम्हारे लौटने की तनिक भी आशा न थी। यह तुम ने कितना सुन्दर दुपट्टा ओढ़ा है—मैं देख लूं ज़रा"

"तुम्हें पसन्द है यह" बारबरा ने उसे कंधे से उतारते हुए कहा, "यह मैडम बोदार के यहां का बना हुआ है"

"वह तो दीख ही रहा है कि मैडम बोदार के यहां का है—ओह कितना बढ़िया है यह। तुम्हारे पास तो बहुत सुन्दर वस्तुएं होंगी। यदि मैं उन्हें देख पाऊं तो..."

"मेरी सब वस्तुएं आपकी सेवा में हैं—यदि आज्ञा हो तो तुम्हारी दासी को सब बता दूं। मेरे पास एक पैरिस की दासी है जो बहुत बढ़िया कपड़े सीती है"

"धन्यवाद, प्रिय। मैं तुम्हें ऐसे ही तकलीफ नहीं देना चाहती।"

"तकलीफ—यदि आप मुझे प्रसन्न करना चाहती हैं तो मुझे बिल्कुल अपनी ही समझिए।"

मारया का दिल पसीज गया।

"तुम कितनी अच्छी हो" वह बोली, "अपनी टोपी और दस्ताने उतार दो न"

"उतार दूँ" हाथ मलते हुए बारबारा बोली।

"क्यों नहीं, क्यों नहीं। आज खाना भी हमारे साथ खाओ। अभी मैं तुम्हें अपनी लड़की से मिलाती हूँ" फिर कुछ सोच कर मारया बोली "आज उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं है।"

"तुम कितनी दयालु हो" यह कह बारबरा ने अपना सुन्दर रूमाल आँखों से लगा लिया।

एक छोकरे ने गोडोन्सकी के आने की सूचना दी। गप्पी महाशय सिर हिलाते-हिलाते अन्दर आ गए। मारया ने उसे अपनी अतिथि बारबरा से मिलाया। पहले तो वह घबरा सा गया पर बारबरा के शिष्ट व्यवहार से उसकी जबान खुल गई और वह खूब इधर-उधर की बातें करने लगा। पहले बारबरा धीरे-धीरे मुस्कराती ही रही पर फिर वह भी बातचीत में भाग लेने लगी। बड़े संकोच से वह पैरिस और बेडन की बात करने लगी। एक दो बार जब उसकी किसी बात से मारया हँस पड़ी तो उसने बड़ी लम्बी सांस ली मानों सोच रही हो कि हास्यप्रद बातें करना उसके लिए ठीक नहीं। उसने ऐडा को अपने साथ लाने की आज्ञा मांगी।

दस्ताने उतार कर उसने अपने सुन्दर हाथों से बताया कि आजकल लेस फ्रिल आदि कहाँ और कैसे पहनी जाती है। उसने कहा कि वह मारया को एक नई प्रकार के इतर की शीशी भेंट करना चाहती है। और मारया के मानने पर वह बच्चों की तरह प्रसन्न हो उठी। "रूस में आकर जब पहिली बार मैंने गिरजे के घन्टे सुने तो मेरा मन गद्गद् हो गया" वह बोली।

उसी समय लिजा कमरे में आई।

प्रातः जब से उसने काँपते हुए हाथों से लैवरिटस्की का पत्र पढ़ा था, तभी से वह उसकी पत्नी को मिलने के लिए तैयार थी। उसे लगता था कि अब वह अवश्य ही मुझे मिलेगी और अपने पापों का मुझे बदला मिल जाएगा। उसके मन में घड़ी-घड़ी ऐसे विचार आ रहे थे और इसी लिए वह बारबरा से भागना

भी नहीं चाहती थी। इस अकस्मात् दुर्घटना से उसकी आत्मा भी सहम सी गई थी। दो ही घन्टों में उसका खिला हुआ सुन्दर मुख वेदना से खिंच सा गया था। पर उसने एक भी आँसू नहीं गिराया। "ठीक है। मेरे साथ यही होना था" वह अपने मन की पीड़ा को रोक कर सोचती। ज्योंही उसने सुना कि लैवरिटस्की की पत्नी आई है, वह नीचे चली गई। बड़ी देर वह दरवाजे के बाहर खड़ी रही—अन्दर जाने को हिम्मत बटोरती हुई। "मैंने इससे अत्याचार किया है" इस विचार से लिज़ा कमरे में घुसी। बड़े यत्न से उसने बारबरा की ओर देखा और थोड़ा मुस्कराई। उसे देखते ही बारबरा उसे मिलने के लिए उठी और हाथ बढ़ा कर बोली, "तुम्हारी माँ तो बहुत दयालु है। आशा है तुम भी वैसी ही हो।"

बारबारा के मुख का भाव, उसकी झूठी कपटी हँसी, उसकी नजर, उसके कपड़े, हाव भाव सब से लिज़ा को ऐसी घृणा हुई कि वह उसकी बात का उत्तर भी न दे सकी। बड़ी कठिनाई से उसने अपना हाथ ही बढ़ाया।

"इसको तो मैं जरा नहीं भाई" बारबरा ने मन ही मन सोचा फिर मारया की ओर मुँह फेर वह बोली "कि कितनी प्यारी है तुम्हारी बेटी।" लिज़ा का मुँह लाल हो गया। उसे लगा कि बारबरा उसकी हँसी उड़ा रही है। पर उसने अपने विचारों की ओर अधिक ध्यान देना भी ठीक न समझा और खिड़की के पास एक ओर चुपचाप बैठ गई। यहाँ भी बारबरा ने उसका पीछा न छोड़ा। वह वहीं आकर उसकी प्रशंसा करने लगी। लिज़ा का हृदय जोर-जोर से धड़कने लगा। बड़ी कठिनता से वह सीधी बैठी रही। उसे यों प्रतीत होने लगा कि बारबरा सब कुछ जानती

है और अब उसकी हँसी उड़ा रही है। जब गोडोन्सकी बारबरा से बात करने आया तो लिजा ने शुरू किया। सिर नीचा कर लिजा उसकी ओर ध्यान से देखती रही। "यह स्त्री है जिसे वह कभी प्रेम करता था" वह सोचने लगी। फिर उसने लैवरिटस्की का विचार ही हृदय से निकालना चाहा। उसका सिर चकराने लगा। "कहीं मैं अपने होश हवास ही न खो बैठूँ" उसने सोचा।

मारया ने संगीत की बातचीत शुरू कर दी "मैंने सुना है कि तुम बहुत अच्छा गाती बजाती हो।"

"बहुत देर हुई है कुछ बजाए" पियानो पर बड़ी निपुणता से हाथ फेर बारबरा बोली "कहो तो बजाऊँ।"

"हाँ, अवश्य"

बारबरा ने एक कठिन पर सुन्दर गीत बड़ी निपुणता से बजाया। उनके हाथ खूब तेज और दक्ष थे।

"बहुत अच्छा" गोडोन्सकी बोली।

"कमाल है, बारबरा" पहिली बार उसका नाम लेते हुए मारया बोली "तुमने तो हमें हैरान ही कर दिया। तुम्हें तो चाहिए बड़ी-बड़ी सभाओं में बजाओ। हमारे यहाँ एक पागल सा जर्मन मास्टर लिजा को सिखाता है। यदि वह कभी तुम्हारा संगीत सुनो तो लट्टू हो जाए।'

"क्या ऐलिजबीटा भी पियानो बजाती है ?" उसकी ओर मुड़ कर बारबरा बोली।

"हाँ, उसे भी संगीत का शौक है और इतना बुरा भी नहीं बजाती पर तुम्हारे साथ उसका क्या मुकाबला हो सकता है ? हाँ······यहाँ एक और युवक है·······तुम्हें उससे अवश्य

मिलना चाहिए। वह सच्चा कलाकार है—बड़े सुन्दर-सुन्दर गीत लिखता है। वही केवल तुम्हारी कला को परख सकता है।"

"युवक·········कौन है वह ?" बारबरा बोली "बिचारा कोई गरीब सा होगा।"

"ओहो······क्या बात कर रही हो तुम—यहाँ की तो सब स्त्रियाँ उसके पीछे लगी हैं और यहाँ ही क्या, पीटर्सबर्ग में भी यही हाल है।—सरकारी अफसर है, बड़ी उच्च पदवी पर—उच्च वर्गों में आने जाने वाला। तुमने शायद उसका नाम भी सुना होगा—पाशिन, व्लेडीमीर निकोलिच पाशिन। यहाँ पर किसी सरकारी काम पर आया हुआ है। एक दिन अवश्य बड़ा आदमी बनेगा।"

"और उस पर कलाकार भी है।"

"हां...सच्चे अर्थों में कला कार, और इतना शिष्ट है। तुम उसे आवश्य मिलना। यहां प्रायः रोज़ ही आता है। मैंने आज भी उसे बुलाया था। शायद आ जाए" लम्बी सी आह भरते हुए मारया ने कहा।

लिज़ा ने सब देखा पर चुप बैठी रही।

"और है युवा"

"अट्ठाईस वर्ष का होगा और है बड़ा सुन्दर। बस सब बातो में पूरा है। मेरे विचार में तो वह आदर्श युवक है।"

बारबरा ने एक दम स्ट्रौस का एक बड़ा जोशीला सा गीत बजाना शुरू कर दिया। उसके स्वरों से पहले तो गोडोन्सकी चौंक गया पर थोड़ा सा ही बजाने के बाद बारबरा ने एक उदास, खिन्न सी तान छेड़ दी। बजाते बजाते उसे विचार आया कि ऐसा जोशीला, उल्लास पूर्ण गीत बजाना उसके लिए ठीक नहीं।

दूसरी तान जो धीमी सी और उदास सी थी मारया को बहुत अच्छी लगी।

"कितनी भाव पूर्ण है यह" उसने धीरे से गोडोन्सकी से कहा

"वास्तव में यह तो बहुत ही अच्छी है" वह बोला।

भोजन का समय हो गया। मारफा टिमोफीना जब नीचे आई तो सब ने खाना शुरु कर लिया था। बड़ी रुखाई से मारफा ने बारबरा की नमस्कार का उत्तर दिया और उसकी चिकनी चुपड़ी बातों का बिना उधर देखे, हूं हां कर ही उत्तर देती रही। बारबरा भी जांच गई कि यह वृद्धा तो काबू आने की नहीं और वह भी चुप हो गई। मारया को बूआ का अतिथि के प्रति यह व्यवहार बहुत अखरा और वह बारबरा से और भी प्रेम पूर्वक बर्ताव करने लगी। किन्तु मारफा केवल बारबरा से ही आंख नहीं चुरा रही थी। वह लिजा की ओर भी अच्छी तरह नहीं देख रही थी। पत्थर की मूर्ति की नाई वह बिना कुछ खाये मुँह बंद किए बैठी रही। उसकी आंखें चमक रही थीं। लिजा बिल्कुल शांत थी। उसके हृदय की हलचल अब समाप्त हो गई थी। अब वह उस अपराधी सी, जिसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया हो, चुपचाप निश्चल बैठी थी। बारबरा ज्यादा नहीं बोल रही थी। उसने अपना मुख बड़ा गंभीर और उदास सा बना लिया था। केवल गोडोन्सकी इधर उधर की बात सुना रहा था। बात करते कभी कभी वह घबरा कर मारफा की ओर देखता पर वह भी आज चुप थी।

भोजन समाप्त होनेपर, बारबरा कहने लगी कि उसे ताश खेलने का बहुत शौक है। अन्धे को क्या चाहिए, दो आंखें,

मारया यह सुन इतनी प्रसन्न हुई कि वह सोचने लगी फेद्या भी कैसा मूर्ख है। ऐसी स्त्री का मोल नहीं पा सका।"

मारया ताश ले बारबरा और गोडोन्सकी के साथ खेलने लगी। मारफा यह कह कि लिज़ा की तबीयत ठीक नहीं लग रही उसे अपने साथ ऊपर ले गई।

"हां। उसे बड़ा दर्द है" मारया बारबरा की ओर देख कर बोली। "मुझे भी कभी कभी बड़ी दर्द होती है।"

"सच" बारबरा बोली।

लिज़ा बूआ के कमरे में जाकर एक कुरसी पर बैठ गई। मारफा बहुत देर तक चुपचाप उसकी ओर देखती रही फिर घुटनों के बल उसके पास बैठ उसका हाथ चूमने लगी। लिज़ा आगे को झुकी। उसका मुँह लाल हो रहा था—वह रोने लगी धीरे-धीरे सिसक सिसक कर। उसने न अपने हाथ मारफा के हाथों से खींचे और न ही उसे उठाने का यत्न किया। उसे भला क्या अधिकार था ऐसा करने का? वृद्धा मानों उसके हाथ चूम उससे पिछले दिन की कही बातों के लिए क्षमा मांग रही थी।

मारफा बड़ी देर बैठी वैसे ही उसे प्यार करती रही और आँसू बहाती रही। लिज़ा भी बैठी रोती रही। कोने में बैठी बिल्ली "पड़-पड़" कर रही थी। दीपक की लौ कभी धीमी पड़ जाती कभी तेज़। साथ के कमरे में खड़ी नसटास्या रुमाल से आँखें पोंछ रही थी।

नीचे बैठक में ताश चल रही थी। मारया जीत रही थी इसलिए वह बहुत प्रसन्न थी। एक नौकर ने आकर पाशिन के आने की सूचना दी।

मारया ने पत्ते फेंक दिए और दरवाजे की ओर देखने लगी। बारबरा ने उसकी ओर देखा, मुस्कराई और फिर दरवाजे की ओर देखने लगी। पाशिन आ गया। उसने बंद गले का अंग्रेजी ढंग का कोट पहिना था। "तुम्हारी आज्ञा का पालन करना था तो बहुत कठिन पर देखो मैं आ ही गया हूँ" बिना मुस्कराए वह बोला।

"पाशिन, तुम तो बिना बुलाये आया करते हो।" मारया बोली।

पाशिन ने झुक कर मारया को प्रणाम किया पर आज उसने उसका हाथ न चूमा। जब मारया ने बारबरा से उसका परिचय करवाया तो उसने एकदम पीछे हट कर बड़ी नम्रता से उसे झुक कर प्रणाम किया पर इस बार उसके झुकने में कुछ अधिक कोमलता थी। वह भी आकर ताश की मेज पर बैठ गया। खेल जल्दी ही समाप्त हो गया। पाशिन ने ऐलिजबीटा के विषय में पूछा और यह सुन कर कि उसके सिर में दर्द है वह बोला कि बड़े खेद की बात है। फिर वह बारबरा के संग बातचीत करने लगा। बड़े ध्यान से वह उसकी एक-एक बात सुनता रहा और बड़ी गम्भीरता से उसके सब प्रश्नों का उत्तर देता रहा। पर बारबरा पर उसकी इस गम्भीरता का तनिक भी प्रभाव न पड़ा। वह खूब हँस-हँस कर इधर उधर की गप्पें हाँक रही थी। उसकी

सुन्दर नासिकायें घड़ी-घड़ी फड़क उठतीं मानों वह अपनी हँसी को रोक रही हो। मारया ने उसकी बड़ाई के पुल बांध दिए। पाशिन भी उसकी हाँ में हाँ मिलाता रहा और जहाँ तक भी हो सकता था गला हिला कर "हाँ हाँ" करता रहा मानो कह रहा हो कि मुझे पूर्ण विश्वास है। बड़ी गूढ़ बातें करते-करते वह आखिर 'मैटरनिक' पर पहुंच गया। बारबरा अपनी आँखें सिकोड़ धीरे से बोली कि मैंने तो सुना था तुम कलाकार हो। "आओ" पियानो की ओर इशारा कर वह बोली। इस एक शब्द ने पाशिन पर मानों जादू कर दिया हो। उसके मुख से सारी गम्भीरता उड़ गई और वह एकदम हंस पड़ा—उसकी आँखें चमक उठीं। कोट के बटन खोलता हुआ वह बोला "खेद है—मैं कलाकार नहीं हूँ हाँ, सुना है तुम बड़ी कलावती हो।" यह कह वह बारबारा के पीछे पियानो की ओर चल पड़ा।

"इससे वही चाँद वाला गीत सुनो" मारया बोली।

"क्या तुम गाते भी हो?" मुस्कराती हुई बारबरा उसकी ओर देख कर बोली "तो आओ बैठो फिर"

पाशिन बहाने करने लगा।

"बैठो भी" अपनी ऊँगलियां कुर्सी पर मारती हुई बारबरा बोली। वह बैठ गया पहले थोड़ा खाँसा, कालर को सीधा किया और गीत गाने लगा।

"बहुत सुन्दर," बारबरा बोली, "तुम बहुत अच्छा गाते हो और तुम्हारे गाने का ढंग बहुत आकर्षक है। फिर से गाओ"

अब वह पियानोकी दूसरी ओर बिल्कुल पाशिन के सामने आ खड़ी हुई। पाशिन ने फिरसे गीत गाया। अब उसकी आवाज में एक नया ही कंपन था। बारबरा कोहनी पियानो पर रख, हथेली

पर मुँह रखे उसकी ओर एकटक निहार रही थी। पाशिन ने गीत समाप्त किया।

"बहुत ही सुन्दर" पारखियों के विश्वास से वह बोली।

"अच्छा यह तो बताओ, तुम ने स्त्रियों की बारीक आवाज के लिए भी कोई गीत लिखा है या नहीं"

"मैं खास तो कुछ नहीं लिखता" पाशिन बोला "यह तो केवल अपना जी बहलाने को है। तुम भी गाती हो?"

"हाँ"

"फिर कुछ सुनाओ" मारया बोली।

बारबारा ने सिर हिला अपने गुलाबी चेहरे से बाल पीछे किए "मेरे विचार में हम दोनों की आवाज संग-संग खूब अच्छी जाएगी" वह पाशिन की ओर देख कर बोली।

"आओ इकट्ठे एक दोगाना गायें। क्या तुम्हें यह गीत आते हैं?" और उसने तीन चार प्रचलित गीतों के नाम लिए।

"बहुत समय पहिले मुझे इनमें से एक गीत आता था" पाशिन ने उत्तर दिया। "पर यह बहुत पुरानी बात है, अब मुझे सब भूल गया है।"

"कोई बात नहीं। हम पहिले धीरे-धीरे अभ्यास कर लेंगे। शुरू करूँ बारबरा यह कह कर पियानो पर जा बैठी और पाशिन उसके पास खड़ा हो गया। पहिले उन्होंने धीरे-धीरे से गीत गाया। बारबरा ने कई बार उसकी गलतियाँ ठीक की। फिर उन्होंने ऊँची आवाज में, मिल कर गाया "मीरा ला विआनका।" बारबारा के स्वर में अब वह पहिले से आकर्षण न था पर वह बड़ी चतुराई से अपनी सब त्रुटियाँ छिपा लेती। पाशिन आरम्भ में तो जरा शरमाया और उसका सुर भी कुछ ठीक न बैठा पर

धीरे धीरे वह भी खूब अच्छा गाने लगा। उसके गाने को भी बिल्कुल ठीक तो नहीं कहा जा सकता पर वह भी अपनी सब न्यूनतायें हाव भाव से पूरी कर देता। बारबरा ने फिर 'लैथबर्ग" के दो तीन गीत सुनाए और अन्त में एक फ्रैंच भाव गीत गाया। मारया मित्रविना की प्रसन्नता का कोई ठिकाना न था। कई बार उसने सोचा कि लिजा को भी बुलाऊँ। गोडोन्सकी भी बड़ा प्रभावित हो गया। उसे अपने भाव प्रकट करने को कोई उपयुक्त शब्द नहीं मिल रहे थे। उसने बड़ी सी उबासी ली—उसे छिपाने के लाख प्रयत्न करने पर भी वह बारबरा से यह न छिपा सका। एकदम पियानो की ओर पीठ कर वह बोली, "संगीत को अब छोड़ो—आओ और कोई बातचीत करें।" पाशिन ने भी उसकी हाँ में हाँ मिलाई। संगीत को छोड़ अब वह फ्रैंच में और इधर उधर की बातें करने लगे। उनकी फिजूल बातचीत को सुन मारया बड़ी प्रसन्न हो रही थी। उसे लगा कि मेरा घर भी आज पेरिस के उच्च श्रेणी के फ्रैंच घरों जैसा हो गया है। पाशिन भी बहुत खुश था। उसकी आँखें चमक रही थीं। मुख से मुस्कान तो जाती ही न थी। शुरू शुरू में जब उसकी दृष्टि मारया से मिलती तो वह मुँह बना, माथे पर हाथ फेर, ठंडी सांसें लेने लगता पर बाद में वह बारबरा की बातों में यह सब भूल गया। बारबरा भी बड़ी चतुर थी। हर बात का वह खूब पूरा उत्तर देती—बिना झिझके वह सब विषयों पर बातचीत करती। यह प्रत्यक्ष था कि वह सब प्रकार के लोगों से मिलती जुलती रही है। उसकी बात-चीत, विचार सब का केन्द्र पैरिस ही था। पाशिन ने साहित्य की बातचीत की तो पता लगा कि बारबरा भी उसकी भाँति केवल फ्रैंच पुस्तकें ही पढ़ती है। जार्ज सैण्ड तो उसे तनिक भी

नहीं आता, बालजक का वह आदर करती है चाहे वह बहुत विचारक नहीं, सू और स्कराईब को उसके विचार में मानव प्राकृति का गहरा ज्ञान है, ईमारा और फेवल की तो वह बस पुजारिन है। चाहे हृदय में उसे केवल "पाल डी काक" ही सबसे अच्छा लगता हो पर ऊपर से उसने उसका नाम तक न लिया। वास्तव में साहित्य से उसे तनिक भी लगाव न था।

इतनी बातें करते हुए भी, बारबरा ने बातचीत का विषय अपने तक नहीं आने दिया। उसकी बातों में कोई अश्लील शब्द न था, यहाँ तक कि सारी बातचीत में उसने प्रेम शब्द का भी प्रयोग न किया। कहीं ऐसी बात आ भी जाती तो वह सारा विषय ही बदल डालती। पाशिन बात आरम्भ भी करता तो वह बड़ी चतुराई से टाल देती, पर बड़ी अजीब बात थी कि उसके मुख से निकले पवित्र और कठोर शब्द भी कुछ और ही रूप धारण कर लेते। साथ–साथ उसकी आँखों में भी कुछ विचित्र सा भाव आ जाता, कुछ मीठा, आकर्षक सा भाव। पाशिन ने उसका मतलब समझने का बहुत प्रयत्न किया। उसने चाहा कि उसकी आँखें भी कुछ कहें पर उसे लगा कि वह कुछ नहीं कर सकता। बारबरा उसके मुकाबिले में सिंहनी सी थी। वह घब-राया सा ही रहा।

बारबरा की कुछ आदत ऐसी थी कि जिससे बात करती, उसकी बांह को छूती रहती। पाशिन पर उसके इस स्पर्श का बड़ा विचित्र प्रभाव पड़ा। वह अशान्त सा हो उठा। बारावरा, अनजानों के साथबड़ी जल्दी हिल मिल जाती थी। अब दो घन्टे के बाद ही पाशिन को यों लग रहा था मानो वह उसे वर्षों से जानता है और इसके विपरीत लिजा, जिसे वह वास्तव में

प्रेम करता था और जिससे अभी पिछले दिन ही विवाह का प्रस्ताव कर रहा था, बिल्कुल अनजान सी हो गई। वह दूर किसी धुन्ध के पीछे छिप गई।

चाय आई तो वार्तालाप और भी निःशंक हो गया। मारया ने घन्टी बजा छोकरे को कहा कि यदि लिज़ा की तबियत ठीक है तो उसे नीचे भेजो। लिज़ा का नाम सुनते ही पाशिन बलिदान की बातें करने लगा कि स्त्रियों में बलिदान की भावना अधिक होती है या पुरुषों में। मारया एकदम बोल उठी कि "स्त्रियों में निसंदेह यह भावना अधिक होती है और मैं इस बात का सबूत भी दे सकती हूँ।" पर बात कुछ न बनी और वह अपना सा मुँह लेकर बैठ गई। बारबरा ने संगीत की एक किताब उठा मुँह के आगे रख ली और धीरे से पाशिन से कहने लगी कि यह बिचारी सीधी सी है इसको छोड़ो। पाशिन उसकी बात सुन हक्का-बक्का हो गया पर अब वह भी मारया की सब भलाइयाँ सब एहसान भूल, बारबरा की हाँ में हाँ मिलाने लगा।

"हाँ ठीक है" वह बोला।

बारबरा ने बड़े प्रेम से उसकी ओर देखा।

लिज़ा अब आ गई। मारफा ने उसे रोकने का बहुत यत्न किया पर लिज़ा ने इस परीक्षा में से भी गुज़रना आवश्यक समझा। बारबरा और पाशिन उठ कर उसे मिलने को आगे बढ़े। पाशिन ने फिर से अपना मुख गम्भीर बना लिया।

"अब तबीयत कैसी है?" वह बोला।

"अच्छी हूँ—धन्यवाद" लिज़ा ने उत्तर दिया।

"यहाँ खूब गाना बजाना हो रहा था। बड़ा खेद है तुमने बारबरा का गाना नहीं सुना। बहुत अच्छा गाती है यह।"

"इधर तो आओ, प्रिय !" मारया बोली। बारबरा बच्चों की तरह एकदम उसका कहा मान उसके पास स्टूल पर जा बैठी। मारया का उसे बुलाने का मतलब था कि घड़ी भर लिज़ा और पाशिन को अकेले बात करने का समय मिल जाए। उसे अभी भी आशा थी कि लिज़ा मान जाएगी। फिर उसे एक और बात सूझी थी जो वह बारबरा को कहना चाहती थी।

"मैं तुम्हें फिर से तुम्हारे पति के साथ मिलाना चाहती हूँ। पता नहीं बात बने या न बने पर मैं एक बार यत्न अवश्य करूँगी। वह मेरी बात बहुत मानता है" वह धीरे से बोली।

बारबरा ने अपनी सुन्दर आँखें ऊपर कर और हाथ जोड़ कहा, "तुम तो मेरे लिए साक्षात भगवान हो। आगे ही तुमने मुझ पर इतनी कृपा की है कि मैं सारी उमर उसका बदला नहीं चुका सकूँगी पर फेदया मुझे कभी क्षमा नहीं करेगा। मैंने उसे बहुत दुःख दिया है।"

"तो क्या तुम............वास्तव में ही" मारया बोली।

"मुझे कुछ न पूछो," बारबरा आँखें नीचे करके बोली, "मैं भोली थी, अबोध थी और चंचल थी........पर मैं अपने किए के लिए क्षमा नहीं चाहती।"

"यत्न करने में तो कुछ बुरा नहीं है। ऐसे हिम्मत मत छोड़ो" मारया उसे आश्वासन देते हुए बोली। क्षण भर को उसे विचार आया कि इसे प्यार कर लूँ पर फिर उसने सोचा कि यह ऊपर से ही भोली लगती है, वास्तव में पूरी सिंहनी है।

"तो, तुम सचमुच बीमार हो?" पाशिन लिज़ा से पूछ रहा था।

"हां—मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं।"

"मैं सब समझता हूं बड़ी देर चुप रहो के बाद पाशिन बोला"

"मैं सब समझ गया।"

"क्या ?"

"मैं सब समझता हूं"

एक क्षण के लिए लिजा हैरान सी हो गई पर फिर यह सोच कर कि क्या फरक पड़ता है वह गंभीर सा मुंह बनाकर खड़ी हो गई। पाशिन ने भी दूसरी ओर मुंह फेर लिया।

"मेरा विचार है ग्यारह बज गए होंगे।" अतिथियों ने उसकी बात का आशय समझ लिया और सब उठ कर जाने को तैय्यार हो गए। बहुत कहने पर बारबरा ने मान लिया कि वह कल वहीं भोजन करेगी और ऐडा को भी साथ लायेगी। गोडोन्सकी जो एक कोने में बैठा ऊंघ रहा था बोला कि वह बारबरा को घर पहुंचा आयेगा। पाशिन ने झुक कर सब को प्रणाम किया। बाहर सीढ़ियों पर जब बारबरा गाड़ी पर चढ़ने लगी तो उसने बड़े प्रेम से उसका हाथ दबा उससे विदा मांगी। गोडोन्सकी बारबरा के संग बैठ गया। सारा रास्ता, मानों अनजाने से ही बारबरा ने अपना पैर उसके पैर पर रखा। गोडोन्सकी को बड़ा अजीब सा लगा वह बारबरा का प्रशंसा करने लगा। जब भी कभी सड़क की बत्तियों की रोशनी गाड़ी में आती, तो बारबरा बड़ी आखें मटका कर उसकी ओर देख कर मुस्करा देती। जो गीत आज उसने गाये थे अभी तक उसके दिमाग में गूंज रहे थे। ये ही नाच गाने का विचार कर, वहां की रौनक का विचार कर बारबरा का लहू मानो गरम हो उठता, आंखें चमकने लगतीं और होंठ मुस्कराने लगते। उसके सारे शरीर में एक आकर्षण सा पैदा

होजाता जब वह घर पहुंची तो एकदम छलांग मार गाड़ी में से उतर गई और एकदम खिलखिला के हंस पड़ी। "भला सिंहनी के सिवा ऐसे कौन कर सकता है" गोडोन्सकी ने सोचा "और बड़ी आकर्षक है यह।" फिर वह सोचने लगा कि भला यह इस तरह हंसी क्यों। पर धन्यवाद है भगवान का कि मैं तो शरीफ आदमी हूं।

वह रात मारफा ने लिज़ा के सिराहने बैठ कर काटी।

लैवरिटस्की करीबन डेढ़ दिन 'वैसीलीस्कोय' रहा। सारासमय उसने यूं ही इधर उधर घूमने में बिता दिया। एक जगह पर वह अधिक समय ठहर ही न सकता। उसका हृदय वेदना से चूर हो रहा था। कभी न पूरी होने वाली लालसायें आशायें अब उसे तड़पा रहीं थी जब वह सोचता कि पहले पहल लौट कर मैंने क्या योजनायें बनाई थीं तो उसे अपने पर बड़ा क्रोध आता। क्यों मैंने अपनी सब प्रतिज्ञाओं को भुला दिया। प्रसन्नता की खोज ने, सुख की अभिलाषा ने मुझे अंधा बना दिया। वह सोचता कि मिखैलोविच ठीक ही तो कहता था कि जीवन में दूसरी बार तुम सुख ढूंढ रहे हो। एक बार भी यदि सुख मिल जाए तो बहुत होता है पर वह तो कहता था कि उसे सुख कभी मिला ही नहीं, वह तो सारा भ्रम था। फिर वह मन में सोचता, भला मैं सुख का अधिकारी कहां से आ गया। वह जो खेतों में किसान काम कर रहे हैं उन्हें कौन सी शान्ति है, कौन सा आनंद मिल रहा है जीवन में ? पर वे तृप्त हैं। और मेरी

मां जो जीवन से कितना कम, छोटा सा सुख मांगती थी पर वह भी उसे नहीं मिला । शायद मैं जब पाशिन को कह रहा था कि मैं जिमींदारी करने आया हूं तो वह एक झूठी खोखली बात ही थी मैं तो इस आयु में भी युवतियों के पीछे भागने आया था। अभी मुझे अपनी स्वतंत्रता की खबर ही मिली थी कि मैं एक दूसरी तितली के पीछे भाग पड़ा इसतरह सोच कर वह अपने आप को घड़ी घड़ी धिक्कारता। पर उन विचारों के साथ साथ ही लिज़ा की प्रिय मूर्ति उसकी आंखों में घूमती। बड़े यत्न से वह उसे भुलाता तो उसे अपनी पत्नी की चंचल, सुन्दर पर घृणित शक्ल याद आ जाती।

वृद्ध एण्टन ने भी भांप लिया कि आज मालिक की तबीयत कुछ ठीक नहीं। पहिले तो वह झिझक कर इधर उधर हो जाता पर आखिर उसने हिम्मत कर कहा, "मालिक तुम कुछ गरम गरम चीज़ पीओ। तुम्हारी तबीयत अच्छी नहीं।" लैवरिटस्की ने बड़े गुस्से से उसे चले जाने को कहा पर थोड़ी ही देर बाद अपनी गलती का विचार कर वह उससे क्षमा मांगने लगा। इससे एण्टन और भी उदास हो गया। लैवरिटस्की बैठक में भी अधिक न बैठ सका। उसे लगा कि उसका पड़दादा ऐण्डी उसकी ओर देख कर हंस रहा है।

"कब तक ऐसे चलेगा लैवरिटस्की ने अंत में सोचा, क्या इस तनिक सी बात से मैं हिम्मत हार दूँगा। मैं कोई स्कूल का बच्चा तो हूँ नहीं जो ऐसी छोटी सी बात से घबरा जाऊँ" ऐसी बातों से लैवरिटस्की अपने हृदय को धीरज देता।

"यह सत्य है कि सच्चा सुख मिलने को ही था जब वह हाथ से निकल गया—सदा के लिए। पर यूँही होता है जीवन

में। ज़रा सी बात से भिखारी भी तो राजा बन सकता है। बस होना ही न था...होना ही न था। अब मैं दांत पीस कर, सब भूल जाऊंगा। अपने काम में लहू पसीना एक कर दूँगा। फिर वह सोचता कि मैं यहां 'वैसीलीस्कोय' क्यों आ गया हूँ संघर्ष से परे छिप कर। एण्टन को उसने गाड़ी तैय्यार करने को कहा और सोचा कि बड़ी शान्ति से मुझे सब करना ही होगा।

ऐसे विचारों से लैवरिटस्की ने अपने मन की व्यथा को शान्त करना चाहा पर घाव गहरा था और वेदना तीव्र। वृद्धा ऐपरैक्सीया भी मानों आज सब भांप गई थी। बड़ी उदास सी हो वह लैवरिटस्की को देखती रही। लैवरिटस्की गाड़ी में बैठ गया, घोड़े चले, गाड़ी हिलने लगा पर वह निश्चल, बैठा, शून्य में झांकता रहा।

लिज़ा ने लैवरिटस्की को अगले दिन शाम को आने को लिखा था पर लैवरिटस्की पहले अपने घर गया। वहां न उसकी पत्नी थी और न ऐडा। नौकरों ने बताया कि वह ऐडा को साथ ले कालीटीनों के यहां गई है। लैवरिटस्की को यह सुन क्रोध भी आया और हैरानगी भी हुई। वह सोचने लगा कि यह मुझे कहीं का भी न छोड़ेगी और उसका मन घृणा से भर गया। वह कमरे में ही विचलित सा टहलने लगा। कमरे में जो खिलौने और अन्य वस्तुयें इधर उधर बिखरी थीं उन्हें पैर मार उसने फेंक दीं। बारबरा की दासी को बुलाया और उसे बड़े क्रोध से बोला कि यहां से यह सब हटाओ।

"ओहो—महाशय" जसटीन बोली और चीजें उठाने लगी। उसके हाव भाव और दृष्टि से यह प्रत्यक्ष था कि वह लैवरिटस्की को बिलकुल जंगली ही समझती है। लैवरिटस्की बड़ी घृणा पूर्ण दृष्टि से उसकी ओर देखता रहा। उसके सफेद कपड़े और फ्रैंच चेहरा उसे बहुत बुरा लग रहा था। उसने उसे वहां से चले जाने को कहा।

बहुत देर प्रतीक्षा करने पर भी जब बारबरा न लौटी तो लैवरिटस्की ने भी कालीटीनों के यहां जाने की सोची। उसने सोचा कि वह सीधा बैठक में मारया वित्रविना के पास नहीं जायेगा वरन पिछली ओर से नौकरों के कमरे में से सीधा मारफा के पास चला जायगा। भाग्य से उसे पिछली ओर शरुचका मिल गई जो उसे सीधा मारफा के कमरे में ले गई। आज मारफा चुपचाप एक कोने में बैठी थी। उसके सिर पर टोपी भी नही थी। लैवरिटस्की को देख वह हैरान सी हो गई और फिर इधर उधर देखने लगी मानों अपनी टोपी ढूँढ़ रही हो।

"तुम आए हो" वह उससे आँखें बचा इधर उधर देख बोली ...."अच्छा...तुम......कल कहाँ थे तुम।''......वह आ गई है......पर.......अच्छा अब क्या हो सकता है" लैवरिटस्की कुर्सी पर बैठ गया।

"बैठो बैठो" वह बोली, "सीधे ही ऊपर आए हो आज, हाँ? ठीक है—मुझे मिलने आये हो—धन्यवाद।"

मारफा चुप हो गई। लैवरिटस्की को कुछ सूझ नहीं रहा था कि क्या बात करूँ पर मारफा उसके मन की बात समझ गई।

"लिजा...वह अभी यहीं थी," वह अपने कपड़े सीधे करती हुई बोली, "आज उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं है। शरुचका!

"......कहाँ हो तुम ? इधर आओ। तुम—आराम से नहीं बैठ सकती क्या ? ओह आज मेरे भी सिर में दर्द हो रहा है। शायद यह गाने बजाने से हो गया हो।"

"कैसा गाना, बूआ ?"

"वही—जो चल रहा है आज—ये जो दोगाने होते हैं इटैलियन, चींचीं चांचां चींचीं, चिड़ियों की तरह। वह पाशिन और तुम्हारी पत्नी लगे हैं। इतनी जल्दी वे परस्पर हिल मिल गए हैं मानों सगे सम्बन्धी ही हों। पर ठीक है—कुत्ता भी अपने लिए ठिकाना ढूँढता है। जब तक तक कोई चाहने वाला मिल जाये—आशा तो नहीं छूटती"

"फिर भी, काफी हिम्मत चाहिए इन बातों के लिए।" लैवरिटस्की मुझे तो विश्वास नहीं आता।"

"नहीं हिम्मत नहीं, चतुराई की आवश्यकता होती है। अच्छा, हमें क्या लगे, भगवान उसे क्षमा करें। सुना है तुम उसे लैवरिकी भेज रहे हो।"

"हाँ, वह घर मैंने उसके हवाले ही कर दिया है।"

"कुछ पैसा वैसा भी मांगा है ?"

"नहीं, अभी नहीं"

"खैर—थोड़े दिनों तक वह भी मांगेगी। और हाँ, मैंने तो तुम्हें अब ध्यान से देखा है—क्या बात है ? कहीं बीमार तो नहीं हो ?"

"कुछ नहीं"

"शरुचका" मारफा ने आवाज दी "जाओ ऐलिजबीटा को बोलो......अच्छा कुछ नहीं—नीचे है वहाँ"

"हाँ"

"उसको पूछो बूआ की किताब कहाँ है—वह समझ जाएगी"

"बहुत अच्छा" शुरुचका बोली।

वृद्धा फिर कमरे में इधर उधर देखने लगी। कभी वह मेज का दराज खोलती, कभी बन्द करती। लैवरिटस्की चुपचाप बैठा रहा। फिर सीढ़ियों पर धीमे-धीमे से पाँवों की चाप सुनाई दी। लिजा आ गई। लैवरिटस्की उठ कर खड़ा हो गया। लिजा दरवाजे में ही रुक गई।

"लिजा—लिजा प्रिय, मेरी वह किताब कहाँ है? उसको क्या किया है तुमने?"

"कौन सी किताब, बूआ"

"ओहो, छोड़ो उसे। मैंने तुम्हें बुलाया तो नहीं—हाँ नीचे क्या हो रहा है। यहाँ फेदया आया था।·········क्या हाल है तुम्हारी सिर दर्द का?"

"ठीक है अब तो"

"तुम तो सदा ऐसे ही कहती हो—नीचे क्या हो रहा है—फिर से गाना?"

"नहीं—ताश खेल रहे हैं"

"सभी बातों में होशियार है वह·········अच्छा शुरुचका तुम्हारा खेलने का जी कर रहा है······जाओ भाग जाओ।"

"नहीं मारफा" शुरुचका बोली।

"चलो भागो—ज्यादा बातें मत करो। नसटास्या वहाँ बाग में अकेली घूम रही है, जाओ उसके पास। बड़ी अच्छी हो तुम तो।" शुरुचका भाग गई।

फिर मारफा कहने लगी "मेरी टोपी न जाने कहाँ गई है?"

"मैं ढूँढ़ती हूँ" लिजा बोली

"तुम आराम से बैठो। मेरी टाँगें अभी चलती हैं। मेरे विचार में दूसरे कमरे में पड़ी होगी।"

लैवरिटस्की की ओर कनखियों से देखते हुए मारफा चली गई। वह दरवाज़ा खुला छोड़ गई थी पर फिर एकदम लौट कर उसे बंद कर दिया। लिज़ा कुर्सी पर बैठ गई। उसने आँखों पर हाथ धर लिया।

लैवरिटस्की अपने स्थान से न हिला। "हमने ऐसे मिलना था" वह बोला।

लिज़ा ने आँखों से हाथ हटा लिया। "हाँ! हमें बहुत जल्दी ही दण्ड मिल गया है"

"दण्ड" लैवरिटस्की बोला, "भला तुम्हें किस बात का दण्ड मिलना था?"

लिज़ा ने उसकी ओर देखा। उसकी आँखों में न शोक था, न ही घबराहट थी। हाँ, आज वह मुरझाई हुई सी लग रही थी। उसका मुँह बिल्कुल पीला हो गया था।

लैवरिटस्की का हृदय प्रेम और दया से भर गया।

"तुमने लिखा था कि सब समाप्त हो गया है" भर्राई हुई आवाज़ में वह बोला "हाँ सब समाप्त हो गया है, शुरू होने से भी पहिले"

"हमें सब कुछ भुला देना होगा" लिज़ा बोली "अच्छा हुआ कि तुम आ गए। मैं सोच रही थी कि तुम्हें लिखूँ पर अच्छा हुआ कि तुम आप ही आ गए हो। इन दो चार क्षणों का हमें पूरा लाभ उठाना चाहिए। अब हमें अपना कर्त्तव्य पूरी तरह निभाना होगा। तुम्हें, फेदया, फिर से अपनी पत्नी के साथ प्रेम पूर्वक बना कर रहना होगा।"

"लिज़ा"

"मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। मेरा कहा मान जाओ······ ऐसे ही तो हम अपने किए के लिए पश्चाताप कर सकते हैं— मुझे निराश मत करो—ना मत कहो।"

"लिज़ा भगवान के लिए ऐसे मत कहो। जो तुम कहती हो वह हो ही नहीं सकता। मैं तुम्हारे कहने पर सब कुछ करने को तैयार हूँ पर उसके साथ रहना.........। मैं और सभी कुछ कर सकता हूँ। उसे मैंने क्षमा भी कर दिया है—पर यह तो निरी क्रूरता होगी।"

"मैं तुम्हें यह तो नहीं कह रही। यदि तुम उसके साथ नहीं रह सकते तो बेशक न रहो पर उसके साथ बना लो" लिज़ा ने अपना मुँह फिर हाथों से ढाँप लिया और कहने लगी "अपनी बेटी का ही विचार करो।"

"बहुत अच्छा" दाँत पीसते हुए लैवरिटस्की बोला "मैं अपना कर्तव्य तो निभाऊँगा। पर तुम—तुम्हारा क्या होगा?"

"मैं जानती हूँ, मुझे क्या करना चाहिए।"

लैवरिटस्की काँप उठा "तुम पाशिन से विवाह तो नहीं कर रहीं?"

लिज़ा केउदास मुख पर फीकी सी हँसी आ गई। "नहीं", वह बोली।

"ओह—लिज़ा! लिज़ा हम कितने सुखी हो सकते थे।"

लिज़ा ने फिर उसकी ओर देखा "तुम स्वयं ही देख लो, प्रसन्नता मनुष्य के बस में नहीं है। केवल भगवान ही सुख दे सकते हैं।"

"हाँ! क्योंकि तुम.........।

कमरे का दरवाजा खुला और मारफा हाथ में टोपी लिए आ गई।

"अब मिली है कहीं यह" वह लैवरिटस्की और लिजा के बीच में खड़ी हो कर बोली, "शायद मैंने आप ही कहीं इधर उधर रख दी होगी—बुढ़ापे में ऐसे ही होता है। पर सोचो ता युवावस्था भी कौन सी अच्छी होती है। तुम भी उसके साथ जा रहे हो लैवरिकी ?"

फेदया की ओर देख मारफा बोली।

"कुछ पता नहीं" थोड़ी देर बाद लैवरिटस्की ने उत्तर दिया। "क्या तुम फिर नीचे जा रही हो ?"

"नहीं, आज नहीं।"

"अच्छा, तुम्हारी इच्छा। पर मेरे विचार में तुम्हें आवश्य जाना चाहिए, लिजा। ओहो—मुझे भूल ही गया, चिड़िया को दाना डालना था। अच्छा ठहरो—मैं अभी आई" बिना टोपी पहिने मारफा चली गई।

लैवरिटस्की उठ कर लिजा के पास आ गया।

"लिजा", वह बड़े विनीत स्वर में बोला, "हम सदा, सदा के लिए बिछुड़ रहे हैं। मेरा हृदय टूट रहा है। मुझे अपना हाथ दो"

"नहीं, नहीं," वह बोली और उसने अपने आगे बढ़े हुए हाथ को भी पीछे खींच लिया। "नहीं लैवरिटस्की, (आज पहिली बार उसने उसका नाम लिया था) मैं अपना हाथ तुम्हें न दूँगी। क्या लाभ है अब इसका ? अब तुम जाओ—मैं प्रार्थना करती हूँ, तुम जाओ। यह तो तुम जानते ही हो कि मैं तुम्हें प्रेम करती

हूँ" बड़े यत्न से उसने यह कहा और फिर अपना रुमाल होठों में दबा लिया।

"वह रुमाल मुझे दे दो", लैवरिटस्की बोला।

दरवाजा हिला। रुमाल गिर कर लिज़ा की गोद में आने लगा पर गिरने से पहिले ही लैवरिटस्की ने उसे उठा लिया और मुड़ कर मारफ़ा की ओर देखने लगा।

"लिज़ा—प्रिय, तुम्हारी माँ तुम्हें बुला रही है" मारफ़ा बोली।

लिज़ा एकदम उठी और चली गई।

मारफा फिर कोने में एक कुर्सी पर बैठ गई।

लैवरिटस्की जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

"फेदया"

"हाँ बूआ"

"तुम भले आदमी हो न"

"क्या मतलब"

"मैं पूछ रही हूँ तुम भले आदमी हो।"

"हाँ—मेरा तो यही विचार है"

"अच्छा—प्रतिज्ञा करो कि तुम वास्तव में ही विश्वासनीय और भले पुरुष हो।"

"जो तुम कहो ठीक है बूआ। पर बात क्या है ?"

"बात मुझे तो पता ही है और तुम जरा सोचो तो तुम्हें भी पता लग जाएगा कि मेरा क्या मतलब है। तुम कोई मूर्ख तो हो ही नहीं। अच्छा—तो विदा—नमस्कार। आने के लिए बहुत बहुत धन्यवाद। हाँ अपनी प्रतिज्ञा को मत भूलना कि तुम भले पुरुष हो।" फिर वह थोड़ा ठहर कर बोली, "ओह मेरे प्यारे

बच्चे, तुम्हारे लिए यह सब कितना कठिन और क्रूर है। मैं सब समझती हूँ, पर संसार ऐसा ही होता है। कभी समय था कि मुझे मक्खियों से ईर्षा हुआ करती थी। मुझे यों प्रतीत होता था कि बस यह मजा ले रही हैं और तब मैंने एक दिन एक मक्खी को मकड़े के जाले में तड़पते हुए देखा। नहीं, मैंने सोचा, इन बिचारियों को भी कठिनाइयाँ होती हैं। अच्छा फेदया—अब तो कुछ नहीं हो सकता—नमस्कार—अपनी प्रतिज्ञा मत भूलना।"

लैवरिटस्की पिछली सीढ़ियों से उतर कर फाटक के पास ही पहुंचा था कि एक नौकर उसके पीछे आकर बोला, 'मारया मित्रविना आप से मिलना चाहती है।"

"जाओ, उन्हें कह दो कि इस समय......" लैवरिटस्की कहने ही लगा था कि नौकर बोला, "मालकिन कहती थी, बहुत जरूरी काम है और वह बिल्कुल अकेली हैं।"

"तो क्या अतिथि सब चले गए हैं?"

"हाँ" नौकर ने हँसी रोकते हुए कहा।

लैवरिटस्की कंधे सिकोड़ उसके पीछे चल पड़ा।

मारया मित्रविना अपने कमरे में अकेली बैठी एक इत्तर की बोतल सूँघ रही थी। पास ही एक गिलास संतरे के रस का पड़ा था। वह बड़ी हैरान सी लगती थी।

लैवरिटस्की आ गया। "तुम मुझे मिलना चाहती थीं" उसने कहा।

"हाँ" पानी का घूँट पीती हुई मारया बोली, "मैंने सुना था कि तुम सीधे ही बुआ के कमरे में चले गए हो। मैंने तुम्हें

बुलाया है कुछ खास बात करने के लिए। कृपया बैठ जाओ। फिर लंबी साँस लेकर वह बोली, तुम्हें पता ही है, तुम्हारी पत्नी आ गई है।"

"हाँ मैं जानता हूँ" लैवरिटस्की बोला।

"वह मुझे मिलने आई थी तो मैंने उसका अतिथियों सा आदर सत्कार भी किया था। यही तुम्हें बताना था। भगवान की कृपा से मेरा तो किसी से झगड़ा नहीं—मैं तो सदा उचित बात ही करती हूँ। मैं जानती थी कि मेरे ऐसा करने से तुम नाराज हो जाओगे पर फिर भी मैं उसे "न" कैसे करता। आखिर तो वह सम्बन्धी ही है। तुम आप ही सोचो यदि मेरी जगह होते तो क्या करते। भला मुझे क्या अधिकार था उसे ठुकराने का।"

"तुम इस बात का तनिक भी फिकर न करो मारया मित्र-त्रिना," लैवरिटस्की बोला, "तुमने बिल्कुल ठीक ही किया। मैं जरा भी नाराज नहीं हूँ। मेरी तो यह जरा भी इच्छा नहीं कि बारबरा को उसके जान पहिचान वालों से मिलने से रोकूँ। मैं आज यहाँ तुम्हारे पास केवल इस लिए नहीं आया कि मैं उसे नहीं मिलना चाहता।"

"भला हुआ, तुम तो गुस्से नहीं हुए।" मारया बोली, "मुझे तुम से यही आशा थी। पर फिर भी देखो मैं भी आखिर स्त्री हूँ और माँ हूँ—और तुम्हारी पत्नी बिचारी भी............... मैं कोई न्यायाधीश तो हूँ नहीं पर सच वह बिचारी तो इतनी सीधी और भोली है। मुझे तो बड़ी अच्छी लगती है।"

"हाँ, वह सभी को अच्छी लगा करती है" लैवरिटस्की ने हँस कर कहा और अपनी टोपी हिलाने लगा।

"मैं केवल यह कहती थी कि फेद्या यदि तुम देख पाते कि उसका उठना, बैठना कैसा विनम्र और भला है। सच—उसे देख कर तरस आता है। यदि तुम सुनते कि किस तरह वह तुम्हारी बातें करती है। वह तो कहती है कि सब उसी का दोष है, तुम तो देवता हो। बिचारी अपने किए पर इतना पछताती है, सच इतना पश्चाताप मैंने जीवन भर कोई नहीं देखा।"

"क्षमा करना, मारया मित्रविना," लैवरिटस्की बोला, "मैंने सुना है वह यहाँ खूब गाती बजाती रही है। क्या इसी को शोक कहते हैं?"

"तुम्हें शरम आनी चाहिए ऐसी बातें करते। वह तो बिचारी केवल मेरे कहने पर गा रही थी—मैंने उसे आज्ञा दी थी। वह इतनी उदास और शोकाकुल लगती थी कि मैंने सोचा इसका जी बहलाना चाहिए। तिस पर मैंने सुना था कि वह गाती भी बहुत अच्छा है। वैसे अब बिचारी दुःख से पिस गई है—उसका हृदय बिल्कुल टूट गया है।"

लैवरिटस्की ने केवल अपने कंधे सिकोड़ दिए।

"तुम्हारी बेटी ऐडा तो बहुत ही प्यारी है, बिल्कुल देवी सी लगती है। अभी इतनी छोटी है पर ऐसी बढ़िया फ्रैंच बोलती है। रूसी भी समझती है। अपनी आयु के बच्चों से वह बहुत होशियार है—ज़रा भी नहीं झिझकती और शक्ल तो उसकी बिल्कुल तुम्हारे जैसी है। उसकी आँखें, भौंहें, बस तुम्हारा ही रूप है। मुझे आम तौर पर बच्चे अच्छे नहीं लगते, पर ऐडा ने तो मेरा मन ही मोह लिया है"

"मारया मित्रविना", लैवरिटस्की आखिर बोला, "क्या मैं पूछ सकता हूँ कि यह सब तुम क्यों कह रही हो। तुम्हारा क्या अभिप्राय है?"

"मेरा अभिप्राय", मरया ने एक बार फिर इतर सूँघा और पानी का घूँट पिया, मैं यह सब इसलिए कह रही हूँ कि आखिर मैं तुम्हारी सम्बन्धी ही हूँ, मुझे तुम्हारी हर बात से वास्ता है। मैं जानती हूँ कि तुम को बहुत दुख हुआ। मैं भी दुनिया देखी है, अब मैं कहती हूँ कि तुम उसे क्षमा कर दो।" मारया की आँखों में आंसू आ गए, "ज़रा सोचो तो वह बिचारी बच्ची थी, भोली थी, नादना थी। उसे संसार का कुछ पता नहीं था। उसकी माँ ने भी उसे कुछ समझाया नहीं था। उसे क्षमा कर दो, फेदया। उसे बहुत दण्ड मिल चुका है" मारया के गालों पर आँसू गिरने लगी पर उसने उन्हें पोंछा नहीं। उसे कभी-कभी रोना अच्छा लगता था।

लैवरिटस्की को यों लगा मानों काँटों पर बैठा हो। वह सोच रहा था कि आज का दिन कैसा बुरा निकला है। क्या मुसीबत है।

"तुम कुछ उत्तर नहीं देते", मारया बोली, 'अब मैं इसका क्या मतलब समझूँ। तुम वास्तव में क्या इतने कठोर हो। मुझे तो विश्वास था कि मेरे कहने का तुम पर अवश्य कुछ प्रभाव पड़ा होगा। फेदया, इस उदारता के लिए भगवान तुम्हारा भला करेंगे। यह लो अपनी पत्नी, मेरे हाथों से........." लैवरिटस्की एकदम उठ खड़ा हुआ। मारया भी उठी और एक परदे के पीछे से बारबरा को हाथ पकड़ कर ले आई। वह बिल्कुल पीली सी, बेजा नसी यों लग रही थी मानो अपने में कुछ करने की शक्ति ही न हो।

लैवरिटस्की को उसका यह पाखण्ड देख कर बड़ी घृणा आई।

"तुम यहीं थीं सारा समय" वह बोला

"उसका कोई कसूर नहीं," मारया बोल उठी "वह तो मानती ही न थी। मैं ने उसे आज्ञा दी थी कि परदे के पीछे छिप जाओ

वह तो कहती थी कि ऐसे तुम्हें और भी क्रोध आएगा पर मैंने उसकी एक नहीं सुनी। मैं तुम्हें अधिक जानती हूँ। अब आ-ओ इधर—यह लो अपनी पत्नी। और बारबरा तुम भी झुको।" मारया ने उस की बाँह खींची और बोली, "भगवान तुम्हार भला करें।"

एक मिनट ठहरो, मारया मित्रविना," लैवरिटस्की ने बड़ी क्रोध भरी आवाज़ से कहा "तुम्हें बड़ा शौक है यह तमाशे करने का, तुम्हें यह सब बड़ा अच्छा लगता है पर जानती हो दूसरों के लिए यह कष्टदायक भी हो सकता है। खैर, मैं तुम्हारे साथ अधिक बात नहीं करना चाहता। इस नाटक की प्रधान नायक तुम नहीं हो।" अच्छा श्रीमती जी, आप क्या चाहती हैं?" अपनी पत्नी की ओर मुँह फेर वह बोला "क्या मैं ने जो भी हो सकता था कर नहीं दिया? मैं यह मानने को तैय्यार ही नहीं कि यह सब तुम्हारी शरारत नहीं। बताओ, तुम चाहती क्या हो? तुम बड़ी चतुर हो तुम्हारी हर बात के पीछे कोई मतलब होता है। मैं तुम्हे बता देना चाहता हूँ कि पहले की भाँति अब मैं तुम्हारे साथ नहीं रह सकता। इस लिए नहीं कि मैं तुमसे नाराज़ हूँ वरन इस लिए कि मैं वह अब आदमी ही नहीं रहा। मैं ने आते ही तुम्हें सब बता दिया था पर तुम दुनिया की नजरों में फिर अपनी वही पदवी रखना चाहती हो। तुम्हारे लिए केवल मेरे घर में ही रहना काफी नहीं, तुम मे साथ एक ही छत के नीचे रहना चाहती हो। क्यों यही बात है न?"

"मैं तो केवल अपने किए के लिए क्षमा चाहती हू" बारबरा ने बिना आंखें उठाये ही उत्तर दिया।

"यह चाहती है कि तुम उसे क्षमा कर दो" मारया ने दोहराया।

"मेरे लिए नहीं ऐडा के लिए" बारबरा बोली.

"उसके लिए नहीं ऐडा के लिए"

"बहुत अच्छा," लैवरिटस्की बोला, "यही होगा।"

बारबरा ने उसकी ओर देखा। मारया बोली "भला हो भगवान का और बारबरा को अपनी ओर खींच कर कहने लगी "तो अब मेरे हाथों से...

"एक मिनट ठहरो" लैवरिटस्की बोला, "मैं तुम्हारे साथ रहने को भी तैय्यार हूँ। मेरा मतलब है कि मैं तुम्हें लैवरिकी ले जाऊँगा और जब तक भी वहाँ रह सकूँगा, रहूँगा और फिर चला जाऊँगा। कभी-कभी मैं वहाँ आता रहूँगा। मैं तुम्हें धोखा नहीं देना चाहता पर इससे अधिक अब मुझ से न मांगो। यदि मैं मारया की बात मान तुम्हें हृदय से लगा लूँ तो तुम्हें स्वयं भी हँसी आएगी। यह मैं कैसे कह दूँ कि जो हो गया वह हो गया। भला कटा हुआ पेड़ कैसे फूल दे सकता है। पर किस्मत के सामने झुकना ही पड़ता है। तुम मेरी बात नहीं समझ सकतीं ......खैर मैं तुम्हारे साथ रहूँगा।

"अच्छा, अपना हाथ तो दो इधर" मारया बोली। उसके आँसू अब सूख गए थे।

"हाथ की बात रहने दो। मैंने कभी भी इसे धोखा नहीं दिया। मेरा वचन ही काफी है। मैं इसे स्वयं लैवरिकी पहुंचा दूँगा पर यह सारा फैसला तब तक ही है जब तक तुम लैवरिकी में ही रहो। तुमने वहाँ से पैर बाहिर किया तो सब खतम,,

समझीं। अच्छा—अब मैं जाता हूँ" उसने झुक कर दोनों स्त्रियों को प्रणाम किया और तेजी से बाहिर चला गया।

"इसे साथ नहीं ले जा रहे" पीछे से मारया चिल्लाई।

"जाने भी दो" बारबरा बोली और फिर उसके गले से लगा उसका धन्यवाद करने लगी। मारया ने उसका धन्यवाद तो सहर्ष स्वीकार कर लिया पर मन में वह सारी बातचीत से संतुष्ट नहीं थी। जैसा उसने सोचा था, वैसा नहीं हुआ था। बारबरा को पति के पाँव में गिरना चाहिए था।

"तुम्हें समझ नहीं आ रही थी, क्या", वह बोली, "मैं जो तुम्हें कह रही थी 'नीचे, नीचे'।"

"ठीक है मासी, सब कुछ ठीक हो गया" बारबरा उसे दिलासा देने लगी।

"कठोर है बहुत, लैवरिटस्की", मारया बोली, "पर तुमने भी एक आँसू नहीं गिराया। केवल मैं ही खामखाह रोती रही ......। अब वह तुम्हें लैवरिकी में बन्द कर देना चाहता है—इसका तो यह मतलब हुआ कि अब तुम हमें भी नहीं मिल सकोगी। सच...........पुरुष बड़े पाषाण हृदय होते हैं।

"पर स्त्रियाँ किसी का किया कभी नहीं भूलतीं" बारबरा बोली और घुटनों के बल बैठ, मारया से लिपट गई। मारया की आँखों में फिर आँसू आ गए।

लैवरिटस्की ने घर पहुंच अपने आप को नौकर के कमरे में बन्द कर लिया और वहीं एक सोफे पर सारी रात पड़ा रहा।

अगले दिन इतवार था। दूर गिरजे के घन्टे सुनाई दे रहे थे। लैवरिटस्की उठा—उठना भी क्या था, सारी रात तो वह सोया नहीं। इन घन्टों को सुन उसे पिछले इतवार की याद आ गई जब वह लिज़ा के कहने पर गिरजे गया था। वह जल्दी से उठा। उसे यों लगने लगा कि आज भी लिज़ा वहाँ मिलेगी। बारबरा अभी तक सो रही थी। वह लिख कर छोड़ गया कि खाने के समय तक लौट आएगा। चुपके से वह घर से निकला। दूर बजते हुए वह घन्टे मानों उसे अपनी ओर खींच रहे थे। वह पूजा के समय से कुछ पहिले ही पहुंच गया। अभी तक गिरजे में कोई भी नहीं आया था। एक ओर बैठा पुजारी कुछ पढ़ रहा था उसकी भारी गम्भीर आवाज़ सुनाई दे रही थी। कभी-कभी वह खाँसता। लैवरिटस्की चुपचाप एक ओर दरवाजे के पास खड़ा हो गया। उपासक एक-एक कर आने लगे। वह धीरे से जाकर झुकते, 'क्रास' का चिन्ह बनाते और खड़े हो जाते। उनके पैरों की आवाज़ से गिरजे का गुँबज गूँज उठता। एक छोटी सी, पतली सी, वृद्धा फटे पुराने कपड़े पहिने, लैवरिटस्की के पास ही आ कर बैठ गई। उसके मुँह में दाँत न थे। पर झुर्रियों से भरा उसका मुख श्रद्धा और प्रेम से मानों चमक रहा था। घड़ी घड़ी वह झुक कर प्रणाम करती और अपनी लाल आँखों से बड़ी श्रद्धा से मूर्तियों की ओर देखती। एक बड़ी घनी दाढ़ी वाला किसान, बड़ा विचलित सा गिरजे में आया। साष्टांग प्रणाम कर वह प्रार्थना करने लगा। उसके मुँह पर असीम वेदना और

दुःख की छाप थी। लैवरिटस्की से रहा न गया। उसने पूछ ही लिया कि क्या बात है। किसान एक क्षण भर गम्भीर सा उसकी ओर देखता रहा और बोला, "मेरा लड़का मर गया है।" फिर वह वैसे ही ध्यान लगा पूजा करने लगा। लैवरिटस्की ने सोचा कि इन लोगों में कितना भक्ति भाव और श्रद्धा है। भगवान के सिवा इनका कोई सहारा नहीं। वह भी अब सिर झुका प्रार्थना करने लगा। पर उसका मन विचलित था और उसका मस्तिष्क मानो घूम रहा था। वह अभी भी लिज़ा की प्रतीक्षा कर रहा था पर वह नहीं आई। गिरजा लोगों से भर गया, पर वह न आई। पूजा शुरू हो गई—पुजारी ने पाठ शुरू किया, घन्टे बजने लगे पर लिज़ा न आई। लैवरिटस्की निराश हो दूसरी ओर मुड़ा तो सहसा उसे लिज़ा दिखाई दी। वह वास्तव में उसके आने से भी पहिले आई हुई, लैवरिटस्की ने उसे देखा न था। दीवार के साथ लगी, वह निश्चल खड़ी थी। अब लैवरिटस्की एक टक उसी की ओर देखने लगा वह उससे विदा ले रहा था। पूजा समाप्त हो गई। उपासक धीरे-धीरे जाने लगे पर वह ज्यों की त्यों खड़ी रही मानो लैवरिटस्की के जाने की प्रतीक्षा कर रही हो। आखिर उसने झुक कर प्रणाम किया और दासी को साथ ले, बिना इधर-उधर देखे सीधी चल पड़ी। लैवरिटस्की उसके पीछे हो लिया और सड़क तक पहुंचते-पहुंचते उसके समीप आ गया। वह सिर झुकाए, परदा किए बड़ी तेज़-तेज़ जा रही थी।

"प्रणाम ऐलिज़बीटा" वह ऐसे बोला मानो कोई विशेष बात ही न हो। "मैं तुम्हें घर तक पहुंचा जाऊँ ?"

वह कुछ न बोली। लैवरिटस्की उसके साथ-साथ चल पड़ा।

"क्या तुम सन्तुष्ट हो अब" वह धीमी आवाज़ में बोला, "तुमने सुन ही लिया होगा सब"

"हाँ, हाँ" वह बोली "सब ठीक है।"

वह और तेज़-तेज़ चलने लगी।

"क्या तुम सन्तुष्ट हो ?" वह बोला

लिज़ा ने केवल सिर हिला दिया। "फेद्या" फिर वह धीमी आवाज़ में बोली, "तुम्हें एक बात कहनी थी। तुम अब हमारे यहाँ न आना। जितनी जल्दी हो सके, यहाँ से चले जाओ। फिर कभी मिलेंगे। फिर कभी..........शायद वर्ष भर के बाद। पर अब तुम चले जाओ। मेरा कहा मान लो।"

"मैं तो सदा तुम्हारी बात मानने को तैय्यार हूँ लिज़ा, पर क्या हम ऐसे ही बिछुड़ जायेंगे। क्या तुम मेरे साथ एक भी बात न करोगी ?"

"फेद्या, तुम अब मेरे साथ-साथ चल रहे हो पर अभी ही तुम मुझ से इतने, इतने दूर हो गए हो। केवल तुम ही नहीं वरन्..."

"बोलो—कहो लिज़ा", लैवरिटस्की घबरा कर बोला, "कहो, क्या कहना चाहती हो ?"

"तुम्हें सब पता लग जाएगा—तुम सब सुन लोगे पर...... ......फेद्या जो भी हो तुम—मुझे भूल जाना।..........., नहीं—नहीं, फेद्या मुझे न भुलाना।"

"मैं तुम्हें भुला सकता हूँ, क्या ?"

"अच्छा—प्रणाम, विदा"

"लिज़ा"

"जाओ, विदा" लिज़ा ने दुपट्टा और नीचा कर लिया और तेज़-तेज़ चली गई।

जब तक वह दिखाई देती रही, लैवरिटस्की मूर्तिवत खड़ा-खड़ा देखता रहा। फिर सिर झुका दूसरी ओर चल पड़ा। आगे से लैम्म भी सिर झुकाए, आँखें नीची किए आ रहा था। दोनों की टक्कर सी हो गई। चुपचाप वह एक दूसरे को देखने लगे।

"क्यों क्या बात है ?" आखिर लैवरिटस्की बोला।

"कुछ नहीं" लैम्म बड़ा उदास सा था "क्या हो सकता है ? सभी कुछ मृत है—हम सब मरे हुए हैं। तुम उधर जा रहे थे ?

"हाँ"

"मैं इधर जा रहा हूँ। प्रणाम"

अगले दिन सवेरे ही लैवरिटस्की अपनी पत्नी सहित लैवरिकी चल दिया। वह आगे बड़ी गाड़ी में, ऐडा और जस्टीन के संग जा रही थी और लैवरिटस्की पीछे छोड़ी गाड़ी में। नन्हीं ऐडा नई नई चीजें देख बड़ी प्रसन्न और हैरान हो रही थी। किसान, किसानों की झोंपड़ियाँ, भार से लदी खच्चरें देख वह बड़ी आश्चर्य चकित हो रही थी। जस्टीन की भी यही दशा थी। बारबरा उन की बातें सुन-सुन कर हँस रही थी। वह बड़ी प्रसन्न थी। जाने से पहिले उसने पति से फैसला कर लिया था।

"मैं तुम्हारी बात खूब समझती हूँ" उसने कहा था। और उसकी बात सुन, उसे देख लैवरिटस्की ने भी जान लिया था कि यह वास्तव में ही उसकी बात समझती है। फिर वह कहने लगी "तुम्हें यह मानना होगा कि मैं फिजूल तुम्हारे राह में नहीं आती। न ही मैं तुम्हें कभी किसी बात से रोकूँगी। मैं तो केवल ऐडा के भविष्य का विचार कर यह सब कर रही थी।"

"खैर जो भी तुम चाहती थीं तुमने पूरा कर लिया है" लैवरिटस्की ने उत्तर दिया।

"अब तो मुझे बस यही अभिलाषा है कि मैं सदा के लिए अपने को एकान्त में खो दूँ। और तुम्हारा किया तो मैं कभी न भूलूँगी।

"बस करो" लैवरिटस्की बीच में ही बोल पड़ा।

"मैं तुम्हारी स्वतंत्रता और शान्ति का सदा ध्यान रखूँगी।"

लैवरिटस्की ने सिर झुका लिया। बारबरा पहचान गई कि मन में यह मेरा आभारी है।

अगले दिन शाम को वह लैवरिकी पहुंच गए। एक सप्ताह बाद लैवरिटस्की पत्नी के लिए ५,००० रूबल जेब खर्च छोड़ स्वयं मास्को चला गया। उसके जाने के एक ही दिन बाद, पाशिन वहां आ गया। बारबरा ने आते समय उसे कहा था कि मुझे भूलना मत। बारबरा ने उसका खूब सत्कार किया बहुत रात गई तक उस विशाल भवन के कमरे और बाग उनके गीतों और हंसी से गूंजते। रहे तीन दिन पाशिन बारबरा का अतिथि रहा और जाते समय बारबरा के सुन्दर हाथ अपने हाथों में ले जल्दी ही लौटने की प्रतिज्ञा कर गया। वह अपने वचन का पूरा रहा।

अपनी मां के घर की दूसरी छत पर लिजा का एक छोटा सा कमरा था। उस छोटे से, हवादार कमरे में, एक श्वेत पलंग

फूलों के दो चार गमले, खिड़की के सामने एक लिखने की मेज कुछ किताबें और एक मूर्ति थी। लिज़ा का जन्म भी इसी कमरे में हुआ था। लैवरिटस्की को गिरजे में मिल के आने के पश्चात लिज़ा ने कमरे की सफाई शुरू की। आज वह एक एक चीज को बड़ी अच्छी तरह झाड़ पोंछ रही थी। अपनी पुरानी स्कूल की कापियां और सखियों के पत्र उसने अच्छी तरह फीतों में बांध दिए। दराजों को ताले लगा दिए फिर उसने गमलों में खिले फूलों को पानी दिया। यह सब उसने बहुत धीरे धीरे किया। उसके मुख का भाव बड़ा कोमल और उदास सा था। कमरे के बीच में खड़ी हो बड़े प्रेम से उसने सब चीजों को देखा और अन्त में मेज पर पड़ी प्रतिमा के सन्मुख, घुटने टेक, मुँह हाथों में छिपाये बैठ गई।

मारफा दबे पांव कमरे में आई तो लिज़ा को ऐसे बैठे देखा। लिज़ा को उसके आने का तनिक भी ज्ञान न हुआ। वृद्धा धीरे से बाहिर चली गई और बाहर जा दो तीन बार खांसी। लिज़ा ने जल्दी से उठ अपनी आंखें पोंछीं। आसुओं से वह चमक रही थी।

"कमरा ठीक कर रही हो" मारफा एक गुलाब की कली को सूँघती हुई बोली। "कैसी सुन्दर है इस की सुगन्ध।"

लिज़ा उदास सी बूआ की ओर देखती रही।

"क्या कहा था तुमने" वह बोली

"क्या...कब..."वृद्धा जल्दी से बोली" क्या मतलब है तुम्हारा? ओह...यह बहुत बुरी बात है।" अपनी टोपी फेंक वह लिज़ा के पलंग पर बैठ गई "अब नहीं रहा जाता। चार दिनों से मैं भी तड़प रही हूँ। कब तक पाखण्ड करती रहूँ कि

मुझे कुछ पता ही नहीं। मुझ से तुम्हारा यह रोना नहीं देखा जाता।"

"पर बात क्या है बूआ, मैं तो ठीक हूं" लिज़ा बोली।

"ठीक हो तुम, यह किसी और को बताना। अच्छा, अभी घुटनों के बल बैठ कर क्या कर रही थी तुम अभी तक तुम्हारी पलकें भीगी क्यों हैं? जाओ ज़रा अपनी शक्ल तो देखो। क्या दशा बना ली है तुमने? ज़रा अपनी आंखें देखो। मैं भला जानती नहीं कि यह सब क्यों है।"

"समय सब भुला देगा, बूआ।"

"भुला तो देगा, पर कब तक। हे भगवान, क्या तुम उससे इतना प्रेम करती थी। लिज़ा, मेरी प्यारी, वह तो बूढ़ा है मैं मानती हूं कि वह बहुत अच्छा है। किसी को दुःख नहीं देता। पर यह कोनसी बड़ी बात है। हम सब अच्छे हैं। सारा संसार ऐसे भले लोगों से भरा पड़ा है।"

"बूआ, सब भूल जायगा। अभी ही भूल गया है।"

"मेरी बात सुनो, मेरी प्यारी बच्ची," मारफा उसके पास बैठ उसके बालों को सहलाती हुई बोली "अभी तो तुम्हें लगता होगा कि तुम्हारे दुःख का कोई इलाज नहीं पर केवल मृत्यु ही एक ऐसी चीज़ है जिसका कोई इलाज नहीं। दुख के समय मनुष्य को जी कड़ा कर के सोचना चाहिए कि कुछ बात नहीं मैं हृदय नहीं हारूँगा। फिर देखो, सब दुख कितनी जल्दी समाप्त होते हैं।

"बूआ," लिज़ा बोली "अब सब भूल गया है। सब समाप्त हो गया है।"

"अच्छा समाप्त हुआ है। जरा अपने नाक की दशा तो देखो"

"हां बूआ सब समाप्त है। केवल तुम मेरा साथ देना"

लिज़ा ने बूआ के गले में हाथ डाल दिए "बूआ, तुम तो मेरी सहायक हो। गुस्से मत होओ, मुझे समझने का यत्न करो। मेरी सहायता करो।"

"क्यों—क्या बात है? ऐसे मुझे मत डराओ। मेरी ओर इस तरह मत देखो। कहो कहा बात है?"

"मैं—मैं "लिज़ा ने अपना मुँह बूआ के कंधे में छिपा लिया, " मैं किसी आश्रम में जाना चाहती हूं।" वृद्धा पलंग से कूद पड़ी मानों किसी ने काट लिया हो।

"भगवान का नाम लो यह क्या बातें कर रही हो" वह बोली। उसकी जबान कांप रही थी "चुप रह कर आराम से थोड़ा सो जाओ। यह न सोने का ही फल है, मेरी प्यारी।"

लिज़ा ने सिर उठाया उसका मुँह लाल हो गया था। "नहीं ऐसे मत कहो। मैंने पक्का सोच लिया है। मैंने प्रार्थना कर भगवान का भी परामर्श ले लिया है। अब सब समाप्त है। अब तुम्हारे साथ मेरा जीवन समाप्त है। यह जो सब कुछ हुआ है उसका कुछ मतलब तो होगा ही। और फिर मैंने यह पहली बार तो सोचा नहीं। मेरे भाग्य में वास्तव में प्रसन्नता है ही नहीं। जब सुख मेरे हाथ की पकड़ में ही था, तब भी मेरा मन किसी अज्ञात भय से कांपता था। मुझे सब पता है किस तरह पापा ने यह सब धन एकत्रित किया था। अब मेरी प्रार्थना यह सब पाप धोयेगी। मुझे खेद है, तुम्हारे लिए, मां के लिए लिनोचका के लिए, पर अब कुछ नहीं हो सकता। ऐसा जीवन

मेरे लिए नहीं हैं। मैं घर में सब से, सब चीजों से मन ही मन विदा ले चुकी हूं। मुझे कोई बुला रहा है। मुझ में वेदन भरी है। अब मैं सदा के लिए जाना चाहती हूं। मुझे रोको मत। मेरी सहायता करो, नहीं तो मैं बिल्कुल ही अकेली चली जाऊँगी।"

मारफा मूर्तिवत लिजा की बातें सुनती रही। उसने सोचा यह बीमार है। इसके होश ठिकाने नहीं। किसी डाक्टर को बुलाना चाहिए...पर किस को बुलाऊँ। कल ही गोडोन्सकी एक डाक्टर की प्रशंसा कर रहा था पर उसका भी विश्वास नहीं। वह इतना झूठा है। फिर उसे विचार आया कि लिजा बीमार नहीं...होश में है। सब बातों का ठीक तरह उत्तर दे रही है। इस विचार से मारफा बिल्कुल ही घबरा गई और कहने लगी।

"तुम कुछ समझती नहीं, मेरी बच्ची। तुम क्या कर रही हो? तुक जानती हो वहां आश्रमों में क्या होता है। वहां तुम्हें रूखा सूखा तेल में पका भोजन मिलेगा। मोटे कपड़े पहनने होंगे। बाहर सरदी में वे तुम्हें भेजेंगे। तुम भला यह सब कैसे सह सकोगी, मेरी प्यारी। ओह—यह सब उस अगाफया की ही करतूत है। वही तुम्हें इस उल्टे रास्ते लगा गई है। पर उसने तो पहले जीवन का पूरा आनंद लिया था। तुम भी तो कुछ देख लो, मेरी बच्ची। मुझे तो चैन से मर जाने दो, फिर जो तुम्हारा जी चाहे करती रहना।" मारफा बड़ी दुखी हो बोलती गई। "पर तुमने कभी किसी को एक आदमी के लिए ऐसे करते सुना है। यदि तुम्हारा मन बहुत ही विचलित हो गया है तो कहीं तीर्थ यात्रा करने चली जाओ। कोई पूजा पाठ करवा लो, पर यह वैरागिनियों का काला कपड़ा तो सिर पर मत डालो मारफा रोने लगी।

लिजा ने उसे धीरज बंधाना चाहा। उसके आँसू पोंछे। आप भी रोई पर अपनी बात से टस से मस न हुई। मारफा ने देखा कि उसकी बातों का कोई असर नहीं हो रहा तो धमकियों पर आ गई। उसने कहा मैं तुम्हारी माँ को सब बता दूँगी पर इसका भी कुछ लाभ न हुआ। आखिर वृद्धा के बहुत कहने पर लिजा ने बात छः महीनों तक स्थगित कर दी। उसने मारफा से यह वचन ले लिया कि यदि छः महीने के बाद भी उसका विचार न बदला तो मारफा उसकी सहायता करेगी और उसे मारया से आज्ञा ले देगी।

सर्दियाँ आते ही बारबरा अपनी सब प्रतिज्ञायें भूल, पीटर्स-बर्ग चली गई। वहाँ पाशिन ने उसे छोटा सा घर ढूँढ दिया। वह भी ओ—नगर से चला गया था। पिछले दिनों में वह मारया की नजरों से भी गिर गया। उसने कालीटीनों के यहाँ जाना बिल्कुल ही बन्द कर दिया था। वह अधिकतर लैवरिकी ही रहता था। बारबरा ने उस पर जादू सा कर लिया था। उसका पाशिन पर इतना अधिक प्रभाव था कि जादू के सिवा और कोई शब्द उसके प्रभाव का ठीक पता ही नहीं दे सकता।

लैवरिटस्की ने वह सर्दियाँ मास्को में ही काटी। बसंत आने पर उसने सुना कि लिजा दूर किसी वैरागिनियों के मठ में चली गई है।

उपसंहार

आठ वर्ष बीत गए। फिर से बसंत आई।

पहले हम मिखालोविच, पाशिन और बारबरा के सम्बन्ध में कुछ कह लें।

मिखालोविच बहुत समय इधर उधर भटकने के बाद, उचित स्थान पर पहुंच गया। उसे किसी सरकारी स्कूल में काम मिल गया। वह अब वहाँ बहुत प्रसन्न है। वहाँ के छात्र उसे हृदय से प्रेम करते हैं चाहे पीठ पीछे कभी-कभी वे उसकी हँसी भी उड़ाया करते हैं। पाशिन अब बहुत उच्च पदाधिकारी है। अब वह थोड़ा झुक कर चलता है—शायद गले में पड़ी उपाधियों के भार से। अब उसके अन्तर का कलाकार मर चुका है। अब वह पूरा अफसर है। उसका मुँह अभी भी सुन्दर है, पर कुछ पीला पड़ गया है। बाल भी गिर गए हैं। अब वह न कभी गाता है, न तसवीरें बनाता है। हाँ पढ़ने का शौक अभी भी है। उसने एक नाटक सा लिखा है। जिसमें एक रंगीली स्त्री की कहानी है। अपने प्रिय मित्रजनों को वह कभी-कभी यह पढ़ कर सुनाता है। अभी तक उसने विवाह नहीं किया। कई बार उसने बहुत अच्छे-अच्छे अवसर खोये हैं। यह सब बारबरा का ही कसूर है। वह अब पेरिस में ही रहती है। फेदया ने उसे प्रतिज्ञा-पत्र दे दिया है कि जितना चाहे धन ले ले। आयु से वह अब मोटी हो गई है पर अभी भी काफी सुन्दर और आकर्षक

है। सब को किसी न किसी चीज़ का शौक होता है, बारबरा को नाटक देखने का बहुत शौक है। वह प्रायः रोज़ ही थिएटर जाती है। उसकी दृष्टि में, एक प्रसिद्ध नायिका होना संसार में सबसे बड़ी बात है। एक बार बातों-बातों में उसने कहा था कि वह चाहती है ऐडा एक बड़ी अभिनेत्री बने। भगवान बिचारी ऐडा को बचाए। अब उसका बचपन का सा स्वास्थ्य नहीं रहा। कहाँ वह चंचल, गुलाबी, हृष्ट पुष्ट बालिका और कहाँ आज की पीली, पतली दुबली ऐडा। बारबरा के चाहने वालों की संख्या अब कम हो गई है पर अभी भी कई आते हैं। कई उसके अन्तिम दिनों तक आते रहेंगे। उसके सब प्रेमियों में से अधिक नियमित रूप से आने वाला एक मोटा ताजा, मूँछों वाला कोई जुकुरगलो है। फ्रैंच लोग उसे "यूकराईन का गँवार" कहते हैं। बारबरा अपनी फैशनेबल पार्टियों पर उसे कभी नहीं बुलाती पर है वह उसका बड़ा चहेता।

हाँ—तो ऐसे ही आठ वर्ष बीत गए हैं। बसंत ऋतु फिर से आई है। वैसे ही आकाश, पृथ्वी सब पर मस्ती सी छाई है। बसंत के स्पर्श से पृथ्वी हँस रही है। चारों ओर फूल खिल रहे हैं। सारा वायुमण्डल मानो संगीत से भरा है। प्रेमी, प्रेम मग्न हैं। इन आठ वर्षों में ओ—नगर बहुत कम बदला है। मारया मित्रविना का घर आगे से भी नया और आकर्षक लग रहा है। दीवारों पर नए चमकीले रंगों की पेंट है। खुली खिड़कियों के शीशे चमक रहे हैं और उनमें से हँसने की व गाने की आवाज़ बाहिर सड़क तक आ रही है। सारा घर मानों आनन्द में डूबा है। घर की मालकिन कब की मर चुकी है। लिज़ा के जाने के दो वर्ष बाद ही मारया का देहान्त हो गया। मारफा भी भतीजी

के बाद शीघ्र ही चल बसी। शहर के बाहर मरघट पर दोनों की समाधियाँ पास-पास हैं। नसटास्या भी अब नहीं है। कई वर्षों तक वह निरन्तर मारफा की समाधि पर फूल चढ़ाने जाती रही—फिर उसका भी समय आ गया और वह भी चल बसी। पर मारया का घर अनजानों के हाथों न पड़ा। घोंसला न उजड़ा।—

आज घर में लिनोचका, जो अब बड़ी सुन्दरी युवती हो गई है, उसका मंगेतर, जो कि फौज का अफ़सर है, मारया का पुत्र जो अभी-अभी पीटर्सबर्ग विवाह करवा के अपनी युवा पत्नी और छोटी साली सहित आया है और शरुचका है। शरुचका भी अब बड़ी हो गई है। अब वह एक बड़ी आकर्षक युवती है। इन सब की हँसी से आज घर गूँज रहा है। घर की तो शकल ही बदल गई है। पुराने, ढीले नौकरों के स्थान पर अब वर्दियाँ पहने नए और फुर्तीले नौकर आ गए हैं। जहाँ मोटा रोस्का आगे इधर-उधर ढीला पड़ा रहता था, वहाँ अब छोटे छोटे बड़े फुर्तीले से दो कुत्ते हैं। घुड़साल में भी नए घोड़े आ गए हैं। खाने पीने का कोई विशेष समय नहीं। नए रिवाजों के अनुसार सब मिला जुला ही काम है।

जिस साँझ की हम बात कर रहे हैं, उस दिन कालीटीन घर के निवासी कोई बड़ा हास्यप्रद खेल खेल रहे थे। बाहिर सड़क पर आते हुए उनकी आवाज से यह स्पष्ट था। वे कमरों में इधर-उधर भागते हुए एक दूसरे को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। कुत्ते भी उनके पीछे भाग-भाग कर भौंक रहे थे। और तो और, पिंजरों में बन्द चिड़ियाँ भी उनका यह खेल देख, चीं-चीं कर रही थीं। जब खेल खूब गरम था तो एक कीचड़ से लथपथ गाड़ी आ कर घर के सामने खड़ी हुई। एक पैंतालीस वर्ष

का अधेड़ व्यक्ति, यात्रियों से वस्त्र पहिने उसमें से निकला। वह हैरान सा हो कुछ देर तक चुपचाप इधर-उधर देखता रहा। फिर धीरे से उसने फाटक खोला और ड्योढ़ी की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। सामने के बड़े कमरे में कोई न था। फिर एकदम एक दरवाजा खुला और हाँफती हुई शुरुचका वहाँ से निकली। उसके पीछे बाकी सारी टोली आ गई। अनजान को देख वे सब एकदम खड़े हो गए। पर उनकी कोमल युवा आँखों में कोई कठोरता नहीं आई—उनके प्रसन्न मुख वैसे ही मुस्कराते रहे। मारया के पुत्र ने बड़ी नम्रता से आगे बढ़ कर अगान्तुक से पूछा कि वह कौन है और क्या चाहता है ?

"मैं लैवरिटस्की हूँ" अगान्तुक ने कहा।

उसके कहने की देर थी कि सब फिर वैसे ही हंसने लगे और शोर मचाने लगे। वह उस भूले बिसरे संबंधी को देख कर प्रसन्न नहीं हो रहे थे—उन्हें तो केवल हंसने का बहाना चाहिए था। सब ने लैवरिटस्की को घेर लिया। लिनोचका, पुरानी परिचिता होने के नाते आगे बढ़ी और कहने लगी कि मैंने तो तुम्हें अवश्य ही पहचान लेना था। फिर वह लैवरिटस्की का सब से परिचय करवाने लगी। खाने वाले कमरे से होकर वे सब बैठक में चले गये। दोनों कमरों की दीवारों का कागज बदला हुआ था पर बाकी सामान सब वही पुराना था।

लैवरिटस्की ने पियानो को भी पहचान लिया। आठ वर्ष पहले की कढ़ाई के फ्रेम अभी भी ज्यों के त्यों पड़े थे। उसे यूं प्रतीत हुआ मानों अभी भी उन में वही कढ़ाई लगी है। एक आराम कुर्सी पर उन्होंने उसे बैठा दिया आस पास सब बैठ गए। बातें शुरू हो गईं।

"बहुत समय से तुम्हें देखा नहीं और न ही बारबरा को देखा है," भोली लिनोचका बोली।

"वह तो स्वभाविक ही है" उसका भाई बात टालने का यत्न कर बोला, "मैं तुम्हें पीर्सबर्ग ले गया था और फेदया अधिकतर गाँव में ही रहा है"

"हाँ और फिर माँ भी चल बसी"

"और मारफा टिमोफीना भी," शुरुचका बोली।

"नसटास्या भी और लैम्म भी"

"क्या लैम्म का देहान्त हो गया है ?" लैवरिटस्की ने पूछा।

"हाँ," कालीटीनों ने उत्तर दिया, "वह ओडेसा चला गया था—कोई उसे बहका के ले गया था, वहीं बिचारा मर गया।"

"क्या वह कुछ संगीत इत्यादि भी छोड़ गया है।"

"मुझे तो पता नहीं"

सब चुप हो अब एक दूसरे की ओर देखने लगे। सभी के मुँह उदास थे।

"मैटरोस अभी जिन्दा है" लिनोचका बोली

"और गोडोन्सकी भी" उसके भाई ने कहा

गोडोन्सकी के नाम पर सब हंस पड़े।

"वह जीता है और अभी भी उतना ही झूठा है," मारया का का पुत्र बोला।

"अभी उस दिन इस मूर्ख ने (अपनी साली की ओर इशारा कर) उसकी नसवार में मिरचें डाल दी थीं"

"ओहो—उसकी छींकें सुननी थीं," वह हंसी में लोट पोट हो गई।

"कुछ ही दिन हुए हमें लिज़ा का भी समाचार मिला था," कालीटीनों ने कहा "वह अच्छी है। उसका स्वास्थ्य आगे से कुछ ठीक है"

"क्या वह अभी...वहीं है उसी मठ में" बड़े यत्न से लैवरिट-स्की बोला

"हां"

"कभी लिखती है।

"नहीं, कभी नहीं। हां इधर-उधर से कभी-कभी कोई समाचार मिल जाता है।" सब चुप हो गए। यों लगा मानो कोई पवित्र परछांई सी वहां हो कर चली गई हो।

"बाहर, बाग में चलोगे" कालिटीन ने पूछा "अब हमारा बाग बहुत अच्छा हो गया है। हम ने उसे यों ही छोड़ दिया है।"

लैवरिटस्की बाहर गया तो पहली चीज़ उसे वही सीट दिखाई दी वही बाग में पड़ा बैंच जहां उसने लिज़ा के साथ प्रेम के सुख के दो क्षण काटे थे, बैंच अब टूट रहा था। वह कुछ काला भी पड़ गया था पर उसने उसे देखते ही पहिचान लिया। उसे देख आज फिर उसके हृदय में टीस सी उठी। बीते दिनों के उन सुहावने पलों ने उस के मन को उदास कर दिया। वह बाग में टहलने लगा। वहां के पेड़ अभी भी वैसे ही थे न वह आगे से बढ़े थे, न लंबे हुए थे। हां, कुछ घने अवश्य हो गए थे। फूलों की झाड़ियां अब बहुत बढ़ गईं थीं। सारा बाग फूलों की सुगन्धि से महक रहा था।

ज्यों ही वह पेड़ों के एक झुंड में पहुंचे तो लिनोचका बोली,

"खेलने के लिए यह बहुत अच्छी जगह है । आओ खेलें। हैं भी हम पूरे पाँच ही।"

"तो फेद्या कहां गया ? या तुम अपने को नहीं गिन रहीं ?" उसका भाई बोला ।

लिनोचका शरमा गई ।

"पर फेद्या—इस आयु में..."वह कहने लगी।

"कृपया तुम सब खेलो," फेद्या बीच में ही बोल पड़ा "मेरी ओर अधिक ध्यान न दो। मुझे यही जान कर खुशी होगी कि मैं तुम्हारे रास्ते में नहीं आ रहा। मेरा जी बहलाने की भी कोशिश न करो हम वृद्ध एक ऐसी बात में प्रसन्न रहते हैं जिस का तुम्हें कुछ पता ही नहीं...वे हैं पुरानी स्मृतियां।

सब ने उसकी बातें ध्यान से सुनीं मानो कोई अध्यापक पाठ पढ़ा रहा हो और फिर पेड़ों के नीचे खेल कूद में लग गए। उन में से चार व्यक्ति, चारों कोनों में खड़े हो गये और एक मध्य में। खेल तमाशा फिर से शुरू हो गया।

लैवरिटस्की फिर घर की ओर चल पड़ा। खाने वाले कमरे में से होता हुआ, वह पियानो के पास पहुंच गया। एक सुर को उसने छेड़ा। एक धीमा सा, पर शुद्ध स्वर हवा में गूँज उठा। इस स्वर ने मानों उसके हृदय के तार भी छुए। बहुत समय पहले लैम्म ने जो गीत गाया था, वह उसी का पहला स्वर था उस रात को जब वह इतना प्रसन्न था। फिर लैवरिटस्की बैठक में गया और बड़ी देर वहां खड़ा रहा। यहां वह लिज़ा को देखा करता था। आज भी उसकी प्रिय मूर्ति वैसे ही उसकी आंखों के

सामने आ रही थी। उसे लगा मानों वह पास ही है पर लिज़ा की याद ने उसे बहुत तड़पाया था। अभी भी उसका घाव वैसे ही हरा था। मृत्यु का दुख कुछ समय बाद समाप्त हो जाता है पर लिज़ा तो जीती थी दूर कहीं...उसकी पहुंच से परे। उसे सदा विचार आते कि वह कहीं होगी किसी मठ में, आश्रम में, वैरागिनियों के रूप में कल्पना भी न कर पाता।

लिज़ा की आंखों से शायद वह अपने को देखता तो अपने आप को ही पहचान न पाता। इन आठ वर्षों में वह बहुत बदल गया था। कई लोग तो कभी बदलते ही नहीं...वैसे ही चलते हैं जीवन पथ पर...लैवरिटस्की अब वह पुराना लैवरिटस्की न था। अपने स्वार्थ का और सुख का उसे अब तनिक भी विचार न था। उसका मन बुझ गया था। वह अब केवल देखने में ही वृद्ध नहीं लगता था वरन् उसका हृदय भी बूढ़ा हो गया था। मन को जवान रखना भी तो कठिन ही होता है। केवल कठिन ही नहीं, शायद गलत भी होता है।

लैवरिटस्की सन्तुष्ट था। अब वह अच्छा जिमींदार था। अपने काम का उसे पूरा ज्ञान था। भूमि पर काम करने वाले मज़दूरों और किसानों का वह पूरी तरह ध्यान रखता। उनके सख दुख के समय उनकी सहायता करता।

लैवरिटस्की फिर बाग में आ उसी पुरानी सीट पर बैठ गया। यह स्थान उसे बड़ा प्रिय था। यहाँ इस घर के सामने बैठ उसने जीवन से सुख का प्याला लेने को अन्तिम बार हाथ फैलाए थे। अब वह अकेला, डांवांडोल, अतीत की ओर झाँक रहा था और पास ही नई पीढ़ी की हँसी खुशी की आवाज़ आ रही थी। उसका

मन उदास था पर इस उदासी में कोई कटुता नहीं थी। उसे बातों का खेद था, दुख था पर किसी भी बात की लज्जा न। "खेलो, कूदो, बढ़ो युवको", वह बिना कटुता के सोचता "जीवन तुम्हारे सामने है। तुम्हारा पथ सुगम होगा। हमारी तरह तुम्हें गिरना, भटकना नहीं होगा, अब राह सीधी है। हम तो जीने का यत्न करते करते ही मर गए। पर तुम्हें बहुत कुछ करना होगा। हमारे अशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ रहेंगे। फिर वह सोचने लगा कि मैं तो सबसे विदा लेने आया हूँ। अब मेरा अन्त निकट आ रहा है। अब तो मैं यही कहता हूँ कि ऐ मेरे जीवन के दीपक, तू बुझ जा।

लैवरिटस्की धीरे से उठा और चला गया। किसी ने उसे जाते देखा नहीं। किसी ने उसे रोका नहीं। हँसने कूदने की आवाज अभी भी वैसे ही आ रही थी। वह गाड़ी में बैठ गया और कोचवान को चलने को कहा। "धीरे-धीरे चलो, वह बोला, घोड़ों को तेज करने की आवश्यकता नहीं"

पर अन्त क्या हुआ? पाठक पूछेंगे। लैवरिटस्की और लिज़ा का क्या हुआ? उनका भला क्या होना था। जो जीते जी ही जीवन के संघर्ष से परे भाग जायँ, उनका क्या होना।

कहते हैं, दूर उस मठ में जहाँ लिज़ा रहती है—लैवरिटस्की गया था। सीढ़ियों से उतरती हुई, वह उसके पास से होकर चली गई थी। वैरागिनियों सी वह जल्दी-जल्दी बिना उसकी

.र देखे निकल गई थी। हाँ उसकी पलकें कांप उठी थीं, मुर-
झाया हुआ सा सुन्दर मुख और भी नीचे झुक गया था। हाथों
की उँगलियों ने माला के मनकों को और भी जोर से पकड़
लिया था। न जाने उस समय उनके हृदय में क्या विचार थे।
कौन जानता है—कौन कह सकता है—जीवन में ऐसे क्षण आया
ही करते हैं, उनकी ओर मनुष्य बस केवल देख ही सकता है।